Follow us on: @TheDailyPioneer facebook.com/dailypioneer instagram.com/dailypioneer/

RNI No. DLHIN/2012/48369
वर्ष 13 । अंक 86
नई दिल्ली, शुक्रवार, 31 जनवरी 2025
पृष्ठ 12 ₹ मूल्य 3
नगर संस्करण

Established 1865

पायनियर

नई दिल्ली, लखनऊ और रायपुर से प्रकाशित

www.dailypioneer.com

आभ्यन्तर

राष्ट्रीय-10

दक्षिणी राज्यों का जनसंख्या वृद्धि पर जोर देना अच्छा विचार नहीं: सुब्बाराव

महाकुंभ वाहन निषिद्ध क्षेत्र घोषित

उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में चल रहे 'महाकुंभ मेला' दौरान झूंसी रोड पर ट्रैफिक जाम में फंसे वाहनों का विहंगम दृश्य। पीटीआई

बिस्वजीत बनजी। महाकुंभ नगर

प्रयागराज महाकुंभ के दौरान संगम पर हुई दुखद भगदड़ के बाद, जिसमें कई लोग हताहत हुए थे, प्रशासन ने भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए कड़े कदम उठाए हैं। इन प्रयासों के तहत, सम्पूर्ण कुंभ मेला क्षेत्र को नो-व्हीकल जोन घोषित कर दिया गया है, जिससे सभी प्रकार के वाहनों का परिसर में प्रवेश वर्जित हो गया है तथा 4 फरवरी तक सभी वीआईपी पास रद्द कर दिए गए हैं। सबसे महत्वपूर्ण निर्णयों में से एक मेला परिसर के भीतर वाहनों की आवाजाही पर पूर्ण प्रतिबंध लगाना है। किसी भी निजी या सार्वजनिक परिवहन को अंदर जाने की अनुमति नहीं दी जाएगी, जिससे तीर्थयात्रियों की सुरक्षित और अधिक व्यवस्थित आवाजाही सुनिश्चित हो सके। इसके अतिरिक्त, वीवीआईपी पास, जो पहले कुछ वाहनों को प्रवेश की अनुमति देते थे, रद्द कर दिए गए हैं। किसी भी विशेष पास से छूट नहीं मिलेगी, जिससे नियम सभी के लिए एक समान हो जाएंगे।

सुचारू आवागमन को सुगम बनाने तथा भीड़भाड़ को रोकने के लिए कुंभ क्षेत्र के सभी प्रमुख मार्गों को एकतरफा मार्ग में परिवर्तित कर दिया गया है। इस उपाय का उद्देश्य श्रद्धालुओं के आवागमन को सुचारू बनाना तथा भीड़भाड़ की संभावना को कम करना है। इसके अलावा, पड़ोसी जिलों से आने वाले वाहनों को जिला सीमाओं पर रोक दिया जा रहा है, जिससे शहर में अतिरिक्त यातायात को रोका जा सके। प्रयागराज में चार पहिया वाहनों पर पूर्ण प्रतिबंध के साथ 4 फरवरी तक सख्त उपाय लागू रहेंगे। प्रशासन ने श्रद्धालुओं से महाकुंभ में सुरक्षित और सुचारू अनुभव सुनिश्चित करने के लिए इन दिशानिर्देशों का पालन करने का आग्रह किया है। प्राधिकारियों ने व्यवस्था बनाए रखने तथा किसी भी अन्य दुर्घटना से बचने के लिए जनता से सहयोग का भी आह्वान किया है।

मिर्जापुर और भदोही से प्रयागराज आने वालों को भी इसी तरह की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। रोडवेज बसों को वापस भेज दिया गया है और हजारों लोग विभिन्न स्थानों पर बिना किसी सहायता के फंसे हुए हैं। कुछ क्षेत्रों में स्थानीय निवासियों ने भोजन और पानी उपलब्ध कराने के लिए कदम उठाया है, लेकिन संकट इतना बड़ा है कि कई लोग राहत से वंचित रह गए हैं। कुछ श्रद्धालुओं ने अपना गुस्सा जाहिर करते हुए आरोप लगाया है कि वीआईपी वाहनों को प्राथमिकता दी जा रही है, जबकि आम तीर्थयात्रियों को खुद के हाल पर छोड़ दिया गया है। इन चुनौतियों के बावजूद, अधिकांश लोग संगम तक पहुंचने के अपने संकल्प पर अडिग रहते हैं तथा रास्ते में मिलने वाले वैकल्पिक स्नान स्थलों पर विचार करने से इनकार कर देते हैं।

रेल यात्रा भी बुरी तरह प्रभावित हुई है और इलाहाबाद-प्रयागराज पैसेंजर तथा जौनपुर-बरेली पैसेंजर सहित कई यात्री ट्रेनें रद्द कर दी गई हैं। अन्य ट्रेनों, जैसे कि एलटीटी एक्सप्रेस का मार्ग बदलकर वाराणसी कर दिया गया है, जिससे यात्रा योजनाएं और भी बाधित हो गई हैं। प्रतापगढ़ और अन्य प्रमुख रेलवे जंक्शनों पर हजारों श्रद्धालु फंसे हुए हैं और वैकल्पिक परिवहन की प्रतीक्षा कर रहे हैं। इस बीच, रीवा-प्रयागराज मार्ग पर उत्तर प्रदेश-मध्य प्रदेश सीमा पर लगभग 50,000 वाहन रुके हुए हैं, तथा अधिकारी स्थिति को संभालने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। गंभीर कठिनाइयों के बावजूद तीर्थयात्रियों का उत्साह अडिग रहता है। भूख, ठंड और थकावट को झेलते हुए, वे अटूट आस्था के साथ अपनी यात्रा जारी रखते हैं तथा गंगा में पवित्र स्नान करने के लिए दृढ़ संकल्पित हैं। उनके लिए, जीवन में एक बार मिलने वाले इस आध्यात्मिक अनुभव की खोज में कोई भी कठिनाई बहुत बड़ी नहीं है।

मोदी 3.0 बजट सत्र आज से

सर्वदलीय बैठक में केंद्रीय मंत्री राजनाथ सिंह, जेपी नड्डा और किरेन रिजिजू, राज्य मंत्री एल. मुरुगन और अर्जुन राम मेघवाल।

● कुंभ हादसा, वक्फ रहेगा एजेंड में

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

बजट सत्र से पहले बृहस्पतिवार को आयोजित सर्वदलीय बैठक में विपक्षी दलों ने महाकुंभ त्रासदी और यूपी सरकार द्वारा आम तीर्थयात्रियों के बजाय वीआईपी पर कथित ध्यान केंद्रित करने के मुद्दे पर संसद में चर्चा की मांग की, जबकि केंद्रीय मंत्री किरेन रिजिजू ने कहा कि 31 जनवरी से शुरू होने वाले बजट सत्र के एजेंडे पर बिजनेस एडवाइजरी कमेटी फैसला करेगी। सत्र की शुरुआत राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू द्वारा लोकसभा और राज्यसभा की संयुक्त बैठक को संबोधित करने से होगी। केंद्रीय बजट 1 फरवरी को पेश किया जाएगा। सत्र का पहला भाग 13 फरवरी को और दूसरा भाग 10 मार्च को समाप्त होगा। सत्र का समापन 4 अप्रैल को होगा। सत्र के विधायी एजेंडे में वक्फ (संशोधन) विधेयक और आव्रजन और विदेशी विधेयक सहित 16 विधेयक हैं। इसी सर्वदलीय बैठक में एनडीए में भाजपा के सहयोगी जनता दल (यूनाइटेड) ने एक साथ चुनाव कराने के प्रस्ताव वाले विधेयकों की जांच कर रही संयुक्त संसदीय समिति के कार्यकाल में विस्तार की मांग की, जबकि इसके एक अन्य सहयोगी लोजपा (रामविलास) ने बिहार के लिए 'विशेष औद्योगिक पैकेज' की मांग की। रिजिजू ने रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह की अध्यक्षता में हुई बैठक को रचनात्मक बताया और विपक्षी दलों से सहयोग मांगा। उन्होंने कहा कि बजट सत्र में राष्ट्रपति के अभिभाषण और केंद्रीय बजट पर पारंपरिक चर्चा मुख्य प्राथमिकताएं हैं। कई विपक्षी नेताओं ने कहा कि सत्र के दौरान 'बढ़ती' (शेष पृष्ठ 9)

आम आदमी पार्टी ने सीईसी पर साधा निशाना

राजेश कुमार। नई दिल्ली

आप उम्मीदवार अनिल झा के समर्थन में रोड शो के दौरान आप के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल और सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव।

चुनाव आयोग ने बृहस्पतिवार यमुना में जहर मिलाने के मामले में आप प्रमुख अरविंद केजरीवाल के जवाब से असंतुष्ट होने के बाद उनसे एक और विस्तृत जवाब मांगा है। आयोग ने कहा है कि उनकी टिप्पणी प्रथम दृष्टया विभिन्न समूहों के बीच वैमनस्य और दुश्मनी को बढ़ावा देने वाली प्रतीत होती है। आयोग ने कहा कि केजरीवाल के जवाब हरियाणा द्वारा यमुना नदी में जहर मिलाने के उनके दावे को पुष्ट करने में 'पूरी तरह से मौन' हैं। चुनाव आयोग ने केजरीवाल से पूछा, हरियाणा द्वारा किस तरह का जहर मिलाया गया, जहर की मात्रा, प्रकृति और पता लगाने के तरीके तथा जहर का पता लगाने के स्थान और तरीके के बारे में सहायक साक्ष्य क्या हैं।

यमुना के पानी में हरियाणा सरकार द्वारा 'जहर' मिलाए जाने के अपने दावे को पुष्ट करने के लिए शुक्रवार सुबह 11 बजे तक तथ्यात्मक साक्ष्य मांगने के चुनाव आयोग के निर्देशों पर आप प्रमुख ने तीखी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि मुख्य चुनाव आयुक्त (सीईसी) राजीव कुमार भाजपा के पिट्ठू की तरह काम कर रहे हैं। केजरीवाल ने उन पर रिटायरमेंट के बाद नौकरी मांगने का आरोप लगाते हुए कहा कि वह राजीव कुमार और उनके चुनाव आयुक्तों को यमुना के पानी की तीन बोतलें भेजेंगे और इसके साथ ही उन्होंने उस पानी को पीने की चुनौती भी दी। एक प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए केजरीवाल ने आरोप लगाया कि कुमार ने चुनाव आयोग (ईसी) की विश्वसनीयता को 'नष्ट' कर दिया है और रिटायरमेंट के बाद की नौकरी की तलाश कर रहे हैं। उन्होंने कहा, उन्होंने जिस भाषा का इस्तेमाल किया है, वह चुनाव आयोग का काम नहीं है। उन्हें दिल्ली की किसी भी सीट से चुनाव लड़ना चाहिए। हम राजीव कुमार को भी तीन बोतलें भेजेंगे। मुझे पता है कि वे मुझे तीन दिनों में गिरफ्तार करेंगे, उन्हें ऐसा करने दें, मुझे डर नहीं है।

केजरीवाल की टिप्पणी चुनाव आयोग द्वारा आप प्रमुख को एक और पत्र भेजे जाने के कुछ घंटों बाद आई। जिसमें उसने कहा है कि केजरीवाल के जवाब हरियाणा द्वारा यमुना नदी को 'जहर' देने के उनके दावे को पुष्ट करने में पूरी तरह से मौन रहे हैं। चुनाव निकाय ने पांच सवालों के सटीक (शेष पृष्ठ 9)

ईसी ने पंजाब के सीएम के घर पर रेड की

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

चुनाव आयोग (ईसी) ने बृहस्पतिवार को राष्ट्रीय राजधानी में पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान के कपूरथला हाउस आवास की तलाशी ली, जिसमें दिल्ली विधानसभा चुनाव से पहले वहां से 'नकदी' बांटे जाने की शिकायत की गई थी। यह कार्रवाई दिल्ली पुलिस द्वारा पंजाब भवन के पास नकदी, शराब और आप के पर्चे के साथ 'पंजाब सरकार' लेबल वाली एक गाड़ी को रोके जाने के बाद मामला दर्ज किए जाने के एक दिन बाद की गई है। अधिकारी ने बुधवार को कहा, पंजाब नंबर प्लेट वाली गाड़ी को नई दिल्ली जिले में फ्लाइंग स्क्वॉड टीम ने पकड़ा। फ्लाइंग स्क्वॉड आदर्श आचार संहिता (एमसीसी) के उल्लंघन और चुनाव के लिए इस्तेमाल की जाने वाली शराब, हथियार और नकदी से संबंधित सभी शिकायतों पर कार्रवाई करता है।

कपूरथला हाउस के बाहर एक अधिकारी ने मीडिया को बताया कि वहां से 'नकदी' बांटे जाने के बारे में शिकायत मिली थी। उन्होंने कहा, टीम तलाशी लेने की अनुमति का इंतजार कर रही थी। नई दिल्ली के पुलिस उपायुक्त (डीसीपी) देवेश महला ने कहा, पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान के कपूरथला हाउस आवास पर की जा रही छापेमारी के बारे में, यह रिटर्निंग ऑफिसर और फ्लाइंग (शेष पृष्ठ 9)

चैट जीपीटी, डीपसीक से टक्कर लेने की तैयारी कर रहा भारत

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

केंद्रीय रेल, सूचना एवं प्रसारण तथा इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री अश्विनी वैष्णव ने भारत मिशन के तहत विभिन्न परियोजनाओं की घोषणा की।

भारत ने बृहस्पतिवार को वैश्विक एआई महत्वाकांक्षाओं को रेखांकित करते हुए इस संबंध में अपना स्वयं का 'आधारभूत मॉडल' बनाने की योजना बनाई है जो चैटजीपीटी, डीपसीक आर1 व अन्य की क्षमता को चुनौती दे सकता है। भारत के स्टार्टअप और शोधकर्ताओं द्वारा उपयोग किए जाने वाले 18,693 जीपीयू द्वारा संचालित 'सबसे सस्ती' सामान्य कंप्यूट सुविधा की रूपरेखा तैयार की है। भारत का यह साहसिक कदम ऐसे समय में आया है, जब चीनी कंपनी डीपसीक ने अपने एआई मॉडल के बाद लोगों का ध्यान आकर्षित किया है, जिसने चैटजीपीटी को पछाड़कर एप्पल के ऐपस्टोर पर शीर्ष रैंक वाला मुफ्त ऐप बन गया है, जिसने अब तक अमेरिकी फर्मों, विशेष रूप से सिलिकॉन वैली के अग्रणी ओपन एआई के साथ केंद्रित एआई प्रभुत्व को चुनौती दी है। आईटी मंत्री अश्विनी वैष्णव ने विश्वास जताया कि भारत एक (शेष पृष्ठ 9)

कोहली की झलक के लिए उमड़ी भीड़

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

विराट कोहली का खुमार भारतीय क्रिकेट प्रेमियों के सिर चढकर बोलता है और इसकी झलक यहां बृहस्पतिवार को दिल्ली और रेलवे के बीच रणजी ट्रॉफी मैच में देखने को मिली जब उनका नाम सुनते ही दर्शक रोमांच के मारे चिल्लाने लगे और अभूतपूर्व भीड़ के कारण डीडीसीए को ऐन मौके पर अतिरिक्त इंतजाम करने पड़े। कोहली 13 साल बार रणजी ट्रॉफी मैच खेल रहे हैं। डीडीसीए (दिल्ली और जिला क्रिकेट संघ) ने कोहली की घर वापसी वाले मैच में करीब दस हजार दर्शकों के आने का कयास लगाया था जो रणजी ट्रॉफी मैच में एक रिकॉर्ड है। कोहली का जादू ऐसा है कि सारे कयास धरे रह गए और इससे कहीं अधिक संख्या में लोग आए।

खेल 9 . 30 पर शुरू होना था और इससे काफी पहले से दर्शकों की कतारें लगनी शुरू हो गई थी। डीडीसीए ने पहले 6000 की क्षमता वाला गौतम गंभीर स्टैंड खोला लेकिन भीड़ को देखते हुए 11000 की क्षमता वाला बिशन सिंह बेदी स्टैंड खोलना पड़ा। मैदान पर मौजूद भारत के एक पूर्व क्रिकेटर ने कहा , मैने रणजी ट्रॉफी में ऐसा कुछ कभी नहीं देखा है। अपने खेलने के दिनों में भी घरेलू क्रिकेट देखने दर्शकों को कम ही आते देखा है। यह सब एक खिलाड़ी के लिए हुआ है। इसी बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का काफिला भी उसी जगह से गुजर रहा था जो (शेष पृष्ठ 9)

महिला का लापता 'साधु' पति के डीएनए जांच की गुहार

बिस्वजीत बनर्जी। महाकुंभ नगर

कुंभ मेला, जो अक्सर खोए हुए परिवारों की कहानियों से जुड़ा होता है, ने एक असामान्य मोड़ ले लिया है। झारखंड के एक परिवार का मानना है कि उन्होंने अपने खोए हुए रिश्तेदार को ढूंढ लिया है, लेकिन इसमें एक मोड़ है - जिस व्यक्ति को वे गंगासागर यादव बता रहे हैं, वह 27 साल पहले लापता हो गया था, लेकिन अब वह अघोरी साधु के रूप में रह रहा है और उन्हें पहचानने से इनकार कर रहा है। गंगासागर 1998 में पटना की यात्रा के बाद अपनी पत्नी धन्वा देवी और दो छोटे बेटों को छोड़कर गायब हो गये। कई वर्षों से परिवार ने उसके मिलने की उम्मीद छोड़ दी थी। लेकिन किस्मत ने तब दखल दिया जब प्रयागराज में कुंभ मेले में आए एक रिश्तेदार ने एक साधु को देखा और उसकी तस्वीर घर भेज दी।

गंगासागर के छोटे भाई मुरली यादव, धन्वा देवी और उसके बेटों के साथ, साधु - जो अब बाबा राजकुमार के नाम से जाने जाते हैं - से मुकाबला करने के लिए प्रयागराज पहुंचे। हालाँकि, उन्होंने अपने पिछले जीवन से किसी भी तरह के संबंध से इनकार किया। साध्वी के साथ आए साधु ने दावा किया कि वह वाराणसी से हैं और उन्होंने परिवार के दावों को खारिज कर दिया। हालाँकि, परिवार अभी भी अडिग है। उन्होंने उसकी पहचान के प्रमाण के रूप में उसके लंबे दांत, माथे पर चोट और घुटने पर निशान दिखाया। जवाब पाने के लिए दृढ़ संकल्पित होकर उन्होंने पुलिस हस्तक्षेप की मांग की और डीएनए परीक्षण की मांग की।

मुरली यादव ने कहा, आमतौर पर कहा जाता है कि कुंभ में बिछड़े कभी नहीं मिलते, लेकिन यहां मामला अलग है। कुंभ ने परिवार को तो जोड़ दिया है, लेकिन समस्या यह है कि साधु अभी भी अपने परिवार को पहचान नहीं पाया है। परिवार ने कुंभ मेले के खत्म होने तक इंतजार करने का फैसला किया है। यदि आवश्यक हुआ तो वे डीएनए परीक्षण पर जोर देंगे। मुरली ने कहा, यदि परिणाम यह साबित करते हैं कि हम गलत हैं, तो हम माफी मांगेंगे। फिलहाल, परिवार के कुछ सदस्य घर लौट आए हैं, जबकि अन्य लोग बाबा राजकुमार और उनके साथी पर नजर रख रहे हैं, तथा उन्हें उम्मीद है कि एक पल में उन्हें पहचान लिया जाएगा - या कोई वैज्ञानिक समाधान मिल जाएगा - जिससे दशकों पुराने रहस्य का पटाक्षेप हो जाएगा।

चंडीगढ़ मेयर चुनाव में भाजपा ने आप को हराया

चंडीगढ़ (पीएनएस)। भाजपा ने बृहस्पतिवार को महापौर पद पर जीत हासिल की, जबकि आप समर्थित कांग्रेस उम्मीदवारों ने वरिष्ठ उप महापौर और उप महापौर पदों के लिए हुए मतदान में जीत दर्ज की।

अमेरिका में यात्रियों से भरे विमान व हेलीकॉप्टर में टक्कर

अर्लिंग्टन(पीएनएस)। 60 यात्रियों और चार चालक दल के सदस्यों को ले जा रहा अमेरिकन एयरलाइंस का एक विमान वाशिंगटन के निकट रोनाल्ड रीगन राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतरते समय सेना के एक हेलीकॉप्टर से टकरा गया। इस दुर्घटना में सभी यात्रियों के मारे जाने की आशंका है।

जीएसटी की रडार पर नोएडा के 21 हजार फ्लैट व 57 प्लॉट

● नोएडा प्राधिकरण ने दी संपत्ति खरीद फरोख्त की जानकारी, कर चोरी से जुड़ा मामला

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

शहर के 21 हजार फ्लैट और 57 बड़े प्लॉट का आवंटन राज्य वस्तु एंव सेवा कर विभाग (एस-जीएसटी) विभाग की जांच के दायरे में आ गया है। विभाग की तरफ से पिछले दिनों अलग-अलग श्रेणी का ब्योरा मांगा गया था।

इसके बाद नोएडा प्राधिकरण ने यह जानकारी भेज दी है। अब इन संपत्तियों की खरीद-फरोख्त, रजिस्ट्री व अन्य तथ्यों पर विभाग जांच करेगा। यह जांच तथ्य छिपाकर कर चोरी की आशंका के संदर्भ में होगी। संपत्तियों के रजिस्ट्री पर 18 प्रतिशत से ज्यादा जीएसटी लगती है। नोएडा में त्रिपक्षीय रजिस्ट्री ग्रुप हाउसिंग परियोजनाओं में होती है।

बिल्डर, खरीदार के अलावा नोएडा प्राधिकरण का भी एक पक्ष रहता है। रिसेल वाली संपत्तियों में नामांतरण भी प्राधिकरण करता है। इस लिहाज से प्राधिकरण के जरिए सभी खरीद-फरोख्त का ब्योरा विभाग को मिल जाएगा। वहीं प्राधिकरण ने पहले सर्वे करवाकर ऐसे फ्लैट व परियोजनाओं का ब्योरा भी तैयार करवाया है जहां बगैर रजिस्ट्री के लोग रह रहे हैं। नियम यह है कि सर्किल रेट के हिसाब से संपत्तियों की दरें तय की जाएंगी। फ्लैट, दुकान या शोरूम में निर्माण के साथ ही अन्य सजावटी व सुख-संसाधन लाखों रुपए के लगाए जा रहे हैं। बिल्डर इनकी कीमत खरीदार से तो वसूल कर रहे हैं। लेकिन रजिस्ट्री के वक्त जीएसटी बचाने के लिए इनको खरीद-फरोख्त में छिपा लिया जा रहा है। इसको छिपाने के लिए एक ही परियोजना में दो संपत्तियों की रिकार्ड पर कीमत अलग-अलग दिखाई जा रही हैं। बड़ी संपत्तियों की खरीद-फरोख्त में तो इस तरह से जीएसटी चोरी की रकम भी बड़ी रहती है। रिसेल में जो फ्लैट बिकते हैं उनकी कीमत भी कम दिखाई जाती है। प्राधिकरण की तरफ से पूर्व में अलग-अलग सेक्टरों में बनाए गए फ्लैटों व पुरानी बिल्डर परियोजनाओं में भी रिसेल में बेची जाने वाले फ्लैट की कीमत कम दर्शाए जाने के तथ्य सामने आते रहते हैं।

यूपीसीडा के सीईओ के खिलाफ गिरफ्तारी वारंट

● 2001 में प्लॉट आवंटन से जुड़ा मामला, 50 हजार का भरे बेल बांड, 28 फरवरी को सुनवाई

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

जिला उपभोक्ता आयोग ने उत्तर प्रदेश राज्य औद्योगिक विकास प्राधिकरण (यूपीसीडा) के सीईओ मयूर माहेश्वरी के खिलाफ अरेस्ट वारंट जारी किया है।

उपभोक्ता आयोग के आदेश का क्रियान्वयन न होने पर सीईओ के खिलाफ यह आदेश जारी हुआ है। इसकी सुनवाई करते हुए आयोग ने कानपुर पुलिस कमिश्नर को सीईओ को आयोग के सामने पेश करने का आदेश दिया है। सीईओ को जमानत के लिए पचास हजार रुपए का निजी तौर पर बेल बॉन्ड भरने का भी आदेश देते हुए अगली सुनवाई 28 फरवरी से पहले आयोग के सामने पेश होने को निर्देशित किया है। उत्तर प्रदेश राज्य औद्योगिक विकास प्राधिकरण ने दिल्ली की पुष्पा आडवाणी को 2001 में साइट सी में औद्योगिक भूखंड संख्या 77 आवंटित किया था।

शिकायतकर्ता के अधिवक्ता प्रवेश नागर ने बताया कि समय से किस्तों का भुगतान न करने व अन्य कारण से उनका भूखंड का आवंटन रद कर दिया गया था। इसके खिलाफ आवंटी ने जिला उपभोक्ता फोरम में अपील की। जिला उपभोक्ता फोरम ने 22 अक्टूबर 2003 में आवंटी के पक्ष में फैसला देते हुए यूपीसीडा को बिना किसी शुल्क लिए रद भूखंड को दोबारा से आवंटित करने का आदेश दिया। इसके साथ प्राधिकरण पर 12 हजार रुपए का जुर्माना भी लगाया। यूपीसीडा ने राज्य उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग में जिला उपभोक्ता फोरम के आदेश को चुनौती दी। तीन जुलाई 2019 में राज्य उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग ने जिला उपभोक्ता फोरम के आदेश को बरकरार रखा।

इसके खिलाफ यूपीसीडा ने राष्ट्रीय उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग में अपील की। यहां से भी यूपीसीडा को निराशा मिली। राष्ट्रीय उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग ने अगस्त 2023 में जिला उपभोक्ता फोरम के आदेश को बरकरार रखते हुए एक माह में भूखंड पुनस्थापित करने और 12 हजार रुपए जुर्माना जमा कराने के आदेश दिए, लेकिन इस आदेश का क्रियान्वयन नहीं हुआ। शिकायतकर्ता ने जिला उपभोक्ता आयोग में जनवरी 2024 में अपील की।

संक्षिप्त समाचार

जुआ खेलते 11 गिरफ्तार, 10 मोबाइल बरामद

नोएडा। नोएडा में जीत हार की बाजी लगाकर जुआ खेलने वाले 11 लोगों को थाना फेज-3 पुलिस ने गिरफ्तार किया है। ये लोग गड़ी चौखंडी के एक झुग्गी में जुआ खेलते थे। ये यहां अक्सर ओकेजनली ही जमा होते थे। मुखबीर से जानकारी मिलने के बाद यहां छापा मारा गया। जिसके बाद इनकी गिरफ्तारी की गई। इनके पास से 10 मोबाइल फोन और करीब 70 हजार रुपए कैश बरामद किया गया। डीसीपी शक्ति मोहन अवस्थी ने बताया कि थाना फेस 3 पुलिस ने ग्राम गढी चौखंड में छापा मारा। यहां प्लास्टिक की पन्नी से ढकी एक झुग्गी में जुआ खिलाया जा रहा था। इसकी जानकारी पहले भी मिली थी। लेकिन इस बार पुख्ता साक्ष्य मिलने के बाद छापा मारा गया। जिन 11 लोगों को गिरफ्तार किया गया। उनकी पहचान पंचम सिंह, विनोद, सुन्दर जाटव, राजू, विनीत चौहान, वसंत, तरुण कुमार साहनी, बबलू, दुलारे, चमन पाल और सुनील हुई है। जिस दौरान छापेमारी की गई जुआ चल रहा था। ऐसे में मेज पर रखे करीब 27500 रुपए व तलाशी से 42028 रुपए बरामद किए गए। इसके अलावा ताश की गड्डी भी मिली है। इन सभी का आपराधिक इतिहास खंगाला जा रहा है।

15 फरवरी से होगा अटल बिहारी विरासत सम्मेलन

गाजियाबाद। मोदीनगर में भारतीय जनता पार्टी द्वारा पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी के जन्म शताब्दी वर्ष के अवसर पर एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम की घोषणा की गई। दिल्ली-मेरठ मार्ग पर स्थित विधायक डॉ. मंजू शिवाच के कार्यालय में आयोजित बैठक में जिला अध्यक्ष सतपाल प्रधान ने इस विशेष अभियान की जानकारी दी। %अटल स्मृति संकलन व संपर्क अभियान के तहत जिले भर से अटल जी से जुड़ी यादों को एकत्रित किया जाएगा। इसमें उन व्यक्तियों की तलाश की जाएगी, जिनके पास पूर्व प्रधानमंत्री के साथ बिताए पलों की कोई यादगार हो - चाहे वह अखबार की कतरन हो, किताब पर हस्ताक्षर हो, या फिर कोई ऑडियो-वीडियो रिकॉर्डिंग। साथ ही, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और भाजपा में अटल जी के साथ काम कर चुके वरिष्ठ कार्यकर्ताओं को भी सम्मानित किया जाएगा। 15 फरवरी से 25 मार्च तक चलने वाले अटल विरासत सम्मेलन में जिले के प्रबुद्धजनों और अटल जी के प्रशंसकों को आमंत्रित किया जाएगा। कार्यक्रम में जिला उपाध्यक्ष अमित विद्यापुर ने संचालन किया। इस अवसर पर नगर पालिका चेयरमैन विनोद वैशाली, ब्लॉक प्रमुख सुचेता सिंह, प्रो. नवेन्द्र गौड़ सहित अन्य भाजपा नेता उपस्थित रहे।

मोदीनगर में अवैध खनन पर प्रशासन सख्त

गाजियाबाद। उपजिलाधिकारी डॉ. पूजा गुप्ता ने भोजपुर क्षेत्र में बड़ी कार्रवाई करते हुए अवैध मिट्टी खनन का भंडाफोड़ किया। एपीएस कंपनी द्वारा बिना किसी अनुमति के भोजपुर पुलिस की नाक के नीचे यह अवैध कार्य किया जा रहा था। राजस्व विभाग की टीम के साथ की गई छापेमारी में खसरा नंबर 268 और 278 में चल रहे अवैध खनन को पकड़ा गया। मौके से 10 डंपर, 2 पॉकलैंड और 1 ग्रेडर मशीन जब्त की गईं। एसडीएम ने इस मामले में भोजपुर पुलिस की लापरवाही पर कड़ी नाराजगी जताई और फटकार लगाई। जब्त की गई सभी मशीनें पुलिस के सुपुर्द कर दी गई हैं। एसडीएम ने सभी लेखपालों को अपने-अपने क्षेत्रों में कड़ी निगरानी रखने और किसी भी स्थिति में अवैध खनन न होने देने के निर्देश दिए हैं। कार्रवाई के दौरान नायब तहसीलदार सचिन पंवार, गौरव भारद्वाज, रितु, सुबोध और पेशकार संदीप कुमार सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

प्लाज्मा थेरेपी से लिवर फेलियर मरीज को बचाया

नोएडा। हेपेटाइटिस संक्रमण के बाद लीवर फेलियर से जूझ रही 26 वर्षीय महिला मरीज को चिकित्सकों ने प्लाज्मा थेरेपी से बचा लिया है। फोर्टिस, ग्रेटर नोएडा के गैस्ट्रोएंट्रोलॉजी और हेपटोलॉजी विभाग के कंसल्टेंट डॉक्टर अपूर्व पांडे ने बताया कि मरीज को गंभीर मूर्छित अवस्था (एन्सेफलोपैथी) में भर्ती कराया गया। लिवर फंक्शन बुरी तरह से बिगड़े पाए गए और इस बीमारी की पहचान हाइपर एक्यूट लिवर फेलियर के रूप में की गयी। डॉ. अपूर्व ने बताया मरीज की हालत देखते हुए प्लाज्मा (प्लाज्माफेरेसिस और साइटोसॉर्ब) थेरेपी दी गई। इस प्रक्रिया से खून से हानिकारक तत्वों और टॉक्सिन्स को निकाला गया। इससे मरीज को प्लाज्मा थेरेपी के माध्यम से इलाज करके लिवर ट्रांसप्लांट की आवश्यकता को खत्म कर दिया। उन्होंने बताया कि 100 हेपेटाइटिस के मामलों में से 1 से 5 मरीजों में एक्यूट लिवर फेलियर हो जाता है जबकि बाकी मरीज हल्के पीलिया के बाद ठीक हो जाते हैं।

महाकुंभ में भगदड़ से जान बचाकर निकले 19 नोएडावासी

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

प्रयागराज महाकुंभ में मंगलवार की देर रात संगम तट पर अमृत स्नान के दौरान हुई भीषण भगदड़ में ग्रेटर नोएडा के 19 श्रद्धालुओं ने सूझबूझ से अपनी जान बचाई।

डाढा गांव के दिनेश कुमार और परविंदर ने बताया कि वे अपने 17 साथियों के साथ दो दिन पहले कुंभ स्नान के लिए आए थे। घटना के समय वे संगम तट की ओर बढ़ रहे थे, तभी अचानक चीख-पुकार के साथ भगदड़ मच गई। सौभाग्य से वे घटनास्थल से कुछ दूरी पर थे। उन्होंने और उनके साथियों ने भीड़ से धीरे-धीरे निकलकर अपनी जान बचाई। सुरक्षित स्थान तक पहुंचने के लिए उन्हें कई किलोमीटर पैदल चलना पड़ा और अंतत: एक गेस्ट हाउस में शरण ली। जैसे ही यह खबर मीडिया में प्रसारित हुई, परिजनों ने तुरंत संपर्क किया। श्रद्धालुओं ने अपने परिवारों को सकुशल होने की जानकारी दी। दिनेश और परविंदर ने बताया कि भगदड़ के दौरान उन्हें अपनी जान का खतरा महसूस हुआ, लेकिन सभी ने संयम बनाए रखा और सुरक्षित स्थान तक पहुंचने में सफल रहे। मुंहफांड गांव निवासी सोनू नागर ने बताया कि वह महाकुंभ में स्नान करने के लिए अपने करीब 7 साथियों के साथ मंगलवार को गए। उन्होंने बताया कि जिस वक्त संगम तट पर यह घटना हुई थी। उसे वक्त वह करीब 90 किमी दूर थे। जिसके बाद रास्ते ब्लॉक हो गए तो वह गेस्ट हाउस में रुक गए। उन्होंने बताया कि बुधवार की शाम तक भी रास्ते ब्लॉक होने की वजह से वह वहीं पर ठहरे हुए थे। उनका कहना है कि यदि रास्ते नहीं खुलते हैं, तो वह वापस अपने घर को लौटेंगे।

गाजियाबाद में 3 से 5 फरवरी तक शराबबंदी

गाजियाबाद। दिल्ली विधानसभा चुनाव के मद्देनजर गाजियाबाद में शराब की सभी दुकानें बंद रहने का आदेश जारी किया गया है। जिला मजिस्ट्रेट दीपक मीणा द्वारा जारी आदेश के अनुसार, दिल्ली की सीमा से 100 मीटर की परिधि में स्थित सभी मदिरा की दुकानें 3 फरवरी शाम 6 बजे से 5 फरवरी को मतदान समाप्ति तक बंद रहेंगी। उत्तर प्रदेश आबकारी अधिनियम 1910 की धारा 59 के तहत यह निर्णय लिया गया है।

इस दौरान देसी शराब, विदेशी मदिरा, बियर, प्रीमियम शॉप और भांग की फुटकर दुकानों के अलावा शराब के थोक विक्रेता, मॉडल शॉप, बार और आर्मी कैंटीन भी बंद रहेंगे। यह कदम दिल्ली में स्वतंत्र, निष्पक्ष और शांतिपूर्ण चुनाव सुनिश्चित करने के लिए उठाया गया है। महत्वपूर्ण बात यह है कि इस अवधि के लिए दुकानदारों को किसी प्रकार का प्रतिफल नहीं दिया जाएगा।

बोलेरो की टक्कर से बच्चे की मौत

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

थाना सेक्टर-142 क्षेत्र के सेक्टर-145 के पास एक अज्ञात बोलेरो जीप ने एक बच्चे को टक्कर मार दी। बच्चे ने मौके पर ही दम तोड़ दिया। बच्चे की पहचान आरुष (15) साल हुई है। बच्चे के शव का पोस्टमॉर्टम करा दिया गया। उसे परिजनों के हवाले कर दिया गया है।

पीड़ित पिता की शिकायत पर अज्ञात चालक के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया है। आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाली जा रही है। रात को थाने में पहुंचे। मामले की जानकारी पुलिस को दी। उन्होंने शिकायत में बताया कि वह ग्राम नलगढा सेक्टर-145 में अपने परिवार के साथ रह रहे हैं। पीड़ित के अनुसार 29 जनवरी को रात को उनका बेटा आरुष (15) सेक्टर-145 मेट्रो स्टेशन के पास सर्विस रोड पर पैदल जा रहा था। तभी काले रंग की रंग की बोलेरो जीप के चालक ने तेजी और लापरवाही से वाहन चलाते हुए उसे टक्कर मार दी। टक्कर लगने के बाद आरुष दूर गिरा। लोग कार चालक को रोकते इससे पहले वो तेजी से ड्राइव करता हुआ वहां से भाग गया। वहां मौजूद लोग आरुष को अस्पताल लेकर पहुंचे। इससे पहले की आरुष की मौत हो चुकी थी। पीड़ित की शिकायत पर घटना की सर्विस रोड के आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज की जांच की जा रही है। पुलिस के मुताबिक जल्द ही आरोपी कार चालक को गिरफ्तार किया जाएगा।

तेज रफ्तार स्कार्पियो डिवाइडर से टकराई

गाजियाबाद। तेज रफ्तार स्कार्पियो सड़क पर डिवाइडर से टकरा गई। गाड़ी की स्पीड इतनी तेज थी कि आगे के हिस्से के परखच्चे बिखर गए। वहीं स्कार्पियो के पहिए भी अलग जा गिरे। इस दौरान हाईवे पर अफरा तफरी मच गई।

आईएमएस गाजियाबाद कॉलेज और एकेजीईसी इंजीनियरिंग कॉलेज के बीच में हुई है। मौके पर पहुंची डॉयल 112 की पुलिस ने घटना की जानकारी ली। तेज रफ्तार स्कॉर्पियो ह गाड़ी के परखच्चे बिखर गए। जिसमें बताया कि एक वृद्ध व्यक्ति गाड़ी को चला रहे थे। हादसा कैसे हुआ इसका पता नहीं चल सका है। पुलिस मान रही है कि स्कार्पियो गाड़ी ओवर स्पीड में थी।

गाजियाबाद में चला नगर निगम का बुलडोजर

● 10 किमी तक खोखे-ठेले हटाए, 3 दिन तक चलेगा अभियान

पायनियर समाचार सेवा। गाजियाबाद

गाजियाबाद नगर निगम ने इंदिरापुरम में अवैध अतिक्रमण के खिलाफ बड़ी कार्रवाई की है। हिंडन नदी से लेकर नेशनल हाईवे 09 तक करीब 10 किलोमीटर के दायरे में चलाए गए इस विशेष अभियान में पांचों जोन के अधिकारी मौजूद रहे। निगम की टीम ने वार्ड संख्या 81, 87 और 97 में जेसीबी की मदद से अवैध निर्माण, स्थाई खोखे और पटरी पर लगी ठेलियों को हटाया। साथ ही, रास्तों पर अवैध रूप से लगाए गए जनरेटर भी हटाए गए।

इस अभियान में नगर निगम के निर्माण विभाग, उद्यान विभाग और स्वास्थ्य विभाग की संयुक्त टीम ने भाग लिया।यह विशेष अभियान तीन दिनों तक चलेगा, जिसमें इंदिरापुरम के मुख्य मार्गों के साथ-साथ आंतरिक इलाकों से भी अतिक्रमण हटाया जाएगा। नगर निगम ने नागरिकों से अपील की है कि वे स्वयं अपना अवैध अतिक्रमण हटा लें और प्रशासन को सहयोग करें। इस कार्रवाई से क्षेत्र में यातायात व्यवस्था में सुधार होने की उम्मीद है। यह विशेष अभियान तीन दिनों तक चलेगा, जिसमें इंदिरापुरम के मुख्य मार्गों के साथ-साथ आंतरिक इलाकों से भी अतिक्रमण हटाया जाएगा। नगर निगम ने नागरिकों से अपील की है कि वे स्वयं अपना अवैध अतिक्रमण हटा लें और प्रशासन को सहयोग करें।

FORMAT C-1

(For candidate to publish in Newspapers, TV)

Declaration about criminal cases

(As per the judgment dated 25th September, 2018, of Hon'ble Supreme Court in WP (Civil) No. 536 of 2011 (Public Interest Foundation & Ors. Vs. Union of India &Anr.)

Name and address of candidate: **SH. ABDUL REHMAN R/O H. NO. 715, GALI NO. 28, JAFRABAD, DELHI-110053**

Name of political party: **INDIAN NATIONAL CONGRESS**

(Independent candidates should write "Independent" here)

Name of Election: **ELECTION OF LEGISLATIVE ASSEMBLY OFNCT OF DELHI, 2025**

*Name of Constituency: **AC-65-SEELAMPUR**

I **ABDUL REHMAN** (name of candidate), a candidate for the above mentioned election, declare for public information the following details about my criminal antecendents:

(A) Pending criminal cases

Sl. NO.	Name of Court	Case No. and dated	Status of case(s)	Section(s) of Acts concerned and brief description of offences(s)
1.	LD. JMFC, SHAHDARA DISTRICT, KKD COURTS, DELHI	FIR NO. 699/19 DATED 17/12/2019	UNDER INVESTIGATION	U/S 147/148/149/186/353/332/307/427/435/120B/34/IPC
2.	LD. JMFC, SHAHDARA DISTRICT, KKD COURTS, DELHI	FIR NO. 245/13 (DATE NOT KNOWN)	UNDER INVESTIGATION	U/S 3 DPDP ACT
3.	LD. JMFC, SHAHDARA DISTRICT, KKD COURTS, DELHI	FIR NO. 388/13 (DATE NOT KNOWN)	UNDER INVESTIGATION	U/S 3 DPDP ACT

(B) Details about cases of conviction for criminal offences

Sl. No.	Name of Court & date(s) of order(s)	Description of offence(s) & punishment imposed	Maximum Punishment Imposed
1.	LD. ACMM, CENTRAL DISTRICT, MP/MLA COURT, ROUSE AVENUE COURT, DELHI & DATE OF CONVICTION IS 29/04/2023	U/S 353/506 (PARA 2) IPC & RELEASED ON PROBATION ON 07/06/2023	RELEASED ON PROBATION ON 07/06/2023

*In\ the case of election to Council of States or election to Legislative Council by MLAs, mention the election concerned in place of name of constituency.

थाना प्रभारी के कार्यक्षेत्र बदले

नोएडा। लॉ एंड ऑर्डर को चुस्त दुरुस्त रखने के लिए पुलिस कमिश्नर लक्ष्मी सिंह ने कई थाना प्रभारी के कार्यक्षेत्र में बदलाव किया। सेक्टर-142 थाना प्रभारी निरीक्षक पुष्पराज सिंह को सेंट्रल नोएडा आईटी सेल भेजा गया है। वहीं प्रभारी न्यायालय सुरक्षा विनोद कुमार मिश्र को सेक्टर-142 थाने का नया प्रभारी बनाया गया है। रबुपुरा के थाना प्रभारी राघवेंद्र सिंह को एक्सप्रेसवे थाने का प्रभारी बनाया गया है। सुजीत कुमार उपाध्याय को रबूपुरा थाने की जिम्मेदारी मिली है। वहीं उप निरीक्षक अरविंद कुमार वर्मा को रबुपुरा थाने का प्रभारी बनाया गया है। अनुज कुमार को प्रभारी न्यायालय सुरक्षा बनाया गया है। थाना प्रभारियों के साथ ही चौकी प्रभारियों के भी व्यापक स्तर पर तबादले हो रहे हैं। इससे पहले पुलिस कमिश्नर ने एडीसीपी अधिकारियों के कार्यक्षेत्र में बदलाव किया था। आगामी दिनों में और भी थाना प्रभारियों के कार्यक्षेत्र में बदलाव किया जा सकता है। वहीं एडीसीपी और थाना प्रभारियों के बदलाव के बाद नए अधिकारियों ने अपने नए कार्य क्षेत्र का कार्यभार संभाल लिया है। इसी क्रम में बुधवार रात एडीसीपी सुमित शुक्ला ने टीम के साथ थाना सेक्टर-39 का क्षेत्र का दौरा भी किया।

ट्रेडिंग के नाम पर ठगी, 17 बार रकम हस्तांरित

● पीड़ित की शिकायत पर मामला दर्ज, जांच शुरू

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

फॉरेक्स ट्रेडिंग कर मुनाफा कमाने का झांसा देकर साइबर ठगों ने एक व्यक्ति के साथ 53 लाख रुपए की ठगी कर ली। ठगों ने इसके लिए पीड़ित को दो सप्ताह तक फर्जी प्रशिक्षण भी दिया।

साइबर क्राइम थाने की पुलिस ने पीड़ित की शिकायत पर मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। ठगों ने कुल 17 बैंक खातों में रकम ट्रांसफर कराई है। ग्रेटर नोएडा के एनएसजी सोसाइटी निवासी कृष्ण कुमार ने बताया कि अप्रैल 2024 में हर्षिता रेड्डी नाम की महिला ने टेलीग्राम आईडी से एक मैसेज भेजा। महिला कुछ दिन तक शिकायतकर्ता से सामान्य बात करती रही। फिर एक दिन उसने फॉरेक्स ट्रेडिंग के बारे में कृष्ण कुमार को जानकारी दी। शिकायतकर्ता को फॉरेक्स ट्रेडिंग के बारे में कोई जानकारी नहीं थी, ऐसे में उसने यहां पैसा लगाने से मना कर दिया।

इसके बाद महिला ने पीड़ित को अपना निजी मोबाइल नंबर दिया और बातों में उलझाकर फॉरेक्स ट्रेडिंग के लिए राजी कर लिया। कृष्ण कुमार को एक ग्रुप में जोड़ा गया। ठगों द्वारा एक एप भी डाउनलोड कराया गया। 1 मई 2024 को 41 हजार 500 रुपए फॉरेक्स ट्रेडिंग आईडी बनाकर आरटीजीएस के माध्यम से ट्रांसफर कराए गए। कुछ समय बाद यह राशि पीड़ित के खाते में विदेशी मुद्रा में 500 डॉलर के रूप में दिखाई गई। फिर उस महिला ने कृष्ण कुमार को ट्रेडिंग खाते में 10 लाख रुपए जमा करने का लालच दिया और उसने कहा कि जितना अधिक निवेश उतना अधिक रिटर्न मिलेगा।

इन बातों में आकर शिकायतकर्ता ने रकम लगा दी। पांच दिन बाद शिकायतकर्ता ने जब मुनाफे समेत पूरी रकम निकालनी चाही तो पैसा नहीं निकला। इसके बाद ठग पैसे निकालने के लिए 20 प्रतिशत कर की राशि जमा करने का दबाव पीड़ित पर बनाने लगे। पीड़ित ने ठगों के कहने पर 15 लाख 599 रुपए का कर जमा कर दिया। इसके बाद पीड़ित ने 16 जून 2024 को रुपए निकालने का अनुरोध किया। जालसाजों ने जोखिम नियंत्रण के कारण आरटीजीएस खाते को बैंक की तरफ से फ्रीज करा दिया। ठगों ने कृष्ण कुमार को फंसाकर कर 30 लाख रुपए और जमा करने के लिए बोला और कहा कि ये रुपए मिल जाएंगे तो तुम्हारे पहले के फंसे रुपए भी सेफ रहेंगे।

13.15 करोड़ के मादक पदार्थ भट्टी में जलाए

गाजियाबाद। पुलिस ने एक बड़ी कार्रवाई में तीनों जोन के 240 मुकदमों से जुड़े करीब 2232 किलो मादक पदार्थों को नष्ट किया। इन मादक पदार्थों की कीमत लगभग 13.15 करोड़ रुपए आंकी गई है। पुलिस कमिश्नर के निर्देश पर 25 जनवरी से शुरू किए गए विशेष अभियान के तहत तीनों जोन में डीसीपी के नेतृत्व में ड्रग डिस्पोजल कमेटी का गठन किया गया।

नगर जोन से 239.5 किलो गांजा और 1.25 किलो चरस, ग्रामीण जोन से 922.8 किलो गांजा, 824.9 किलो डोडा, 22.8 किलो चरस और 0.13 किलो हीरोइन का निस्तारण किया गया। वहीं, ट्रांस हिंडन जोन से 187.3 किलो गांजा, 1.72 किलो चरस, 26.5 किलो डोडा, 0.027 किलो हीरोइन और 3.089 किलो नशीले पाउडर को नष्ट किया गया।

प्राधिकरण में फर्जी दस्तावेजों से प्रॉपर्टी ट्रांसफर की जांच

● दस्तावेज खंगालने किए शुरू, 450 वर्गमीटर का है जमीन

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

रिटायर्ड आईएएस अफसर हरी शंकर मिश्रा की मौत के बाद उनकी करोड़ों रुपए की प्रॉपर्टी पर तीन महिलाओं ने दावा किया कर दिया था।

इस मामले की जांच अभी चल ही रही है कि एक और मामला नोएडा प्राधिकरण में आ गया। यहां प्राधिकरण से रिटायर्ड अधिकारी की मौत के बाद एक अन्य शख्स ने उनके नाम का आधार, पैन और अन्य दस्तावेज बनाकर प्लाट किसी अन्य कंपनी को बेच दिया। ये प्लाट सेक्टर-40 में करीब 450 वर्गमीटर का है। जिसकी कीमत करीब 6 करोड़ है। जिसे फर्जी तरीके से एक कंपनी को बेचा गया। प्राधिकरण ने अब इस मामले में जांच शुरू कर दी है। प्राधिकरण ने एक टीम गठित की है जो ये पता लगा रही है कि फर्जी दस्तावेज के आधार पर प्रॉपर्टी का ट्रांसफर ऑफ मैमोरंडम कैसे कर दिया गया। जबकि मूल आवंटी की मौत करीब 8 साल पहले हो चुकी थी। इस मामले में फर्जीवाड़े के लिए दस्तावेज की एक लंबी ट्रेल है। जिसमें प्लाट के फर्जी कागज, आधार कार्ड, पैन कार्ड आदि। बैंक में किया गया चालान। दरअसल, पूरे फर्जीवाड़े को प्रमाणिक करने की शुरुआत नोएडा प्राधिकरण के आवासीय प्लाट विभाग से हुई। यहां प्लाट की एनओसी फर्जी दस्तावेजों से किए गए आवेदन के आधार पर दी गई। जाहिर है बिना संलिप्तता के ऐसा होना संभव नहीं है।

ऐसे में इस पूरे प्रकरण की जांच प्राधिकरण अपने स्तर से करवा रहा है। दस्तावेजों को वेरिफाइ कराया जा रहा है। प्राधिकरण के एसीईओ सतीश पाल ने बताया कि ऐसा दोबारा नहीं हो इसके लिए भी प्रयास किए जा रहे है।

ये प्लाट सेक्टर-40 में करीब 450 वर्गमीटर का है। प्लाट के मालिक वाई जानकी रमैया है। इनकी मौत करीब आठ साल पहले हो गई थी। जब इस प्लाट पर एक कंपनी द्वारा निर्माण कार्य शुरू कराया जाने लगा। इसकी जानकारी मृतक की बेटी जो आंध्रप्रदेश में थी। उनको हुई। उन्होंने थाना सेक्टर-39 में एफआईआर दर्ज कराई। इस मामले में पुलिस ने तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया। जिसके बाद फर्जीवाड़े का खुलासा हुआ। जालसाजों ने आठ साल पहले मर चुके प्लॉट मालिक का फर्जी आधार कार्ड बनवाया। दिल्ली से एक टेलर को लाकर प्लाट का मालिक बनाया। फिर एक ब्रोकर के नाम एग्रीमेंट किया। इसके बाद यह प्लाट दिल्ली निवासी एक व्यक्ति को बेच दिया गया। पुलिस ने इस मामले में शोएब , संदीप गोयल और शमशेर को गिरफ्तार किया। इसमें शमशेर को ही प्लाट का मालिक बनाया गया था। प्राधिकरण के एसीईओ सतीश पाल ने बताया कि एक ऐसा साफ्टवेयर डेवलप करने का विचार किया जा रहा है। जिसमें किसी भी ट्रांसफर ऑफ मैमोरंडम होने से पहले जिस प्रॉपर्टी का ट्रांसफर किया जाना है।

विस चुनाव: भाजपा का करें राजतिलक : शाह

बोले, प्रधानमंत्री मोदी की गारंटी के रूप में महिलाओं के खाते में हर महीने 2,500 रुपये पहुंचने शुरू हो जाएंगे

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने बृहस्पतिवार को आम आदमी पार्टी के संयोजक अरविंद केजरीवाल पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने यमुना नदी के पानी में जहर मिलाने वाले केजरीवाल के आरोप को लेकर पूर्व सीएम की जमकर खिंचाई की।

साथ ही यमुना में डुबकी लगाने को लेकर किए अपने वादे से मुकरने को लेकर भी सवाल पूछा। शाह ने केजरीवाल को सलाह दी कि चुनाव जीतने के लिए झूठ बोलना बंद करें। केंद्रीय मंत्री आप नेता पर हमला बोलते हुए कहा कि केजरीवाल कहते हैं कि भाजपा नेताओं ने ने दिल्ली वालों को परेशान करने के लिए हरियाणा से यमुना नदी के पानी में जहर मिलाया है। शाह ने आप प्रमुचा से सवाल पूछा कि कौन सा जहर मिलाया है, कौन सी लेबोरेटरी में आपने जांच कराई, उसका नाम बताइए।

आप कह रहे हैं कि जहर मिलाया हुआ पानी आपने रोक दिया। यमुना का पानी रुकता है तो गांवों में बाढ़ आ जती है। उन्होंने लोगों से पूछा कि वे बताएं दिल्ली के किसी गांव में बाढ़ आई क्या। अमित शाह बृहस्पतिवार को रोहिणी में भाजपा प्रत्याशी विजेंद्र गुप्ता के समर्थन में जनसभा और शालीमार बाग विस क्षेत्र की भाजपा प्रत्याशी रेखा गुप्ता के समर्थन में रोड शो किया। शाह ने कहा कि आम आदमी पार्टी ने पूदी दिल्ली को कूड़ेदान में तब्दील कर दिया है। केजरीवाल ने कोई वादा पूरा नहीं नहीं किए। ऐसे में 5 फरवरी को दिल्ली वालों के पास केजरीवाल की आप-दा से मुक्त होने का बहुत बड़ा मौका है।

आप-दा को हटाने का मतलब है पिछले 10 सालों के केजरीवाल के भ्रष्टाचार को जवाब देना। शाह ने इलाके मतदाताओं से अपील की वे आप-दा को हटाकर प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में डबल इंजन की सरकार बनाएं। आप नेता ने दावा किया था कि दिल्ली सुंदर बनेगी, कूड़े के पहाड़ खत्म हो जाएंगे, सड़कों को विश्वस्तरीय बनाएंगे और गलियों की साफ-सफाई होगी लेकिन इनमें से एक भी वादा पूरा नहीं किया। इसीलिए मतदाताओं को चाहिए कि वह 5 फरवरी को केजरीवाल और उनकी पार्टी को राजनीतिक वनवास पर भेज कर भाजपा का राजतिलक कर दें। रोहिणी की जनसभा में शाह के पहुंचते ही पूरा पंडाल जय श्री राम, भारत माता की जय व नरेंद्र मोदी जिंदाबाद के नारों से गूंज उठा।

इस अवसर पर शाह ने एक-एक करके केजरीवाल के झूठे वादों को गिनवाया और चुनौती दी कि अगर केजरीवाल ने लोगों के कल्याण के लिए एक भी काम किया हो तो वो बताएं। केजरीवाल ने जितनी भी विकास की परियोजनाएं थी सबका पैसा हड़प लिया और एक भी काम नहीं करवाया। कहा था कि यमुना को साफ करवाकर दिल्ली वालों को उसमें डुबकी लगवांगे। यमुना तो साफ नहीं हुई, लेकिन केजरीवाल ने यमुना साफ करने के लिए केंद्र के पैसों में डुबकी जरूर लगा ली। शिक्षा क्रांति के नाम पर न तो कोई नया स्कूल बनवाया और न ही कोई क्लासरूम।

शिक्षा के नाम पर करोड़ों का भ्रष्टाचार कर लिया। बसों में पैनिक बटन के नाम पर करोड़ों का घोटाला, पानी साफ करने के नाम पर दिल्ली जल बोर्ड का 28400 करोड़ का घोटाला, शीश महल में सजावट और रेनोवेशन के नाम पर 55 करोड़ रुपये का घोटाला किया। ये इतने घोटाले हैं कि अगर गिनने बैठेंगे तो चुनाव खत्म हो जाएगा, इनकी गिनती खत्म नहीं होगी।

उन्होंने भाजपा के संकल्प पत्र का जिक्र करते हुए कहा कि विधान सभा चुनाव के बाद भाजपा की सरकार बनना तय है और सरकार बनते ही विकसित दिल्ली के लिए मोदी की गारंटी के रूप में महिलाओं को हर महीने की 5 तारीख को 2,500 रुपये उनके बैंक खाते में पहुंचने शुरू हो जाएंगे। इसके अलावा 500 रुपये में एलपीजी सिलेंडर, होली-दिवाली पर 1-1 मुफ्त सिलेंडर, 70 साल से अधिक के बुजुर्गों को 10 लाख तक का मुफ्त इलाज, अटल कैंटीन से जेजे क्लस्टर में सिर्फ 5 रुपये में पौष्टिक भोजन उपलब्ध करवाना, ऑटो/टैक्सी/ई-रिक्शा चालकों को 10 लाख रुपये तक का जीवन बीमा, टेक्सटाइल कर्मचारियों को भी 10 लाख तक का जीवन बीमा, 50,000 सरकारी नौकरियां व 20 लाख रोजगार-स्वरोजगार का सृजन, दिल्ली को सौ फीसदी ई-बस सिटी बनाने, 1700 अनधिकृत कॉलोनियों के लोगों को पूर्ण स्वामित्व देने समेत अन्य वादों को लागू करने की प्रक्रिया शुरू कर दी जाएगी। इसके अलावा शाह ने उपस्थित जन समुदाय को यह भी आश्वासन दिया कि वर्तमान में चल रही किसी भी जनकल्याणकारी योजना को बंद नहीं किया जाएगा और सभी योजनाएँ बदस्तूर जारी रहेंगीं।

सभी सीटों पर हारेगी भाजपा : अखिलेश

नई दिल्ली। आप के राष्ट्रीय संयोजक केजरीवाल के साथ समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने गुरुवार को किराड़ी विधानसभा मे मेगा रोड शो किया। अखिलेश ने केजरीवाल को जीत की बधाई देते हुए कहा दिल्ली में एक बार फिर आम आदमी पार्टी की सरकार बनने जा रही है और भाजपा की सभी 70 सीटों पर हार होगी। जिस तरह से आप नेता की अगुआई में आम आदमी पार्टी की सरकार ने शिक्षा-स्वास्थ्य और बिजली-पानी के क्षेत्र में अच्छा काम किया है, उसकी पूरी दुनिया स्टडी करना चाहती है।

इसलिए लोग एक बार फिर आप पर भरोसा कर पार्टी को ऐतिहासिक जीत दिलाएंगे और भाजपा की बेइमानी का सफाई करेंगे। अखिलेश यादव ने आम आदमी पार्टी ने मन बना लिया है कि भाजपा को पटखनी देनी है। आप का चुनाव चिन्ह झाड़ू भाजपा की बेईमानी का सफाया करने जा रहा है। भाजपा और उसकी बेईमानी का भी सफाया होगा। मेरी दिल्ली की जनता से अपील है कि सभी लोग मिलकर भाजपा का सफाया करिए और झाड़ू को वोट दीजिए। अपना एक-एक वोट झाड़ू को जाना चाहिए। आप ने फ्री स्वास्थ्य, शिक्षा, बिजली, पानी में ऐसा काम किया है, जो दुनिया भर में उदाहरण बना है और लोग इस मॉडल की स्टडी करके अपने देशों में लागू करना चाहते हैं। जनता आम आदमी पार्टी की सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओ को खोना नहीं चाहती है। कोई ऐसा नहीं है जो भाजपा को वोट डालकर अपना ही नुकसान कर लें। भाजपा के लोग भी कह रहे हैं कि वह भी आम आदमी पार्टी और अरविंद केजरीवाल की चल रही योजनाओं को बंद नहीं करेंगे। भाजपा वाले जनहित की योजनाओं और विकास से घबराने वाले लोग हैं। इसलिए कोई भी वोट खराब ना हो। सभी वोट झाड़ू को डालकर आम आदमी पार्टी की सरकार बनाने का काम करें।

भाजपा ने स्टार प्रचारकों को मैदान में झोंका

हरियाणा के लोगों से माफी मांगे केजरीवाल: नड्डा

पूर्वी दिल्ली पहुंचे में भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा गदा उठाते हुए।

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष जे पी नड्डा ने बृहस्पतिवार को कहा कि यमुना में प्रदूषण के मुद्दे पर आम आदमी पार्टी के आरोप-प्रत्यारोप ने राष्ट्रीय राजधानी की सरकार की अक्षमता को उजागर कर दिया है। उन्होंने मांग की कि आप के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल को यमुना में जहर मिलाने वाली अपनी टिप्पणी के लिए हरियाणा और दिल्ली के लोगों से माफी मांगनी चाहिए।

नड्डा ने एक्स पर इंफोइनडेटा के एक इन्फोग्राफिक को भी टैग किया, जिसमें दावा किया गया है कि यमुना के दिल्ली में प्रवेश करते ही प्रदूषण बढ़ जाता है।

भाजपा अध्यक्ष ने कहा, यमुना में प्रदूषण को लेकर आप-दा के आरोप-प्रत्यारोप ने इसकी अक्षमता और इसके विफल शासन को उजागर कर दिया है। उन्होंने कहा, जिम्मेदारी लेने की बजाय आप-दा सरकार ने राजनीतिक लाभ के लिए लोगों में डर फैलाना शुरू कर दिया है। अरविंद केजरीवाल को अपने बयान के लिए हरियाणा और दिल्ली की जनता से माफी मांगनी चाहिए।

केजरीवाल सरकार ने पिछले 10 साल से अधिक समय में भ्रष्टाचार, झूठ और खोखले वादों के अलावा कुछ नहीं किया है।

उन्होंने कहा, केंद्र सरकार से 8,500 करोड़ रुपए प्राप्त होने के बावजूद, नदी को साफ करने के लिए कोई सार्थक काम नहीं किया गया।

गहलोत ने बिजवासन में आप के उम्मीदवार पर उठाए सवाल

नई दिल्ली। भाजपा नेता कैलाश गहलोत ने बिजवासन विधानसभा सीट पर आम आदमी पार्टी के उम्मीदवार चयन पर सवाल उठाते हुए आरोप लगाया कि दिल्ली में सत्तारूढ़ पार्टी की तथाकथित नैतिकता और आदर्श अब पूरी तरह से नीचे की ओर जा रहे हैं। बिजवासन सीट से भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) उम्मीदवार कैलाश गहलोत ने कहा, जिन वादों के साथ आम आदमी पार्टी सत्ता में आई थी, वे अब तक अधूरे हैं। गहलोत ने आरोप लगाते कहा कि सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि आप ने सुरेंद्र भारद्वाज को बिजवासन विधानसभा सीट से उम्मीदवार बनाया है, जबकि उनके खिलाफ कई प्राथमिकी दर्ज हैं। सुरेंद्र के खिलाफ कल ही एक नया मामला दर्ज हुआ है। गहलोत ने कहा कि आम आदमी पार्टी ने जनता से किये वादों को पूरा नहीं किया। पार्टी की नैतिकता में कमी दिखाई देने लगी, जिसके बाद उन्होंने पिछले

पंजाब के आप समर्थक सुरक्षा को खतरा : प्रवेश

नई दिल्ली। नई दिल्ली सीट से भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी प्रवेश वर्मा ने को आरोप लगाया कि पंजाब से आम आदमी पार्टी के हजारों समर्थक राष्ट्रीय राजधानी में दाखिल हुए हैं और राज्य सरकार के स्टीकरों वाले वाहन इस्तेमाल कर रहे हैं।

उन्होंने पांच फरवरी को होने वाले विधानसभा चुनाव से पहले शहर की सुरक्षा को खतरा पैदा होने की आशंका जताई है। भाजपा नेता ने पंजाब भवन के सामने बुधवार को एक वाहन जब्त होने का हवाला देते हुए संवाददाता सम्मेलन में कहा कि दिल्ली पुलिस को इन वाहनों की जांच करके उनमें बैठे लोगों के ठिकानों का पता लगाना चाहिए। उन्हें आशंका है कि अगले कुछ दिन तक दिल्ली की सुरक्षा को खतरा रहेगा। वह एक निजी वाहन था, जिसपर पंजाब सरकार का स्टीकर लगा हुआ था। वाहन में से शराब, चुनाव सामग्री और आठ लाख रुपए की नकदी मिली। वर्मा ने आम आदमी पार्टी पर पकड़े जाने के बाद झूठ बोलने के आरोप लगाया है तो वहीं आप के राज्यसभा सदस्य संजय सिंह ने कहा कि पंजाब सरकार ने राष्ट्रीय राजधानी में ऐसा कोई वाहन होने की बात से इनकार किया है।

आरक्षण विरोधी है आप-भाजपा: राहुल गांधी

बादली की चुनावी सभा में केजरीवाल को निशाने पर लिया

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने बृहस्पतिवार को भाजपा और दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल पर झूठ बोलने तथा दलित विरोधी होने का आरोप लगाया है।

बादली की एक चुनावी सभा में केजरीवाल को निशाने पर लिया। राहुल गांधी ने कहा, मैं आपको स्पष्ट रूप से बता दूं कि जब केजरीवाल (राजनीति में) आए तो मैंने शुरुआत में उन्हें समझने की कोशिश की। मुझे समझ आया कि केजरीवाल भी नरेन्द्र मोदी की तरह आरक्षण और दलित विरोधी हैं।

उन्होंने आरोप लगाया, मोदी की तरह केजरीवाल भी झूठे हैं। शायद केजरीवाल पीएम से भी ज्यादा चालाक हैं। भाजपा और आप के लोग खोखली बातें करते हैं, दोनों एक पर एक झूठ बोलते हैं, दोनों आरक्षण और दलित विरोधी हैं, दोनों बहुजन भागीदारी नहीं चाहते हैं और दोनों सत्ता की शक्ति बस अपने हाथों में रखना चाहते हैं।

आप घोटालों से दम तोड़ रही: राजनाथ

विश्वास नगर में भाजपा प्रत्याशी के समर्थन में गृहमंत्री राजनाथ सिंह ने किया प्रचार।

नई दिल्ली। केन्द्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने आम आदमी पार्टी पर जमकर हमला बोला। उन्होंने कहा कि जनलोकपाल के मुद्दे पर आम आदमी पार्टी सत्ता में आई थी और आज खुद घोटालों में फंस कर आप सरकार दम तोड़ रही है। ऐसा कोई सगा नहीं जिसको आप-दा ने ठगा नहीं।

यमुना नदी में जहर मिलाने के केजरीवाल के कथित बयान को आड़े हाथों लेते हुए सिंह ने कहा कि भाजपा सरकार ने रेगिस्तान और पहाड़ों तक पानी मुहैया कराने का काम किया लेकिन राष्ट्रीय राजधानी में आप-दा सरकार पानी तक मुहैया नहीं करा पा रही है। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि जिस संवैधानिक व्यवस्था के दम पर देश चलता है, उसका भी मजाक उड़ाने से पीछे नहीं हटे आप संयोजक केजरीवाल। राजनाथ सिंह ने बृहस्पतिवार को दिल्ली कैंट में भाजपा प्रत्याशी भुवन तंवर और विश्वास नगर से पार्टी के उम्मीदवार ओम प्रकाश शर्मा के समर्थन में दो जनसभाओं को संबोधित करते हुए कहा कि राजनेताओं की कथनी और करनी में अंतर होने के कारण जनता के विश्वास का संकट पैदा हुआ और उस संकट को अगर किसी ने चुनौती के रुप में लिया तो वह अकेले भारतीय जनता पार्टी ने स्वीकार हैं। भाजपा ऐसी राजनीतिक पार्टी है जो कहती है उसे करती है। कोई भी एक उदाहरण ऐसा बता दें कि जो हमने कहा उसे पूरा नहीं किया हो तो वह खुद माफी मांगेंगे।

केजरीवाल मानसिक संतुलन खो बैठे हैं : मुख्यमंत्री हिमंता

नई दिल्ली। असम के मुख्यमंत्री हिमंता बिस्वा सरमा ने गुरुवार को दावा किया कि आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने समाजसेवी अन्ना हजारे को धोखा देने के बाद से अपना मानसिक संतुलन खो दिया है। उन्होंने आरोप लगाया कि तिहाड़ जेल में रहने के दौरान केजरीवाल में आपराधिक मानसिकता विकसित हो गई।

करावल नगर में भाजपा उम्मीदवार कपिल शर्मा और अजय महावर के समर्थन में घोंडा के समर्थन में जनसभा को संबोधित करते हुए सरमा ने कहा कि केजरीवाल मौलानाओं को पैसे देने का वादा कर रहे हैं, जबकि भाजपा अल्पसंख्यकों सहित हर भारतीय का उत्थान करने और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने की कोशिश कर रही है।

करावल नगर पहुंचे असम के सीएम हिमंता व साथ में कपिल।

मालीवाल ने केजरीवाल के आवास के बाहर कूड़ा फेंका

विकासपुरी में सड़कों से कूड़ा उठा मिनी ट्रक में भरकर फिरोजशाह रोड पहुंची गई थी

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

आम आदमी पार्टी की राज्यसभा सदस्य स्वाति मालीवाल ने बृहस्पतिवार को पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के घर के बाहर विरोध स्वरूप कूड़ा फेंका जिसके बाद पुलिस ने उन्हें हिरासत में ले लिया। मालीवाल और उनके सहयोगियों ने विकासपुरी में सड़कों से कूड़ा उठाया, उसे तीन मिनी ट्रकों में भरा और फिरोजशाह रोड पर केजरीवाल के घर पहुंचे। उन्होंने वहां जमीन पर कूड़ा फेंका, जिसके बाद महिला पुलिसकर्मियों ने उन्हें रोका और वहां से हटा दिया। केजरीवाल के पांच फिरोजशाह रोड स्थित आवास के पास सैकड़ों महिलाएं हाथों में तख्तियां लिए देखी गईं, जिन पर लिखा था, मुस्कुराइए, आप दिल्ली में हैं। मालीवाल कचरा उठाने वाले तीन ट्रक में से एक में सवार होकर वहां पहुंचीं। इससे पहले उन्होंने सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक वीडियो साझा किया था जिसमें वह और अन्य लोग विकासपुरी से कूड़ा इकट्ठा करते दिख रहे हैं। उन्होंने पोस्ट में लिखा, विकासपुरी में वर्षों से सड़कों पर कूड़े के ढेर लगे हुए हैं। लोग बहुत गुस्से में हैं। वे यह सारा कूड़ा इकट्ठा करके केजरीवाल के घर पर फेंकने जा रहे हैं। उन्होंने कहा, पूरी दिल्ली की हालत खराब हो गई है। दिल्ली वाले रोज जो गंदगी और बदबू झेलते हैं, आज वही केजरीवाल को झेलना पड़ेगा जनता आ रही है, केजरीवाल जी, डरो मत। घटना के मद्देनजर केजरीवाल के आवास के बाहर सुरक्षा बढ़ा दी गई। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने कहा, हमने कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए अवरोधक लगा दिए हैं और अतिरिक्त पुलिसकर्मियों को तैनात किया है।

युवाओं के बिना संभव नहीं है विकसित भारत: जयशंकर

विदेश मंत्री ने डीयू के हंसराज कॉलेज में किया युवाओं से संवाद

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

हंसराज कॉलेज में छात्रों के साथ संवाद करते विदेश मंत्री जयशंकर व अन्य।

भारत के विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर ने कहा कि विकसित भारत के लिए युवाओं की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है, युवाओं के बिना विकसित भारत संभव नहीं है।

विकसित भारत का संकल्प युवाओं के भविष्य से जुड़ा हुआ है और इसकी सिद्धि के लिए उनकी सक्रिय भूमिका अनिवार्य है। डॉ. एस. जयशंकर हंसराज कॉलेज में 'विकसित भारत के लिए युवा' विषय पर आयोजित एक इंटरेक्शन कार्यक्रम में युवाओं से संवाद कर रहे थे। डीयू कुलपति प्रो. योगेश सिंह ने डॉ. एस. जयशंकर का स्वागत करते हुए कहा कि डॉ. जयशंकर दिल्ली विश्वविद्यालय के सम्मानित पूर्व विद्यार्थी हैं। ऐसे कर्मयोगी पर डीयू को गर्व है। जयशंकर ने विकसित भारत में युवाओं की भूमिका पर डोर देते हुए कहा कि तकनीक आधारित इस युग में युवा ही तकनीक के सर्वाधिक करीब हैं । विदेश मंत्री ने कहा कि दिल्ली देश की राजधानी है और दुनिया भर से आने वाले लोग दिल्ली को देखकर भारत के सम्बन्ध में अपनी राय बनाते हैं, इसलिए विकसित भारत हेतु विकसित दिल्ली आवश्यक है। दिल्ली में लोगों को जरूरी सुविधाएं मिले, अधिक से अधिक कॉलेज हों, अच्छी सड़कें हों, पानी उपलब्ध हो और एक आदर्श शहर के रूप में यह विकसित हो इस दिशा में काम करना बेहद आवश्यक है। कुलपति प्रो. योगेश सिंह ने अपने विश्वविद्यालय के पूर्व विद्यार्थी विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर का स्वागत करते हुए कहा कि कुलपति ने विद्यार्थियों से विकसित भारत के संकल्प को साकार करने में अपनी भूमिका निभाने का भी आह्वान किया।

युवाओं से चर्चा कार्यक्रम में संवादी के रूप में एसओएल की निदेशक प्रो. पायल मागो ने विदेश मंत्री के दिल्ली विश्वविद्यालय में विद्यार्थी जीवन के उनके अनुभव, उनकी सोच, युवाओं को सन्देश, देश की सोच को दिशा देने में उनकी भूमिका आदि से संबंधित अनेक बिंदुओं पर विस्तार से चर्चा करते हुए अनेक रोचक और महत्वपूर्ण प्रश्नों के साथ चर्चा को आगे बढ़ाया।

उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दृष्टिकोण, विकसित भारत और युवा से सम्बंधित विभिन्न बिंदु पर भी चर्चा की। विद्यार्थियों के साथ प्रश्नों की कड़ी में विदेश मंत्री ने खुलकर सबके प्रश्नों के उत्तर दिये।

कार्यक्रम के दौरान कुलपति प्रो. योगेश सिंह, डीन ऑफ कॉलेजे प्रो. बलराम पाणी, दक्षिणी परिसर के निदेशक प्रो. श्री प्रकाश सिंह, डीयू एसओएल की निदेशक प्रो. पायल मागो उप प्राचार्या प्रो. विजय रानी राजपाल एवं कार्यक्रम संयोजिका अलका कक्कड सहित अनेकों शिक्षक और विद्यार्थी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन एसोसिएट प्रोफेसर माधवी मोनी ने किया।

चोरी के 200 मोबाइल फोन जब्त, एक गिरफ्तार

नई दिल्ली। वजीराबाद इलाके में एक व्यक्ति को गिरफ्तार कर उसके कब्जे से करीब दो करोड़ रुपए मूल्य के चोरी के 200 मोबाइल फोन बरामद किए गए हैं। उसने बताया कि अपराध शाखा की टीम ने वजीराबाद इलाके में चोरी के मोबाइल फोन की खेप पकड़ी। इन मोबाइल फोन को तस्करी के जरिए नेपाल, बांग्लादेश और श्रीलंका भेजा जाना था। उसने बताया कि इन मामले में मनीष यादव नामक एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया गया है। बरामद मोबाइल फोन में 39 एप्पल आईफोन, 52 सैमसंग, 45 वनप्लस, 12 गूगल पिक्सल फोन, 28 ओप्पो और 19 वीवो स्मार्टफोन शामिल हैं। इनमें से 18 फोन शहर के विभिन्न थानों में दर्ज प्राथमिकी से जुड़े हैं। पुलिस ने बताया कि शेष मोबाइल फोन के मालिकों की पहचान करने के प्रयास किए जा रहे हैं।

मतदान के दिन सभी 700 बाजार बंद रहेंगे : सीटीआई

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

चैंबर ऑफ ट्रेड एंड इंडस्ट्री ने बृहस्पतिवार को कहा कि विधानसभा चुनाव मतदान के दिन पांच फरवरी को राष्ट्रीय राजधानी में सभी 700 बाजार बंद रहेंगे।

सीटीआई के अध्यक्ष बृजेश गोयल ने कहा कि व्यापारियों को चुनाव आयोग और श्रम विभाग के आदेशों का अनुपालन सुनिश्चित करना चाहिए। सीटीआई अध्यक्ष ने कहा कि कुछ मामलों में खुदरा क्षेत्र के दुकानदार मतदान करने के बाद शाम को अपनी दुकानें खोल सकते हैं। हालांकि, गोयल ने कहा कि यदि कोई दुकान या कारखाना खोला जाता है तो कर्मचारियों को सवेतन अवकाश दिया जाना चाहिए और वेतन में कोई कटौती नहीं की जानी चाहिए। सीटीआई ने सभी बाजार संघों और व्यावसायिक प्रतिष्ठानों को पांच फरवरी को अपनी दुकानें बंद रखने का निर्देश दिया। औद्योगिक क्षेत्रों में भी अवकाश रहेगा। सीटीआई महासचिव गुरमीत अरोड़ा ने इस बात पर जोर दिया कि दिल्ली सरकार ने पहले ही निर्देश जारी कर दिया है कि दुकानों, होटल, रेस्तरां, रिसॉर्ट और औद्योगिक इकाइयों सहित सभी व्यावसायिक प्रतिष्ठानों को मतदान के दिन कर्मचारियों को बिना किसी वेतन कटौती के छुट्टी देनी होगी। श्रम विभाग ने एक आदेश भी जारी किया है, जिसमें यह सुनिश्चित किया गया है कि किसी भी पेशे, व्यापार या औद्योगिक उपक्रम में लगे प्रत्एक कर्मचारी को मतदान के लिए अवकाश का अधिकार है।

महाकुंभ हादसे ने छीनीं अमित के घर की खुशियां

संगम से नहाकर वापस लौटने के दौरान भीड़ में कुचला गया फरीदाबाद का इंजीनियर, शव घर पहुंचा तो मच गया कोहराम

- चार मासूमों का पिता थे अमित, एक साल के बेटे ने चिता को दी आग
- आठ सदस्यों के परिवार में इकलौता कमाने वाले थे अभियंता अमित

पायनियर समाचार सेवा। फरीदाबाद

संजय कॉलोनी सेक्टर 23 निवासी अमित की महाकुंभ भगदड़ में मौत हो गई। गुरुवार को उनका शव उनके घर पहुंचा, जहां परिजनों ने उनका अंतिम संस्कार किया। अमित की चिता को उनके एक साल के बेटे ने आग दी।

34 साल का अमित अपने परिवार का एकमात्र सहारा था। मूल रूप से वह यूपी फिरोजाबाद के बगई गांव का रहने वाला था। पिछले काफी सालों से अपने परिवार के साथ फरीदाबाद की संजय कॉलोनी में रह रहा था। अमित के परिवार में वृद्ध माता, पत्नी, बहन और उसके चार छोटे बच्चे है। 2016 में उसकी शादी यूपी के रहने वाली फिरोजाबाद की पूजा (30) के साथ हुई थी। अमित के चार बच्चों में बेटी काव्या (6), नीति (4), मन्नत (3), बेटा रुद्राक्ष (1) शामिल है। जबकि उसकी बहन मंशा 22 साल की है।

2016 में हुआ था आर्मी में भर्ती अमित ने 2016 में आर्मी में मिलिट्री इंजीनियरिंग सर्विस के तहत लिफ्ट मैकेनिक ज्वाइन किया, जिसके बाद 2017 में उनकी पोस्टिंग दिल्ली कैंट में लिफ्ट मैकेनिक के पद पर हो गई। 2018 में उनके पिता का निधन हो गया। 25 जनवरी की दोपहर को अमित अपनी पत्नी पूजा, बच्चों और अपनी मां सरिता देवी के साथ गंगा स्नान के लिए फरीदाबाद से प्रयागराज के लिए रवाना हुआ था। रात के 2 बजे वह अपने परिवार के साथ महाकुंभ मेले में पहुंच गया था। अमित अपने परिवार के साथ संगम घाट पर ठहरा था, 29 जनवरी की सुबह करीब 1 बजे वह अपनी मां सरिता देवी के साथ घाट पर स्नान करने के लिए चला गया। अमित की पत्नी और बच्चे घाट पर तंबू के अंदर ही सोए हुए थे। घाट पर जब वह नहाकर वापस आ रहा था तो अचानक से भगदड़ मच गई। अमित की मां को मौके पर मौजूद पुलिस के जवानों ने सुरक्षित बाहर निकाल लिया, लेकिन अमित की इस भगदड़ में दबकर मौत हो गई। पुलिस ने अस्पताल पहुंचाया अमित को पुलिस के जवानों ने उसे अस्पताल भिजवाया, लेकिन तब तक उसकी मौत हो चुकी थी। अस्पताल पहुंचने पर डॉक्टरों ने उसको मृत घोषित कर दिया।

दो को विश्व आर्द्रभूमि दिवस मनाएगा वन विभाग

गुरुग्राम। जिला के गांव सुल्तानपुर स्थित राष्ट्रीय पक्षी विहार में दो फरवरी रविवार को विश्व आर्द्रभूमि दिवस के उपलक्ष्य में राज्य स्तरीय कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। जैव विविधता बोर्ड तथा वन विभाग के सहयोग से आयोजित किए जा रहे इस कार्यक्रम में आम जन को जलीय भूमि संरक्षित रखने के लिए प्रेरित किया जाएगा। जिला वन अधिकारी राजकुमार ने गुरुवार को बताया कि वन, वन्यजीव एवं पर्यावरण मंत्री राव नरबीर सिंह के मार्गदर्शन में वन विभाग की ओर से वन्य जीवों को संरक्षित रखने और प्राकृतिक संपदा को बचा कर रखने के लिए विभिन्न कार्यक्रमों की शुरुआत की गई है। इसी कड़ी में शुक्रवार को नौवीं से बारहवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों के बीच पर्यावरण संरक्षण को लेकर सुल्तानपुर राष्ट्रीय पक्षी विहार में एक चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है।

इस प्रतियोगिता में राजकीय व निजी विद्यालयों के करीब 150 छात्र-छात्राएं भाग लेंगे। राजकुमार ने बताया कि दो फरवरी रविवार को राज्य स्तरीय आर्द्रभूमि दिवस कार्यक्रम में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया जाएगा। उन्होंने बताया कि वन विभाग के प्रधान मुख्य वन संरक्षक विनीत कुमार गर्ग, जैव विविधता बोर्ड के पदाधिकारी सहित अन्य उच्चाधिकारी राज्य स्तरीय कार्यक्रम में मौजूद रहेंगे।

हर गांव में चलाया जा रहा स्वच्छता अभियान

गुरुग्राम। आयुक्त रेनू सोगन के निर्देशानुसार नगर निगम क्षेत्र को स्वच्छ बनाने के लिए नगर निगम की स्वच्छता शाखा प्रत्येक गांवों में विशेष स्वच्छता अभियान चला रही है। गुरुवार को गांव बामडौली में अभियान चलाकर गांव की गलियां, नालियां और झाड़ियों को साफ किया गया। नगर निगम के सेनेटरी ऑफिसर एमएस सोढ़ी ने गुरुवार को बताया कि निगम क्षेत्र के प्रत्येक गांव को विशेष अभियान के तहत साफ किया जा रहा है। शुक्रवार, शनिवार को गांव बढ़ा, सोमवार को गांव सिंकदरपुर, मंगलवार को गांव नवादा, बुधवार को गांव रामपुरा, गुरुवार को गांव नखड़ौला, शुक्रवार को गांव ढाणा, शनिवार को गांव बांस हरिया, उसके बाद फरवरी महीने के दूसरे सप्ताह के सोमवार को गांव बांस कुसला, मंगलवार को गांव खोह, बुधवार को गांव मानेसर, गुरुवार को गांव कासन, शुक्रवार को गांव सहरावन, शनिवार को गांव नैनवाल, फाजलवास और कुकडौला में अभियान चलाया जाएगा।

समय से चालान न भरने वाले वाहन चालकों पर कसा शिकंजा

- अगर 90 दिन के भीतर चालान नहीं भरा तो जहां दिखे वहीं रोक लेगी यातायात पुलिस

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

अगर आपने किसी भी तरह से यातायात के नियमों को तोड़ा है और पुलिस द्वारा आपका चालान काटे जाने के बाद आपने चालान भरने में लापरवाही की तो खैर नहीं होगी। अब अगर 90 दिन के भीतर चालान का भुगतान नहीं किया तो पुलिस आपके वाहन को जहां दिखे वहीं (डिटेन करेगी) रोक लेगी।

पुलिस उपायुक्त यातायात विरेंद्र विज ने यातायात में तैनात सभी यातायात निरीक्षकों, यातायात जोनल अधिकारियों को दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि सभी अधिकारी अपने-अपने क्षेत्राधिकार में लोगों को जागरुक करें जिस भी वाहन चालक का नियमों की अवहेलना करने पर चालान किए गए हैं, उन चालानों का भुगतान 90 दिनों के अंदर-अंदर करना जरूरी है। ऐसा न करने वाले वाहन चालकों के दोबारा वाहन चैकिंग के दौरान यदि 90 दिनों की समय अवधि के बाद भी चालान का भुगतान बकाया मिलता है तो उस वाहन को डिटेन किया जाएगा। उन्होंने कहा कि पिछले सभी बकाया चालानों के भुगतान की अंतिम तारीख 10 फरवरी 2025 निर्धारित की गई है। इस तारीख से पहले अपने बकाया चालानों का भुगतान अवश्य कर लें। सभी वाहन चालक अपने-अपने वाहनों का चालान जारी होने की तिथि के 90 दिनों के अंदर अंदर भुगतान करें और अनावश्यक पुलिस कार्यवाही से बचें।

राष्ट्रपिता की पुण्यतिथि पर अर्पित किए श्रद्धासुमन

- कांग्रेस भवन में दी गई महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

गुरुग्राम के कांग्रेस भवन में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की पुण्यतिथि पर श्रद्धासुमन अर्पित करते कांग्रेस नेता।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की पुण्यतिथि पर गुरुवार को यहां कमान सराय स्थित कांग्रेस भवन में उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित किए गए। कांग्रेस कार्यकर्ताओं, नेताओं ने एकजुट होकर राष्ट्रपिता की तस्वीर के समक्ष पुष्पांजलि करते हुए उन्हें नमन किया।

इस अवसर पर वरिष्ठ नेता पंकज डावर, पर्ल चौधरी, जगमोहन, सूबे सिंह यादव एडवोकेट, सुनील प्रकाश, राम किशन सेन, कुलदीप सिंह मोलाहेड़ा, रमन वर्मा, राजेश यादव, सूबे सिंह बहलपा, हरकेश प्रधान, मोहिंद्र सिंह, खेतम चंद किराड़, ओमप्रकाश खरेरा, मनोज आहुजा, अनिल, राजेश चेयरमैन, बीर सिंह नंबरदार, रविंद्र, सुभाष नंबरदार मंडावर, अनिल कुमार, अशोक रोहिल्ला, मोहन लाल सैनी, पंकज भारद्वाज, दीप भारद्वाज, हबीर्रहमान, राजेश आदि नेताओं, कार्यकर्ताओं ने राष्ट्रपिता को पुष्पांजलि देते हुए उनका स्मरण किया।

अपने संबोधन में वरिष्ठ नेता पंकज डावर ने कहा कि आजादी के आंदोलन के वे महान नेता था। अहिंसा के रास्ते पर चलते हुए उन्होंने देश को आजादी दिलाने में अपनी अहम भूमिका निभाई।

बापू ने आजादी की लड़ाई में भारतीयों को एकजुट किया। भारत में प्रारंभिक शिक्षा पूरी करने के बाद वह इंग्लैंड गए, लेकिन बाद में वापस भारत आ गए। राष्ट्रपिता ने दक्षिण अफ्रीका की यात्रा की और वहां अप्रवासी अधिकारों की रक्षा के लिए सत्याग्रह किया। पंकज डावर ने कहा कि आजादी के लिए गांधी जी ने कई आंदोलन किए। इसमें सत्याग्रह और खिलाफत आंदोलन, नमक सत्याग्रह, डांडी यात्रा आंदोलन काफी प्रसिद्ध हुए। राष्ट्रपिता को श्रद्धांजलि देते हुए पीसीसी सदस्य पंकज भारद्वाज ने कहा कि गांधी जी ने देश की आजादी की लड़ाई में अहिंसा की सिद्धांत अपनाया।

हाईवे पर अज्ञात वाहन की टक्कर से युवक की मौत

- आरोपी वाहन चालक की तलाश में जुटी पुलिस

पायनियर समाचार सेवा। पलवल

नेशनल हाईवे-19 पर बंचारी गांव के निकट अज्ञात वाहन ने जिला मथुरा (यूपी) से बाइक पर सवार होकर आईएमटी मानेसर जा रहे युवक को टक्कर मार दी। टक्कर लगने से सड़क पर गिरने के कारण युवक की मौत हो गई। पुलिस ने मृतक के दोस्त की शिकायत पर अज्ञात वाहन चालक के खिलाफ केस दर्ज कर आरोपी चालक की तलाश शुरू कर दी है।

मुंडकटी थाना प्रभारी रेणू शेखावत के अनुसार, जिला अलवर (राजस्थान) के भिवाड़ी निवासी आनंद कुमार ने शिकायत में कहा कि वह किसी काम से अपनी गाड़ी से नेशनल हाईवे-19 पर वृंदावन से पलवल की तरफ आ रहा था। जब उसकी गाड़ी नेशनल हाईवे-19 पर बंचारी गांव के पास पहुंची तो वहां उसके साथी गौंडा (यूपी) के कटरा बाजार निवासी ज्ञानेंद्र जो मथुरा यूपी से अपनी बाइक पर आईएमटी मानेसर जा रहा था वाहन की चपेट में आ गया। गंभीर रुप से घायल ज्ञानेंद्र को उसने तुरंत एम्बुलेंस से उपचार के लिए दिल्ली सफदरजंग अस्पताल पहुंचाया। सफदरजंग अस्पताल में उपचार के दौरान ज्ञानेंद्र की मौत हो गई। सूचना पर मुंडकटी थाना पुलिस दिल्ली सफदरजंग अस्पताल पहुंच गई और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के बाद उसके परिजनों को सौंप दिया। पुलिस का कहना है कि दुर्घटना को अंजाम देने वाले वाहन व उसके चालक की तलाश की जा रही है।

संक्षिप्त समाचार

वाहन चालकों को जागरुक करती पुलिस व हाइवे की टीम।

एनएच-19 पर चलाया सड़क सुरक्षा जागरूकता अभियान

पलवल। दिल्ली आगरा टोल रोड एनएच 19 पर पुलिस व हाइवे की टीम ने सयुक्त अभियान के दौरान सड़क सुरक्षा के महत्व को समझाते हुए वाहन चालकों को यातायात नियमों का पालन करने के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर गाड़ियों पर रिफ्लेक्टिव टेप लगाकर उनकी दृश्यता बढ़ाने का कार्य किया गया, जिससे रात के समय दुर्घटनाओं को कम किया जा सके। अभियान में हाईवे टीम, एसएचओ ट्रैफिक पलवल जितेंद्र कुमार, हवलदार पवन, और कोटवन चौकी इंचार्ज पवन पोनिया ने अहम भूमिका निभाते हुए यातायात नियमों के बारे में जानकारी दी। प्लाजा प्रबंधक सनी पंवार ने हाईवे पर कार्यरत कर्मचारियों और वाहन चालकों को सड़क सुरक्षा से जुड़े नियमों के बारे में बताते हुए कहा कि राष्ट्रीय राजमार्गों पर लगे साइन-बोर्ड, ट्रैफिक लाइट और सूचना संकेतकों का सही उपयोग यातायात प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इंसीडेंट मैनेजर राजकुमार ने कहा कि इंसान की जान बेहद कीमती है, जिसे। यातायात नियमों का पालन करते हुए बचाया जा सकता वे। उन्होंने हेलमेट और सीट बेल्ट के उपयोग, धीमी गति से वाहन चलाने और ट्रैफिक नियमों के पालन पर जोर दिया। उन्होंने सभी वाहन चालकों को गलत दिशा में वाहन न चलाने की सलाह दी और हाईवे पर लगे सूचना बोर्डों के महत्व को समझाया। सेफ्टी मैनेजर अमितपाल, हाईवे इंजीनियर विनय शर्मा, परवेंद्र चौहान और पवन दलाल ने इस अभियान का नेतृत्व किया।

एक्सक्लूसिव आउटलेट में मिलेंगे सभी सॉल्यूशन

गुरुग्राम। भारत के एक्टिव इनग्रेडिएंट स्किनकेयर ब्रांड 'द डर्मा को' ने गुरुग्राम के एयरिया मॉल में पहला एक्सक्लूसिव ब्रांड आउटलेट लॉन्च किया है। होनासा कंज्यूमर लिमिटेड पोर्टफोलियो के ब्रांड स्टोर में त्वचा रोग विशेषज्ञों द्वारा डिजाइन किए हुए और विज्ञान आधारित स्किनकेयर सॉल्यूशंस प्रदान किया जाएगा। जनवरी, 2020 में लॉन्च किया गया ब्रांड द डर्मा को. भारतीय स्किनकेयर मार्केट में एक्टिव इनग्रेडिएंट्स आधारित उत्पाद पेश करने में अग्रणी रहा है। इसके पोर्टफोलियो में उत्पादों की बड़ी रेंज है, जिनसे मुंहासे, पिग्मेंटेशन, एजिंग और बाल झड़ने जैसी कई त्वचा एवं बालों संबंधी समस्याओं का समाधान होता है। इस मौके पर होनासा कंज्यूमर लिमिटेड के सीईओ और सह-संस्थापक वरुण अलघ ने कहा, 'द डर्मा को' के पहले एक्सक्लूसिव ब्रांड आउटलेट की लॉन्चिंग विज्ञान आधारित स्किनकेयर सॉल्यूशंस के निर्माण की हमारी पांच साल की यात्रा में एक गौरवपूर्ण पल है।

मानेसर निगम क्षेत्र के प्रत्येक गांव में चल रहा सफाई अभियान

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

आयुक्त रेनू सोगन के निर्देशानुसार नगर निगम क्षेत्र को स्वच्छ बनाने के लिए नगर निगम की स्वच्छता शाखा प्रत्येक गांवों में विशेष स्वच्छता अभियान चला रही है। गुरुवार को गांव बामडौली में अभियान चलाकर गांव की गलियां, नालियां और झाड़ि?ों को साफ किया गया।

नगर निगम के सेनेटरी ऑफिसर एमएस सोढ़ी ने गुरुवार को बताया कि निगम क्षेत्र के प्रत्येक गांव को विशेष अभियान के तहत साफ किया जा रहा है। शुक्रवार, शनिवार को गांव बढ़ा, सोमवार को गांव सिंकदरपुर, मंगलवार को गांव नवादा, बुधवार को गांव रामपुरा, गुरुवार को गांव नखड़ौला, शुक्रवार को गांव ढाणा, शनिवार को गांव बांस हरिया, उसके बाद फरवरी महीने के दूसरे सप्ताह के सोमवार को गांव बांस कुसला, मंगलवार को गांव खोह, बुधवार को गांव मानेसर, गुरुवार को गांव कासन, शुक्रवार को गांव सहरावन, शनिवार को गांव नैनवाल, फाजलवास और कुकडौला में सफाई अभियान चलाया जाएगा।

सोढ़ी ने बताया कि इस दौरान सफाई कर्मचारियों के पास सभी संसाधन होंगे। प्रत्येक गांव को पूरी तरह से स्वच्छ किया जाएगा।

शहर हमारा, इसे साफ रखने की जिम्मेदारी भी हमारी: सिंह

- बीडब्ल्यूजी मॉनिटरिंग सेल के सदस्यों के साथ आयोजित बैठक में बोले अतिरिक्त निगमायुक्त

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

बीडब्ल्यूजी मॉनिटरिंग सेल के सदस्यों के साथ बैठक करते डा. बलप्रीत सिंह।

नगर निगम के अतिरिक्त निगमायुक्त डा. बलप्रीत सिंह ने गुरुवार को बीडब्ल्यूजी (बल्क वेस्ट जनरेटर) के ठोस कचरा प्रबंधन नियमों की कड़ाई से पालना सुनिश्चित करने की आवश्यकता पर जोर दिया।

डा. सिंह ने बीडब्ल्यूजी मॉनिटरिंग सेल के सदस्यों के साथ आयोजित एक बैठक में कहा कि नियमों का पालन न करने वाले बीडब्ल्यूजी पर चालान की प्रक्रिया को तेज किया जाए।

अतिरिक्त निगमायुक्त ने यह भी कहा कि ठोस कचरा प्रबंधन नियम-2016 के तहत नगर निगम गुरुग्राम सीमा में स्थित बल्क वेस्ट जनरेटर को अपने परिसर में कचरा प्रबंधन करना अनिवार्य है। यदि बीडब्ल्यूजी इस नियम का पालन नहीं करते हैं, तो उन पर 25,000 रुपये का जुर्माना लगाया जा सकता है। अतिरिक्त निगमायुक्त ने मॉनिटरिंग सेल के सदस्यों को निर्देश दिया कि वे बिना किसी भय या दबाव के प्रभावी कार्रवाई जारी रखें।

अतिरिक्त निगमायुक्त ने शिविर में सुनी शिकायतें

निगम कार्यालय में आयोजित समाधान शिविर में तीन शिकायतकर्ताओं ने समस्याएं रखीं। आरडब्ल्यूए सेक्टर-57 और ब्लैक बेरी वेलफेयर एसोसिएशन सुशांत लोक-1 के प्रतिनिधियों ने सफाई व्यवस्था में सुधार की मांग की। शांति नगर निवासी सेवानिवृत्त कमांडेंट रोहताश कुमार गुप्ता ने सड़क और सीवर की समस्या के समाधान की अपील की। डा. सिंह ने अधिकारियों को तत्काल कार्रवाई करने के लिए निर्देशित किया।

डीसी ने गुरुग्राम के अंतिम गांव मऊ से शुरू किया रात्रि ठहराव

- प्रभावी शासन को ग्रामीण लोगों के करीब लाना ही मुख्य उद्देश्य
- नुक्कड़ नाटक के माध्यम से ग्रामीणों को सड़क सुरक्षा के उपायों के प्रति किया जागरुक

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

मऊ में रात्रि ठहराव कार्यक्रम में खिलाड़ियों को सम्मानित करते डीसी अजय कुमार।

अंत्योदय उत्थान लक्ष्य के साथ हरियाणा सरकार द्वारा चलाई जा रही जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ तय समय मे मिलें व उनकी शिकायतों का प्राथमिकता के साथ निवारण किया जा सके इन्हीं उद्देश्य के साथ बुधवार को गुरुग्राम में पटौदी ब्लॉक के अंतिम गांव मऊ में जिला प्रशासन द्वारा रात्रि ठहराव कार्यक्रम का आयोजन किया।

इस कार्यक्रम में डीसी अजय कुमार व डीसीपी दीपक कुमार ने विभिन्न विभागों के प्रशासनिक अधिकारियों के साथ ग्रामीणों से सीधा संवाद कर उनकी समस्याएं सुन मौके पर समाधान किया। गांव मऊ में पहुंचने पर डीसी अजय कुमार का ग्रामीणों ने पगड़ी व फूमालाओं के साथ भव्य स्वागत किया। ग्रामीणों से रूबरू होते हुए डीसी अजय कुमार ने कहा कि हरियाणा सरकार के सुशासन के उद्धेश्य में रात्रि ठहराव कार्यक्रम महत्वपूर्ण कड़ी है। उन्होंने कहा कि अंत्योदय उत्थान के ध्येय में यह एक परिवर्तनकारी प्रयास है जिसका उद्देश्य प्रभावी शासन को ग्रामीण लोगों के करीब लाना है। यही लोकतंत्र की सही परिभाषा है जहां जनता और शासन एक दूसरे के समानांतर दिखाई दे।

पूर्व रणजी खिलाड़ी का निधन

पायनियर समाचार सेवा। फरीदाबाद

संजय स्वामी, पूर्व रणजी खिलाड़ी।

पूर्व रणजी खिलाड़ी संजय स्वामी की लम्बी बीमारी के बाद बृहस्पतिवार को निधन हो गया। स्वामी 58 वर्ष के थे तथा अपने पीछे पत्नी, पुत्र व पुत्री सहित भरा-पूरा परिवार छोड़ गए।

स्वामी की अंतिम यात्रा उनके निवास से सैक्टर-22 स्थित शमशान भूमि पहुंची। यहां उनके पुत्र जुबिन स्वामी ने उन्हें मुखाग्नि दी। उनके निधन पर केन्द्रीय मंत्री कृष्णपाल गुर्जर, मंत्री विपुल गोयल, राजेश नागर, विधायक धनेश अदलक्खा, पं.मूलचंद शर्मा, सतीश फागना, पूर्व मंत्री सीमा त्रिखा, पूर्व विधायक शारद राठौर, नीरज शर्मा, पूर्व पार्षद जयवीर खटाना, राजेन्द्र भामला, पूर्व खेल निदेशक सरकार तलवार, क्रिकेटर व कोच विजय यादव, पूर्व क्रिकेटर संजय भाटिया, धर्मेन्द्र फागना, यशपाल शर्मा, डा. नरेन्द्र अग्रवाल, राजीव शर्मा, दिपांशु अरोड़ा, ज्ञानेन्द्र भारद्वाज, प्रवीन दत्त शर्मा सहित आदि लोगों ने शोक जताया।

बाल विवाह रोकने को आमजन आगे आएं: मंजू बिष्ट

- जिला विधिक सेवा प्राधिकरण ने आयोजित किया जागरुकता कार्यक्रम

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

बाल विवाह के प्रति जागरुक करतीं शक्ति वाहिनी संस्था की सदस्य।

बाल विवाह मुक्त भारत बनाने के लिए चलाए अभियान के अंतर्गत गांव चौमा में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण ने शक्ति वाहिनी संस्था के सहयोग से एक जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन किया। जिसमें एक हजार से अधिक नागरिक उपस्थित रहे।

जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव एवं सीजेएम रमेशचंद्र ने बताया कि इस कार्यक्रम में महिलाओं, पुरुषों और बच्चों को बाल विवाह की हानि और इससे बचाव के उपायों के बारे में बताया गया। शक्ति वाहिनी संस्था की कार्यकर्ता मंजू बिष्ट व आंगनबाड़ी वर्कर बबीता ने बाल विवाह से होने वाले दुष्प्रभावों पर प्रकाश डाला।

एचपीएल फाउंडेशन ने बांटे स्वेटर

पायनियर समाचार सेवा। फरीदाबाद

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, ऊंचागांव, बल्लभगढ़ में एच पी एल फाउंडेशन द्वारा 1350 विद्यार्थियों को नि:शुल्क स्वेटर वितरित किए गए। इस अवसर पर फाउंडेशन की ओर से प्रियंका शर्मा व हितेश धवन विशेष रूप से उपस्थित रहीं।

विद्यालय के प्रधानाचार्य जयप्रकाश डांगी ने कार्यक्रम के सफल आयोजन हेतु अध्यापक देवेंद्र गौड़ व एचपीएल फाउंडेशन का हृदय से आभार व्यक्त किया। एचपीएल फाउंडेशन की प्रतिनिधि प्रियंका शर्मा ने कहा कि हमारा उद्देश्य केवल सामग्री वितरण तक सीमित नहीं है, बल्कि बच्चों के सर्वांगीण विकास में योगदान देना है। अध्यापक देवेंद्र गौड़ ने बताया कि विद्यालय परिवार ने एचपीएल फाउंडेशन द्वारा पूर्व में किए गए कार्यों विद्यार्थियों को बैग वितरण, वॉशरूम निर्माण तथा आरओ प्लांट स्थापना की भी प्रशंसा की। इस अवसर पर शिक्षकगण विजयपाल अत्री, पूजा गोयल, उषा शर्मा, ज्योति, सुरेश शास्त्री, जयपाल, विवेक रतन गौड़, मनोज गौड़,जतिन, कमलेश, प्रवीण कौशिक, नरेश, अंजली शर्मा,मधु सैनी, हेमंत, चंद्रप्रकाश, सीमा मलिक उपस्थित रहे।

निवेश को प्रोत्साहन के लिए नीतियां बनेंगी सरल: सीएम

नायब सिंह सैनी ने फरीदाबाद में बजट को लेकर मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर से संबंधित लोगों के साथ की परामर्श बैठक

दयाराम वशिष्ठ। फरीदाबाद

फरीदाबाद विनिर्माण क्षेत्र के प्रतिनिधियों के साथ बजट पूर्व परामर्श बैठक की अध्यक्षता करते मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी, साथ में हैं प्रदेश के मंत्री राव नरबीर सिंह, विपुल गोयल, राजेश नागर व गौरव गौतम।

हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि प्रदेश की आर्थिक उन्नति के लिए औद्योगिक संस्थानों व निवेश को प्रोत्साहन को लेकर नई पहल की जा रही है। बजट पूर्व परामर्श बैठकों में मिले सुझावों के आधार पर नीतियों का भी सरलीकरण किया जाएगा और वें स्वयं हर तीन महीने में उद्यमियों व निवेशकों के हरियाणा उद्यम प्रोत्साहन सेंटर (एचईपीसी) से जुड़े विषयों की समीक्षा करेंगे।

मुख्यमंत्री बृहस्पतिवार को फरीदाबाद में वित्त वर्ष 2025-26 के लिए विनिर्माण क्षेत्र से संबंधित हितधारकों के साथ आयोजित बजट पूर्व परामर्श (प्री बजट कंसल्टेशन) की छठी बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। बैठक में विनिर्माण क्षेत्र से जुड़े विभिन्न संगठनों के प्रतिनिधियों ने आगामी बजट के लिए अपने सुझाव रखें। बैठक में प्रदेश के उद्योग एवं वाणिज्य, पर्यावरण, वन एवं वन्य जीव मंत्री राव नरबीर सिंह, राजस्व एवं आपदा प्रबंधन व शहरी स्थानीय निकाय मंत्री विपुल गोयल, खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति राज्य मंत्री राजेश नागर, खेल राज्य मंत्री गौरव गौतम व पूर्व मंत्री एवं विधायक मूलचंद शर्मा आदि उपस्थित रहे।

सैनी ने बैठक में पहुंचे प्रतिनिधियों के सुझावों को ध्यानपूर्वक सुना और आगामी बजट में आवश्यक विषयों पर विचार करने का आश्वासन भी दिया। उन्होंने बताया कि आगामी बजट में वर्तमान आवश्यकताओं के साथ-साथ दीर्घकालिक लक्ष्यों को पूरा करने के सार्थक प्रयास किए जाएंगे। आगामी बजट हमारी सामूहिक महत्वाकांक्षाओं व प्राथमिकताओं का प्रतिबिंब होगा। आगामी बजट की तैयारियों के लिए यह आवश्यक है कि हम समाज के सभी वर्गों के साथ संवाद करें ताकि हरियाणा के प्रत्येक नागरिक की जरूरतों व सपनों को पूरा करने के लिए आवश्यक सकारात्मक प्रयास किए जा सके।

मुख्यमंत्री ने कहा कि पिछले कुछ वर्षों में हरियाणा ने कृषि, उद्योग, शिक्षा की आधारभूत संरचना व प्रौद्योगिकी सहित विभिन्न क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त करने, औद्योगिक निवेश को प्रोत्साहन देने, युवाओं को कौशल विकास के माध्यम से सशक्त बनाने एवं समाज कल्याण के लिए आप सभी के रचनात्मक सुझावों को प्राथमिकता देते हुए आगामी बजट में उचित प्रतिनिधित्व दिया जाएगा।

बजट को समावेशी बनाने के लिए अलग अलग क्षेत्रों के प्रतिनिधियों के साथ बैठक की गई और उनके सुझाव भी लिए गए हैं। मुख्यमंत्री ने प्रतिनिधियों द्वारा खाद्य संस्करण, पब्लिक ट्रांसपोर्ट को बेहतर बनाने, औद्योगिक क्षेत्रों में सुविधाओं को बढ़ावा देने, लघु उद्योगों को प्रोत्साहन, कौशल विकास, एमएसएमई को प्रोत्साहन, नॉन कन्फर्मिंग एरिया को कन्फर्म करना, इज ऑफ डूइंग बिजनेस व इंडस्ट्रियल पॉलिसी में आवश्यक सुधार को लेकर रखे गए सुझाव पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करने का भी आश्वासन दिया। वित्त, उद्योग एवं वाणिज्य विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव अनुराग रस्तोगी ने कहा कि बजट पूर्व परामर्श बैठक के माध्यम से पूर्व में भी 407 से अधिक सुझाव प्राप्त हुए हैं। इन्हीं सुझावों के आधार पर हरहित स्टोर, ड्रोन टेक्नोलॉजी, स्टेम लेब, सुपर 30 जैसे सफल कार्यक्रम बनाए गए।

हाफ मैराथन के लिए सैनी ने किया पंजीकरण प्रक्रिया का उद्घाटन

- मुख्यमंत्री ने कहा- 9 मार्च की हाफ मैराथन में भागीदार बनें जिलावासी
- नशा मुक्त हरियाणा थीम को लेकर किया जाएगा आयोजन

पायनियर समाचार सेवा। फरीदाबाद

हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने गुरूवार को फरीदाबाद में आगामी 9 मार्च को होने वाली हाफमैराथन-2.0 की रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया का शुभारंभ किया। हाफ मैराथन-2.0 में प्रतिभागी बनने के लिए सबसे पहले मुख्यमंत्री ने ऑन लाइन प्रक्रिया से अपना रजिस्ट्रेशन करते हुए जिला वासियों को इस मेगा इवेंट में बढ़चढ़ कर भाग लेने के लिए प्रेरित किया। रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया के शुभारंभ अवसर पर प्रदेश के उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री राव नरबीर सिंह, राजस्व एवं शहरी निकाय मंत्री विपुल गोयल, खाद्य मंत्री राजेश नागर व खेल राज्य मंत्री गौरव गौतम विशेष तौर पर उपस्थित रहे। मुख्यमंत्री ने कहा कि हरियाणा उदय आउटरीच कार्यक्रम के अंतर्गत प्रदेश भर में मैराथन के माध्यम से ड्रग फ्री हरियाणा का संदेश प्रदेशवासियों को दिया जा रहा है। सकारात्मक स्वरूप के साथ नई ऊर्जा में युवा आगे बढ़ें, इसके लिए हरियाणा सरकार द्वारा राहगीरी व मैराथन जैसी गतिविधियों के माध्यम से जागरूकता अभियान चलाकर लोगों को सामाजिक कुरीतियों से दूर रहने का आह्वान किया जा रहा है। उन्होंने इस अभियान में प्रदेश की जनता को सहभागी बनाते हुए कहा कि नशा मुक्त हरियाणा, स्वस्थ हरियाणा और खुशहाल हरियाणा की परिकल्पना को साकार करने में हर नागरिक योगदान दें।

हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही लड़कियां: दत्तात्रेय

पायनियर समाचार सेवा। फरीदाबाद

- राज्यपाल ने अल-फ़लाह विवि में किया नए अस्पताल भवन का उद्घाटन
- शिक्षा और खेल के क्षेत्र में अव्वल रहे विद्यार्थियों को प्रशस्ति पत्र देकर किया सम्मानित

हरियाणा के राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय ने कहा कि शिक्षा में नवाचार और टेक्नोलॉजी का समावेश होना जरूरी है। शिक्षण संस्थान भी चरित्र निर्माण पर फ़ोकस करते हुए विद्यार्थियों में नैतिक मूल्य विकसित करें। राज्यपाल ने गुरुवार को फरीदाबाद के अल-फ़लाह विश्वविद्यालय में नए अस्पताल भवन का उद्घाटन करने के साथ-साथ शिक्षा और खेल के क्षेत्र में अव्वल रहे विद्यार्थियों को ट्रॉफी और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया।

कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि राज्यपाल ने संबोधित करते हुए कहा कि इस विश्वविद्यालय में लड़कों से ज्यादा संख्या लड़कियों की है और आज जो सम्मानित हुए विद्यार्थी हैं उनमें भी लड़कियों की संख्या ज़्यादा है। लड़कियों को आगे बढ़ता देख अच्छा लगता है। आज हर क्षेत्र में लड़कियां अच्छा प्रदर्शन कर रही हैं। उन्होंने पढ़ाई के साथ साथ खेलों में भी भाग लेने के लिए विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया।

राज्यपाल ने कहा कि शिक्षण के क्षेत्र में कोई भी उपाधि प्राप्त करने उपरांत विद्यार्थी रोजगार प्राप्ति का सोचते हैं लेकिन युवाओं को चाहिए कि वे नौकरी लेने वाले नहीं बल्कि नौकरी देने वाले बनने की दिशा में आगे बढ़ें। उन्होंने कहा कि युवा इनोवेशन, रिसर्च और तकनीक को अपना कर स्टार्ट अप शुरू करें। उन्होंने विद्यार्थियों को भी आह्वान किया कि वे शिक्षा पूरी करके कहीं भी जाकर नौकरी करें, पैसा कमायें लेकिन अपने देश, प्रदेश और अपने गांव को ना भूलें।

बिजली चोरी के 17 मामलों में सजा

नई दिल्ली। दिल्ली में बिजली चोरी के मामले में विद्युत अदालत ने 17 मामलों में सजा सुनाई है। उत्तरी दिल्ली में बिजली आपूर्ति करने वाली पावर यूटिलिटी टाटा पावर-डीडीएल ने बिजली चोरी रोकने की दिशा में अप्रैल 2024 से जनवरी 2025 के दौरान बिजली चोरी के 17 मामलों को उजागर करते हुए मामले को कोर्ट में ले गए थे। वहीं वर्ष 2007 से अब तक, विशेष विद्युत अदालतों ने बिजली चोरी के मामलों में कुल 78 अभियुक्तों को सजा सुनायी और विद्युत अधिनियम 2003 के अनुच्छेद 135 के तहत दंड भी लगाया है। टाटा पावर-डीडीएल ने विशेष विद्युत अदालत रोहिणी में अभियुक्तों के खिलाफ आपराधिक मामले दर्ज कराए थे। ताजा घटनाक्रम के बारे में, चीफ कमर्शियल, टाटा पावर-डीडीएल ने चोरी रोकने के लिए टीम के समर्पण और प्रयासों की सराहना करते हुए, अपराधियों को सजा दिलवाने और उपभोक्ता सेवाओं को दुरुस्त बनाए रखने पर जोर दिया।

हाईटेंशन लाइन की तार काटकर चुरा ले गए चोर

अब तक बदमाश किसानों की ट्यूबवेल से मोटर चुराते व स्टार्टर की तार ही काटते थे

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

गुरुग्राम के गांव बालूदा के पास चोरों द्वारा खंभों से काटी गई तारें।

रात के समय खेतों की 11 हजार केवी हाइटेंशन लाइन की बिजली बंद थी। किसान घरों में सो रहे थे और चोर इस लाइन से बिजली की तारें काटकर चोरी कर ले गए। किसानों ने कहा कि अब तक तो चोर किसानों के ट्यूबवेल से मोटर, स्टार्टर की तार काटते थे। अब चोर इतनी बड़ी बिजली की लाइन को ही काटकर ले गए। किसानों ने इस घटना की जानकारी बिजली विभाग को दी है।

सोहना खंड के गांव बालूदा के पास से खेतों से होकर जा रही 11 हजार किलोवाट की हाइटेंशन लाइन पर चोरों ने सेंधमारी की। यह लाइन निमोठ पावर हाउस से आ रही है। बालूदा गांव के किसानों विक्रम, सूरज नंबरदार, तेजपाल, रिषीपाल के अनुसार रात के समय बिजली बंद थी। ग्रामीणों ने कहा कि मुंबई-वडोदरा एक्सप्रेस-वे बनने से किसानों को खुशी हुई थी कि उनकी जमीनें महंगी हो गई हैं। यहां से लोगों को सुविधा हो गई है। अपराधी अपनी गाड़ियों को एक्सप्रेस-वे पर खड़ी करते हैं और वारदातों को अंजाम देकर फरार हो जाते हैं। किसानों की चिंता काफी बढ़ गई है। चोरों द्वारा पूरी हाइटेंशन लाइन को चुरा ले जाना बहुत बड़ी घटना है।

सोहना के एसडीओ मुकेश गौड़ ने कहा कि इस घटना की पुलिस को शिकायत दे दी है। किसानों की समस्या के समाधान के लिए विभाग काम कर रहा है। जल्द ही खंभों पर तारें लगाकर बिजली सुचारू की जाएगी।

चोरी से बिजली विभाग व किसान दोनों को नुकसान

बिजली बंद होने का फायदा चोरों ने उठाया। चोर खेतों में पहुंचे और यहां से 500 मीटर क्षेत्र में 11 हजार किलोवाट की हाइटेंशन लाइन के पांच स्पैन के तार काट ले गए। इसी तरह से एलटी छोटी लाइन से 750 मीटर में 8 स्पैन काटकर चोर ले गए। चोरों की इस हरकत से खेतों में खड़े आधा दर्जन खंभे भी टूट गए। इस चोरी से बिजली विभाग को तो लाखों का नुकसान हुआ ही है, साथ में किसानों के लिए समस्या खड़ी हो गई है। बिजली बहाल होने में समय लगेगा। फसल में पानी देने के लिए किसानों को इंतजार करना पड़ेगा।

विकट परिस्थितियों में भी कर्तव्य निभाता है मीडिया: उपायुक्त

- प्रेस क्लब में आयोजित पत्रकारों को 10-10 लाख की बीमा पॉलिसी वितरण समारोह में बोलीं नेहा सिंह

पायनियर समाचार सेवा। कुरुक्षेत्र

उपायुक्त नेहा सिंह ने कहा कि मीडिया भारत के चौथें स्तंभ के रूप में अपने कर्तव्य का निर्वाह कर रहा है। इस कर्तव्य को पूरा करने के लिए मीडिया के साथियों को विकट परिस्थितियों से भी होकर गुजरना पड़ता है। उपायुक्त प्रेस क्लब द्वारा आयोजित बीमा पॉलिसी वितरण समारोह में बतौर मुख्यातिथि शिरकत कर रही थी। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री नायब सैनी के मीडिया सचिव प्रवीण आत्रेय अति विशिष्ट अतिथि के रूप में पहुंचे। वहीं नवीन जिंदल के प्रतिनिधि के रूप में पूर्व आईएएस धर्मबीर सिंह, श्री ब्राह्मण एवं तीर्थोद्धार सभा के मुख्य सलाहकार जयनारायण शर्मा व श्री जयराम संस्थाओं के मीडिया प्रभारी राजेश सिंगला ने बतौर विशिष्ट अतिथि शिरकत की। कार्यक्रम में पहुंचने पर प्रधान रामपाल शर्मा, अशोक यादव, विकास बतान, महासचिव देवीलाल बारना, बाबूराम तूषार, नवोदित, जसबीर दुग्गल, राजेंद्र वर्मा व सोहनलाल सैनी के नेतृत्व में क्लब के सदस्यों ने सभी अतिथियों का पुष्प गुच्छ के साथ स्वागत किया व अतिथियों का स्मृति चिह्न भेंट किए। उपायुक्त ने प्रेस क्लब द्वारा पत्रकारों की बीमा पॉलिसी की सराहना करते हुए कहा कि समाज में संतुलन बनाए रखने में मीडिया अपनी अहम भूमिका अदा कर रहा है। इनके योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता।

सरस्वती महोत्सव की सांस्कृतिक संध्या का शुभारंभ

- प्रसिद्ध लोक कलाकार प्रकाश मलिक ने दी शानदार प्रस्तुतियां
- कुरुक्षेत्र विवि में विधानसभा अध्यक्ष हरविन्द्र कल्याण करेंगे सेमिनार का शुभारंभ

पायनियर समाचार सेवा। पिहोवा

श्याम तेरी बंसी पागल कर जाती है के भक्ति रस से भरे गीतों की शानदार प्रस्तुतियों के साथ अंतर्राष्ट्रीय सरस्वती महोत्सव की सांस्कृतिक संध्या का आगाज हुआ। इस महोत्सव की सांस्कृतिक संध्या के पहले प्रसिद्ध लोक कलाकार प्रकाश मलिक ने भक्ति रस और हरियाणवी लोक गीतों के साथ-साथ देशभक्ति से ओत प्रोत गीतों की प्रस्तुतियां दी है।

अंतर्राष्ट्रीय सरस्वती महोत्सव 2025 में बुधवार को देर सायं सरस्वती तीर्थ पर मुख्य सांस्कृतिक कार्यक्रम के मंच पर हरियाणा सरस्वती धरोहर विकास बोर्ड की तरफ से सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया। इस सांस्कृतिक संध्या का शुभारंभ भाजपा के जिला अध्यक्ष सुशील राणा ने किया। इस सांस्कृतिक संध्या के कलाकार प्रकाश मलिक और उसके साथियों को मुख्य अतिथि सुशील राणा ने सम्मानित किया।

वकीलों ने किया तोड़फोड़ कार्रवाई का विरोध

पायनियर समाचार सेवा। फरीदाबाद

- एसडीएम शिखा अंतिल के कार्रवाई रोकने व भविष्य में ऐसा न करने के आश्वासन के बाद शांत हुए अधिवक्ता

कोर्ट परिसर लायर्स चैम्बर सैक्टर-12 फरीदाबाद संयुक्त आयुक्त नगर निगम, सुमित कुमार, ओल्ड फरीदाबाद दलबल के साथ जेसीबी लेकर लायर्स चैम्बर्स के पास बनी केनटीन के पास चाय, जूस, के स्टॉल व खाने की दुकानों को तोड़ने के लिए पहुंच गये। उन्होंने बिना जिला बार एसोसिएशन को सूचना दिये सब को क्षतिग्रस्त कर दिया। इसकी सूचना जब बार एसोसिएशन के प्रधान जोगिन्द्र सिंह नरवत व महासचिव पवन पाराशर को मिली तो उन्होंने मौके पर पहुंच कर जब तोड़फोड़ का विरोध किया तो सुमित कुमार संयुक्त आयुक्त ने अपना रूतबा दिखाते हुए जेसीबी को नहीं रोका। इसी बात नोक-झोक होने लगी और मौके पर सैंकड़ों अधिवक्ता एकत्रित हो गए। अधिवक्ताओं को देखकर अधिकारी मौके से निकल लिए। वकीलों ने जेसीबी को अपने कब्जे में ले लिया। बार काउंसिल पंजाब एण्ड हरियाणा के पूर्व मनोनित सदस्य शिवदत्त वशिष्ठ एडवोकेट ने कहा प्रशासन को तोड़-फोड़ करने से पहले जिला बार ऐसोसिएशन को सूचना देनी चाहिए।

इस घटना की सूचना जिला एण्ड सेसन जज संदीप गर्ग को दी गई। उसके बाद वकील एकत्रित होकर कोर्ट परिसर वाले मेंन गेट पर कुर्सी लेकर बैठ गये और प्रशासन के खिलाफ नारे-बाजी करने लगे। नारे बाजी को देख एसीपी सैन्ट्रल राजीव कुमार ने वकीलों से बातचीत की। वकीलों ने कहा कि जब तक प्रशासन की तरफ से कोई अधिकारी आकर खेद प्रकट नहीं करता तब तक कोई बात नहीं होगी। वकीलों की माँग पर एसडीएम फरीदाबाद शिखा अंतिल ने आकर स्थिति को संभाला और बार जिला ऐसोसिएशन को भरोसा दिलाया कि भविष्य में कभी भी बिना सूचना दिये कोई भी कोर्ट परिसर व उसके आस पास में तोड़-फोड़ नहीं की जायेगी। तब जाकर वकीलों और प्रशासन के बीच मामला सुलझा।

सार्वजनिक सूचना

आम आम जनता को सूचित किया जाता है कि श्रीमती पूर्णिमा चौधरी जो कि संपत्ति संख्या 61, खसरा संख्या 39, सूरज नगर आजादपुर, दिल्ली के भूतल के पश्चिमी भाग के पीछे वाले हिस्से, क्षेत्रफल 142 वर्ग गज, संपूर्ण ऊपरी भूतल और संपूर्ण तीसरी मंजिल, छत के अधिकार सहित, दोनों का क्षेत्रफल 284 वर्ग गज की मालिक हैं, जो दिनांक 08.08.2023 के त्याग विलेख (दस्तावेज संख्या 13244) के तहत मालिक बनीं है। और अब चोलामंडलम इन्वेस्टमेंट एंड फाइनेंस कंपनी लिमिटेड द्वारा वित्तपोषित किया जाना है। (1) श्री बी.एस. मित्तल के पक्ष में मूल बिक्री विलेख दिनांक 20.02.1963 (दस्तावेज संख्या 2166), (2) स्वर्गीय श्री बी.एस. मित्तल का मृत्यु प्रमाण पत्र, (3) श्रीमती आशा मित्तल के पक्ष में मूल पंजीकृत जीपीए दिनांक 20.12.1982 (दस्तावेज संख्या 391) और (4) श्रीमती उषा चौधरी के पक्ष में मूल वसीयत खो गई है/गुम हो गई है यदि किसी व्यक्ति के पास उक्त संपत्ति पर किसी भी प्रकार का दावा/अधिकार/स्वामित्व/हित है तो वह आज से 7 दिनों के भीतर अपनी आपत्तियों के बारे में नीचे दिए गए पते पर लिखित रुप में सूचित कर सकता है। ऐसा न करने पर यह माना जाएगा कि उक्त संपत्ति सभी प्रकार के भार, ग्रहणाधिकार आदि से मुक्त है। लुसेम लीगल एलएलपी बी-93बी, द्वितीय तल, एसबीआई बैंक के सामने, सेक्टर 2, नोएडा, यूपी-201301, संपर्क **#0120-4269379**

सार्वजनिक सूचना

NO.1605/ST-CM (Marriage Registration)/2025

Date : 27 January, 2025

श्री प्रखर चतुर्वेदी पुत्र श्री नीरज चतुर्वेदी निवासी प्लॉट नं0-96, थाना चौराहा, गुर्जर फार्म्स, रामगंज मण्डी, जिला कोटा, राजस्थान-326519 एवं सुश्री नैना कपिल पुत्री श्री अनिल कुमार कपिल निवासी ए-1902, प्रतीक एडिफिस, सेक्टर-107, नोएडा, गौतमबुद्धनगर (उ0प्र0) ने विशेष विवाह अधिनियम 1954 के अन्तर्गत विवाह करने हेतु आवेदन किया है।

इस संबंध में आपत्तिधारी व्यक्ति अपनी आपत्तियाँ अधोहस्ताक्षरी कार्यालय में दिनांक 26.02.2025 तक किसी भी कार्य दिवस में प्रस्तुत कर सकता है।

प्र0 नगर मजिस्टेट/
विशेष विवाह अधिकारी गौतमबुद्धनगर।

PUBLIC NOTICE

PUBLIC NOTICE is hereby given that pursuant to Arbitral Award dated 10.02.2006 passed in arbitration proceedings amongst the legal heirs of Late Sh. Ram Singh Khurana R/o C-3/11, Ashok Vihar, Phase-II, New Delhi; legal heirs of Late Sh. Ajit Khurana R/o B-2/10, Ashok Vihar, Phase-II, New Delhi and Group of Sh. Gurbachan Singh S/o Late Sh. Bhagwan Singh R/o 126, Shere Punjab Society, Andheri, Mumbai and A-28, Vishal Enclave, New Delhi all rights and entitlements in relation to Property in Khasra no. 93 at Peepal Thala, Adarsh Nagar ("Property") have vested in Group of Sh. Gurbachan Singh, comprising of **ARBINDER SINGH, GURINDER SINGH and PARVINDER SINGH**. The public at large may take note that if any entity enters into any transaction for sale of the Property without the knowledge of the Undersigned, the same would not be recognized by the Group of Sh. Gurbachan Singh and will be construed unlawful and accordingly, will attract legal action, both civil & criminal which shall solely be at the risk and cost of such entity.

Sd/-
Date : 30.01.2025 Gurinder Singh, Parvinder Singh,
Place : New Delhi Gurbachan Singh Arora

ग्रेटर नौएडा औद्योगिक विकास प्राधिकरण
प्लाट संख्या-01, सैक्टर-नॉलेज पार्क-4, ग्रेटर नोएडा सिटी, जिला-गौतम बुद्ध नगर (उ0प्र0)

सार्वजनिक सूचना

ग्रेटर नौएडा औद्योगिक विकास प्राधिकरण के अन्तर्गत **M/s Rudra Buildwell Projects Pvt. Ltd.** भूखण्ड संख्या-**GH-2B, Sector-01, Greater Noida** को **दिनांक 12.12.2012** को मानचित्र स्वीकृति प्रदान की गयी थी। तदोपरान्त विकासकर्ता द्वारा (Group Housing Project) का पुनरीक्षित मानचित्र हेतु आवेदन संख्या-72553 **दिनांक 04.11.2024** के माध्यम से आवेदन किया गया है। तत्क्रम में UP-Apartment Act&-2010, Amendment 2016 in Section-4 Sub Section-B के अन्तर्गत परियोजना के आवंटियों से आपत्ति/ सुझाव आमंत्रित किये जाने का प्रावधान है। इस संबंध में विकासकर्ता द्वारा प्रस्तुत स्वीकृति मानचित्र एंव Declarations as per UP Apartment Act-2010 परीक्षण किसी भी कार्यदिवस में सुबह 9:30 से सांय 6:00 बजे के मध्य नियोजन विभाग में तथा प्राधिकरण की वेबसाईट पर किया जा सकता है।

अतः उपरोक्त परियोजना के आंवटियों द्वारा Sanction Map एवं Declarations as per UP Apartment Act-2010 के सम्बन्ध में सूचना प्रकाशित करने के 30 दिनों के अन्दर आपत्तिया/सुझाव आमंत्रित की जाती है। उपरोक्त के निहितार्थ अपनी आपत्तिया लिखित रुप में अपने आवंटन पत्र, नाम, पता एवं दूरभाष नम्बर के साथ कार्यालय समय व कार्यदिवस में ग्रेटर नौएडा प्राधिकरण के मुख्य प्रशासनिक कार्यालय, भूखण्ड संख्या-1, नॉलेज पार्क-4, ग्रेटर नौएडा में स्थित महाप्रबन्धक (नियोजन/वास्तु0) को सम्बोधित करते हुए सूचना प्रकाशित होने के 30 दिवसों के अन्दर जमा करायी जा सकती है।

महाप्रबन्धक (नियो0/वास्तु0)
ग्रेटर नौएडा औद्योगिक विकास प्राधिकरण

PUBLIC NOTICE

These are my clients Shri Madan Gopal and Smt. Sushila Kumari resident of 693, Church Road Jwala Nagar Shahdara Delhi- 110032. They have sent notice to all their relatives and have disinherited their son namely Mr. Ashish Shrikant and daughter-in-law Mrs. Deepshikha from all their movable and immovable properties and assets due to their misconduct, misbehavior and hostile attitude. My clients will not be responsible for any act of our son and daughter-in-law namely Mr. Ashish Shrikant and daughter-in-law Mrs. Deepshika in future.

AMIT SHARMA (Advocate), Ch. No. 406, KarKardooma Courts, Delhi-110032

Public Notice

This is to inform the general public that **Sh. Yogesh Dadu and Smt. Sudhanshu Dadu** are the owners of Flat no. A-16, On the Third Floor, without its roof rights, land area measuring 1630 Sq. Ft., i.e. 151.427 Sq. Mtrs, situated at Bijli Apartments, Gujranwala Town-2, GT Karnal Road, Delhi-110033. Sh. Yogesh Dadu acquired the said Flat vide GPA in Blood Relation dated 14.02.2023 as Doc. no. 278 executed by Smt. Kamlesh Dadu in favour of Sh. Yogesh Dadu in respect of Flat no. A-16, Bijli Apartment, area measuring 1630 Sq. Ft, and Shop no. 9F, area measuring 100 Sq. Ft. and WILL dated 20.05.2015 executed by Sh. Satya Prakash Dadu in favour of Smt. Kamlesh Dadu and Sh. Yogesh Dadu in respect of Flat no. A-16, Bijli Apartment and Shop no. 9F. Smt. Sudhanshu Dadu acquired the 50% Share of the Said Flat Vide Gift Deed dated 30.12.2012 doc. No. 2023/15/I/20453 executed by Sh. Yogesh Dadu in favour of Smt. Sudhanshu Dadu in respect of 42% Undivided Share of Property no. A-16, On Third Floor, without its roof rights, land area measuring 1630 Sq. Ft., i.e. 151.427 Sq. Mtrs and Gift Deed dated 14.02.2024 executed by Sh. Yogesh Dadu in favour of Smt. Sudhanshu Dadu in respect of 8% Undivided Share of Property no. A-16, On Third Floor, without its roof rights, area measuring 12.115 Sq. Mtrs.

Sh. Yogesh Dadu and Smt. Sudhanshu Dadu intends to transfer the ownership of Said flat by way of Sale Deed to Mr. Punit Malhotra. Subsequently, Mr. Punit Malhotra is in the process of mortgaging the said Flat with Aditya Birla Housing Finance Limited. Any objections or concerns regarding this transaction should be raised within a period of 15 days from the date of this public notice. Any objections submitted after the completion of this 15-day period will not be considered binding with respect to the said property or the interests of our client.

If anyone wishes to raise an objection, please do so within the stipulated 15-days period by contacting **Law Veritas: North (Advocates & Legal Consultants) at Office No. 11, 1st Floor, Building No. A-44/A, Sector-16, Noida, Uttar Pradesh-201301; Landline(s): +910120-3101683, e-mail: accounts@lvnorth.in**

Public Notice

This is to inform the general public that **Mr. Ashish Verma** is the owner of Plot no. 198, area measuring 98 sq. yards., i.e., 81.93 sq. meters., (Two Floors Covered area 163.86 sq. ft.) out of Khasra no.511K, situated at Mohalla Nearby Shivnagari, Shahid Bhagat Singh Marg Railway Road in the village Dadri, Pargana & Tehsil Dadri, Distt. Gautam Budh Nagar, U.P. through Will dated 07.08.2020 executed by Mr. Ratan Lal in favour of Mr. Ashish Verma in respect of area measuring 49 sq. yds., and by Way of Succession after death of Pooran Chand and Gift Deed dated 21.01.2025 as doc. No. 3641 executed by Mrs. Rita Verma in favour of Mr. Ashish Verma in respect of said Plot.

Mr. Ashish Verma is in the process of mortgaging the said plot with **Aditya Birla Housing Finance Limited.** Any objections or concerns regarding this transaction should be raised within a period of 07 days from the date of this public notice. Any objections submitted after the completion of this 07-day period will not be considered binding with respect to the said property or the interests of our client.If anyone wishes to raise an objection, please do so within the stipulated 07-days period by contacting **Law Veritas: North (Advocates & Legal Consultants) at Office No. 11, 1st Floor, Building No. A-44/A, Sector-16, Noida, Uttar Pradesh-201301; Landline(s): +910120-3101683, e-mail: accounts@lvnorth.in**

पब्लिक नोटिस

सभी को पता है कि मेरे मुवक्किल एस. मखान सिंह, सेकंड फ्लोर विदाउट रूफ राइट एरिया 75 स्क्वायर याईस प्रापर्टी नंबर-B &155, गांव बसई दारापुर जनता कालोनी शिवाजी विहार नई दिल्ली के मालिक हैं। और एस.मखान सिंह,ने उक्त प्लाट को श्री महेश खुराना से नोटरीकृत जीपीए, एटीएस और वसीयत दिनांक 12.01.2012 के द्वारा खरीदा था अब एस. मखान सिंह उपरोक्त संपत्ति बेचना चाहते हैं। और यह सूचित किया जाता है कि मेरे उक्त ग्राहक को छोड़कर किसी भी व्यक्ति द्वारा उक्त दस्तावेजों के साथ कोई सौदा इकरार,बिक्री, बंधक आदि सिवाय एस. मखान सिंह के बीच,मान्या नही होगा. तथा अगर किसी व्यक्ति को उक्त संपत्ति मे किसी प्रकार का अधिकार या दावा करना चाहता है तो वह नीचे लिखे न.पर इस प्रकाशन के 15 दिन के अंदर संपर्क कर अपने अधिकार या आपत्ति का की जानकारी दे दे. तथा उक्त कॉगजो को वापस कर दे

एडरेम लिगल सल्यूशन
चेंबर न.760,द्वारका कोर्ट,सेक्टर-10,द्वारका,नई देल्ही-75
मोबाइल : 9899013918

PUBLIC NOTICE

This is to inform general public that **Mr. Ashish Rajpal & Mr. Kapil Rajpal** have acquired **Property Bearing No. B-1/53, area measuring 200 Sq. Yds.**, situated at Malviya Nagar, New Delhi - 110017 by way of Relinquishment Deed dated 30.12.2024 as Document No. 559.

Documents related to the above said property has been misplaced i.e. **Sale Deed dated 16.12.1978 duly Registered as 4992.**

Anyone who find the said documents shall handover the same to the Manager of **Axis Finance Ltd. Office No. F-3 Third Floor Sector - 3, Noida 201301.**

Now, Mr. Ashish Rajpal, Mr. Kapil Rajpal & Mrs. Phool Rajpal availing loan on above said property from Axis Finance Ltd. & in case anyone has any objection, the same may be raised within 7 days of this publication to **Mr. Pramod Kumar Singh (Advocate), AccuLaw Source LLP, Unit No. S-2-U, 2nd Floor, built on Plot no. 4 and 5, Ansal Utility Commercial Center, Paschim Vihar, New Delhi-110063 or contact : +91 9560309909 (M)**

PUBLIC NOTICE

PUBLIC NOTICE is hereby given that the Undersigned are Directors and Shareholders of **M/s R.S Ajit Singh & Co. Private Limited ("Company")** having its registered office at C-91/10, Wazirpur Industrial Area, Delhi. The Undersigned, to take forward the process of conversion of the property of the Company bearing no. 91/10, Block C, admeasuring 2300.60 Square yards situated at Wazirpur Industrial Area **("Property")**, from industrial use to free hold, had issued a Board Resolution in favour of one of its Directors i.e., Mrs. Gurpal Khurana. However, the Undersigned have received information that Mrs. Gurpal Khurana, acting on the instructions of one group of shareholders is seeking to transfer the Property from the Company to a third party on completed unconscionable terms and in absolute contravention of the interests of the Company. The Undersigned in their capacity as Directors and Shareholders of the Company are taking steps to withdraw the Board Resolutions passed in favour of Mrs. Gurpal Khurana to take steps on behalf of the Company. The public at large may take note that if any entity/third party enters any transaction for sale of the Property with Mrs. Gurpal Khurana, the same would not be recognized by the Undersigned and the Company and will be construed unlawful and accordingly, will attract legal action, both civil & criminal which shall solely be at the risk and cost of such third party/entity.

Sd/-
Date : 30.01.2025 Gurinder Singh, Parvinder Singh,
Place : New Delhi Gurbachan Singh Arora

PUBLIC NOTICE

NOTICE is hereby given that **Ishan Arora & Raj Kumari** (hereinafter called the seller/ s) claims to be owner and in possession of **Second Floor of Prop.No. DS-164, Khasra no. 1590/624,** Chandrawali, Shandara, Bhola Nath Nagar, Gall No. 9 Illaqa Shandara Delhi-32 (herein after called the said property) by virtue of sale deed dated 12.04.2023 regd. Doc. No. 3544 executed by Deepa Sharma, said Deepa Sharma had inherited the said property after the death of Radha Sharma and said Radha Sharma was the owner of said property by virtue of sale deed dated **29.05.2003** regd. Doc. No. 3696, said Seller/s have agreed to sell the said Property to **Mohit Chopra** and said **Mohit Chopra** has agreed to create a mortgage in favour of our clients **IDFC FIRST BANK LTD, Rajendra Place Branch,** any person/s having claim against the said Property, or any part thereof, by way of sale, exchange, mortgage (equitable/registered or otherwise), gift, trust, inheritance, lien or otherwise howsoever, are hereby intimated to notify the same in writing to us with supporting documentary evidence at the address mentioned below within 7days from the date hereof, failing which the claim or claims, if any, of such person or persons will be considered to have been waived and/or abandoned and our client shall proceed with the disbursement of loan and subsequent creation of mortgage in respect thereof.

Vishal Diwan, Advocate
For Diwan and Company LLP
Advocates and Solicitors
House No.2 (LGF), NRI Complex, N.D-19
Mobile No, 9818399999

kotak — कोटक महिंद्रा प्राइम लिमिटेड

कब्जा नोटिस (अचल सम्पत्ति हेतु)
(प्रतिभूति हित (प्रवर्तन) नियम, 2002 के नियम 8(1) के साथ पठित परिशिष्ट IV के अनुसार)
ऋण खाता नामः शांति देवी, ऋण खाता संख्या KLAP18687

जबकि अधोहस्ताक्षरी ने वित्तीय परिसंपत्तियो के प्रतिभूतिकरण एवं पुनर्निर्माण तथा प्रतिभूति हित अधिनियम के प्रवर्तन के **कोटक महिंद्रा प्राइम लिमिटेड एक गैर-बैंकिंग वित्त कंपनी है जो भारतीय रिजर्व बैंक के साथ विधिवत पंजीकृत है, जिसका पंजीकृत कार्यालय इस प्रकार है: - 27बीकेसी, सी 27, जी ब्लॉक, बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स, बांद्रा (ई), मुंबई 400051 और शाखा कार्यालय इस प्रकार है: - प्लॉट नंबर 7, द्वितीय तल, सेक्टर 125, नोएडा 201313** का प्राधिकृत अधिकारी होने तथा प्रतिभूतिहित (प्रवर्तन) नियमावली 2002 (सरफासी एक्ट) के नियम 3 के साथ पठित धारा 13(12) के अधीन प्रदत शक्तियो के अंतर्गत कर्जदार/बंधककर्ता **1. मैसर्स शांति देवी पब्लिकेशन इंडिया प्रा. लि., एसएफ 01 प्लॉट नं. 16सेक्टर 5 राजेंद्र नगर, साहिबाबाद, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश - 201005. 2. अनिल कुमार, 3. शैफाली सिंह, दोनों निवासी - मकान नं. 3 22, सेक्टर 2, राजेंद्र नगर साहिबाबाद, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश 201005। सभी यहां भी: वाणिज्यिक हॉल नंबर 1, पहली मंजिल, सामने की तरफ प्लॉट नं. 16, सेक्टर 05, टी.एच.ए. राजेंद्र नगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश - 201005 को** मांग सूचना दिनांक 18-11-2024 को जारी किया था जिसमें सूचना में उल्लेखित राशि **रु. 1,02,23,309.89 (रु. एक करोड़ दो लाख तेईस हजार तीन सौ नौ और पैसे नवासी मात्र) दिनांक 13.11.2024 तक देय, ऋण खाता संख्या KLAP18687 की बकाया राशि के लिए और 13-11-2024 से चक्रवृद्धि ब्याज के आधार पर संविदात्मक दरों पर आगे ब्याज और अन्य शुल्क के साथ, इसकी वास्तविक वसूली ("बकाया राशि") तक उक्त मांग नोटिस की तारीख से 60 दिनों के भीतर** भुगतान करने को कहा गया था।

कर्जदार/सह कर्जदार/गारंटर राशि का प्रतिभुगतान करने मे असफल हो गये है, इसलिए एतद्द्वारा कर्जदार/सह कर्जदार/गारंटर तथा आम जनता को सूचित किया जाता है कि अधोहस्ताक्षरी एसवीसी को-ऑपरेटिव बैंक लिमिटेड के प्राधिकृत अधिकारी ने इसमे नीचे वर्णित संपत्ति का सांकेतिक कब्जा, उक्त अधिनियम की धारा 13(4), उक्त नियम 2002 के नियम 8 और 9 के साथ पठित के अधीन उन्हे प्रदत्त शक्तियों के इस्तेमाल के अन्तर्गत दिनांक **28.01.2025** को लिया है।

विशेष रूप से कर्जदार/सह कर्जदार/गारंटर तथा जनसाधारण को एतद्द्वारा उक्त संपत्ति के साथ लेन-देन न करने के लिए सावधान किया जाता है तथा संपत्ति के साथ कोई भी लेन देन **कोटक महिंद्रा प्राइम लिमिटेड** के प्रभार वास्ते **रु. 1,02,23,309.89 (रु. एक करोड़ दो लाख तेईस हजार तीन सौ नौ और पैसे नवासी मात्र) दिनांक 13.11.2024 तक देय, और 13-11-2024 से चक्रवृद्धि ब्याज के आधार पर संविदात्मक दरों पर आगे ब्याज और अन्य शुल्क के साथ, इसकी पूर्ण चुकौती/पुर्नभुगतान तक** के अधीन होगा।

कर्जदार/सह कर्जदार/गारंटर का ध्यान एक्ट की धारा 13 की उप धारा (8), के प्रावधानों के अंतर्गत सुरक्षित परिसंपत्तियों के मुक्त करने हेतु उपलब्ध समय सीमा की ओर आकर्षित किया जाता है।

अचल संपत्ति का विवरण

मेसर्स शांति देवी पब्लिकेशन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, एसएफ 01 प्लॉट नंबर 16 सेक्टर 5, राजेंद्र नगर, साहिबाबाद, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश - 201005। मालिक का नाम - शैफाली सिंह

कमर्शियल हॉल नंबर 1, पहली मंजिल, सामने की तरफ, छत के अधिकार के बिना, कवर एरिया 1000 वर्ग फीट अर्थात 92.90 वर्ग मीटर प्लॉट नं 16 पर निर्मित सेक्टर-05, टी.एच.ए., राजेंद्र नगर, गाजियाबाद तहसील और जिला गाजियाबाद उत्तर प्रदेश। सीमा: पूर्व की ओर: प्लॉट संख्या 15, पश्चिम की ओर: प्लॉट सं. 17, उत्तर की ओर: 40 फीट चौड़ी सड़क, दक्षिण की ओर: एम.आई.जी फ्लैट

प्राधिकृत अधिकारी,
दिनांक: 28.01.2025, स्थानः गाजियाबाद कोटक महिंद्रा प्राइम लिमिटेड

भारतीय अर्थव्यवस्था

वैश्विक योगदान

भारत की अर्थव्यवस्था सारी दुनिया की प्रगति में अपना योगदान कर रही है। यह गति बनाए रखने के लिए आगामी बजट में सही नीतियों की आवश्यकता है। विश्व बाजारों में बाधाओं के बावजूद भारत की अर्थव्यवस्था तेजी से प्रगति कर रही है। भारतीय अर्थव्यवस्था ने अपनी गतिशीलता बनाए रखी है और वह अगले दो साल तक इसे बरकरार रखेगी। विश्व बैंक की जनवरी, 2025 में प्रस्तुत 'ग्लोबल इकोनोमिक प्रोस्पेक्ट्स रिपोर्ट' के अनुसार भारत दुनिया की सबसे तेज प्रगति करने वाली बड़ी अर्थव्यवस्था का अपना दर्जा बनाए रखेगा। वित्त वर्ष 26 और 27 में उसके 6.7 प्रतिशत की शानदार वृद्धि दर प्राप्त करने की आशा है। यह उल्लेखनीय मार्ग न केवल 2.7 प्रतिशत की वैश्विक वृद्धि दर से आगे जाता है, बल्कि विश्व आर्थिक परिदृश्य में भारत का महत्वपूर्ण देश के रूप में स्थान बनाए रखता है। भारत का जीवन्त आर्थिक प्रदर्शन कई प्रमुख कारणों से है। सेवा क्षेत्र भारतीय अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार है जो सकल घरेलू उत्पाद-जीडीपी तथा रोजगार सृजन में महत्वपूर्ण योगदान करता है। आईटी सेवायें, वित्त तकनीक तथा स्वास्थ्यरक्षा प्रगति को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। 'मेक इन इंडिया' तथा 'प्रोडक्शन लिंक्ड इंसेटिव'-पीएलआई योजना जैसी सरकारी पहलों ने विनिर्माण में सहायता देने के साथ ही खोज को बढ़ावा दिया है तथा घरेलू और विदेशी निवेशकों को आकर्षित किया है। ढांचागत संरचना, जैसे सड़कों, रेलवे व डिजिटल कनेक्टिविटी में निवेशों ने आर्थिक गतिविधियों को प्रोत्साहित किया है तथा उत्पादकता बढ़ाई है।

भारत की आर्थिक प्रगति वैश्विक संदर्भ में उल्लेखनीय है जहां वृद्धि बहुत मामूली है। अगले वर्ष चीन की वृद्धि दर धीमी होकर 4 प्रतिशत रहने का अनुमान है, ऐसे में भारत का लगातार विस्तार उसके बढ़ते महत्व को रेखांकित करता है। अंतरराष्ट्रीय मुद्राकोष की 'वर्ड इकोनोमिक आउटलुक' विश्व बैंक के अनुमानों की तरह है जिसने 2025 और 2026 में भारत की 6.5 प्रतिशत वृद्धि दर का अनुमान लगाया है। इससे देश के स्थिर आर्थिक मूलाधार और मजबूत होते हैं। लेकिन इस शानदार प्रदर्शन के बावजूद भारत को अनेक चुनौतियों का भी सामना करना पड़ रहा है जिन पर खासकर वित्त वर्ष 26 के आगामी बजट में ध्यान देने की आवश्यकता है। हालांकि, वृद्धि दर जीवन्त है, पर हमें तत्काल भारत की बढ़ती युवा जनसंख्या के लिए उपयुक्त रोजगार अवसर सृजित करने की आवश्यकता है। विश्व स्तर पर वस्तुओं की बढ़ती कीमतें तथा घरेलू सप्लाई श्रृंखला की बाधाओं को संबोधित करने की आवश्यकता है जो मूल्य स्थिरीकरण के लिए खतरा पैदा करती हैं। आर्थिक वृद्धि को प्रभावित किए बिना मुद्रास्फीति पर नियंत्रण के लिए प्रभावी मौद्रिक और राजकोषीय उपायों की जरूरत है। ढांचागत संरचना और समाज कल्याण पर खर्च बढ़ाने के साथ राजकोषीय अनुशासन बनाए रखना नीति निर्माताओं के लिए संतुलनकारी काम होगा। कृषि क्षेत्र भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी है। लेकिन वह अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है जिनमें मानसूनों की अनियमितता, कम उत्पादकता तथा बाजार विसंगतियां शामिल हैं। इस क्षेत्र के आधुनिकीकरण व स्थिरीकरण के लिए समग्र सुधारों की जरूरत है। भू-राजनीतिक तनाव, व्यापार विवाद, अमेरिका द्वारा टैरिफ बढ़ाने का खतरा तथा जलवायु परिवर्तन जैसे बाहरी जोखिमों का भी भारत की आर्थिक वृद्धि पर प्रभाव पड़ता है। इन अनिश्चितताओं का मुकाबला करने के लिए आर्थिक मजबूती बढ़ाना जरूरी है। बजट पेश करने की तैयारी कर रही वित्त मंत्री सुश्री निर्मला सीतारमण को भारत की तेज आर्थिक वृद्धि दर बनाए रखने के लिए इन चुनौतियों को संबोधित करना चाहिए। इस दृष्टिकोण से शिक्षा, स्वास्थ्यरक्षा तथा कौशल विकास में निवेशों से सुनिश्चित होगा कि देश की आर्थिक वृद्धि के लाभ सारी जनता तक पहुंचेंगे।

वर्तमान विश्व में गांधी जी की विरासत

वर्तमान समय में अनेक समाज असहमति और विभाजन के शिकार हैं। ऐसे में गांधीजी की विरासत हमें संवाद, सद्भावना व एकता के लिए प्रेरित करती है।

राजदीप पाठक
(लेखक, गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति से संबद्ध हैं)

30 जनवरी, 1948 को तीन गोलियों ने महात्मा गांधी के शरीर का अंत कर दिया, पर उनके आदर्श आज भी हमारे साथ बने हुए हैं और पूर्णत: प्रासांगिक हैं। गांधीजी के भौतिक मौन ने उनके अहिंसा, सुलह-समझौते व समझदारी के संदेशों को अमर बना दिया है। निधन के 75 साल बाद भी उनकी शिक्षायें पहले की तरह जीवन्त बनी हुई हैं तथा वे लगातार अधैर्य, असहिष्णुता व ध्रुवीकरण का सामना कर रही दुनिया में तेजी से अपना महत्व प्रकट कर रही हैं। उनकी गूंज हर जगह सुनाई दे रही है। दुनिया के समक्ष उपस्थित इन चुनौतियों को देखते हुए गांधीजी का जीवन और उनके कार्य लगातार मानवता को प्रेरित कर रहे हैं कि वह धैर्य, संवेदना तथा रचनात्मक संवाद के मूल्यों की पुन: खोज करे। हमारे ध्रुवीकृत वैश्विक समाज में जहां विभाजन और गहरे होते जा रहे हैं, वहीं असहमतियां अक्सर शत्रुता में बदलती दिख रही हैं। ऐसे में गांधीजी का दर्शन हमारे सामने आशा की किरण की तरह सामने आता है। गांधीजी के नश्वर शरीर पर चलाई गई तीन गोलियों के बाद पैदा मौन हमारे सामने एक महत्वपूर्ण सवाल छोड़ता है। क्या मानवता आज बिना हिंसा का रास्ता अपनाए अपने भीतर व्याप्त विभाजनों को दूर कर सकती है? हालांकि गांधीजी का संदेश एक विशिष्ट ऐतिहासिक संदर्भ में उभरा था, पर उसकी प्रासांगिकता ने समय की सीमायें पार की हैं और वह आज अधीरता और असहमतियों का प्रभावी जवाब है जो हमारी साझा मानवता के समक्ष गंभीर खतरा पैदा कर रही हैं। इनसे निपटने के लिए हमें गांधीजी के आदर्शों को शिक्षा में पुनर्जीवित करना होगा। युवा पीढ़ियों की शिक्षा में धैर्य, संवाद और संवेदना जैसे मूल्यों को तत्काल स्थापित करना सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

इन सिद्धान्तों से जल्दी परिचय भविष्य के नेताओं को स्वरूप दे सकता है। 'टेक गांधी टु स्कूल्स' जैसी पहलों का उद्देश्य गांधीवादी दर्शन को बच्चों के जीवन में कहानियों, चर्चाओं तथा प्रायोगिक शिक्षण के माध्यम से जोड़ना है। ये कार्यक्रम उपदेश देने से आगे जाते हैं और छात्रों में अहिंसा तथा सह-अस्तित्व की भावनायें पैदा करते हैं। उदाहरण के लिए, कक्षा में होने वाले टकरावों के प्रबंधन से छात्र संवेदना तथा ध्यान से सुनने के माध्यम से असहमतियों से निपटने के सबक सीखते हैं। बाद में वे ये कौशल सारी दुनिया में फैलाते हैं। शिक्षक व समुदायों के नेता भी इन मूल्यों को प्रसारित करते हैं।

अहिंसक संवाद, ध्यान व टकराव समाधान पर कार्यशालाओं से ये अमूर्त अवधारणायें कारगर व्यवहारों में बदल जाती हैं। इन उपकरणों का प्रयोग विविधतापूर्ण स्थितियों में किया गया है जिनमें घरेलू विवादों के समाधान से लेकर टकराव-ग्रस्त समुदायों में विश्वास बहाली तक शामिल हैं। सुलह-समझौते की गांधीवादी भावना की जड़ें क्षमा करने, अहिंसा और संवाद में निहित हैं जो सर्वाधिक गंभीर विभाजनों से निपटने और घावों पर मरहम लगाने में महत्वपूर्ण भूमिका करते हैं।

हमारे ध्रुवीकृत वैश्विक समाज में जहां विभाजन और गहरे होते जा रहे हैं, वहीं असहमतियां अक्सर शत्रुता में बदलती दिख रही हैं। ऐसे में गांधीजी का दर्शन हमारे सामने आशा की किरण की तरह सामने आता है। गांधीजी के नश्वर शरीर पर चलाई गई तीन गोलियों के बाद पैदा मौन हमारे सामने एक महत्वपूर्ण सवाल छोड़ता है।

सुलह-समझौते की परिवर्तनकारी शक्ति बहुत महत्वपूर्ण है। सुलह-समझौते के प्रति गांधीजी का दृष्टिकोण केवल टकरावों का समाधान न होकर संबंधों की पुन: बहाली तक विस्तारित था। उनका विश्वास था कि साहस के साथ अन्याय का सामना किया जाना चाहिए, लेकिन इसके बावजूद गलत काम करने वाले के प्रति कोई घृणा नहीं होनी चाहिए। यह गांधीवादी दर्शन बदले पर सामंजस्य को प्राथमिकता देता है तथा समझदारी व सामूहिक बेहतरी पर जोर देता है। आर्चबिशप डेसमंड टूटू ने इस विश्वास को स्पष्ट करते हुए कहा था, 'सच्चा सुलह-समझौता गलतियों, विसंगतियों, आघात एवं सच्चाई को उजागर करता है।' इसी प्रकार गांधीजी के विचारों से प्रभावित नेल्सन मंडेला ने क्षमा को स्थाई शांति के लिए एक उपकरण माना है। उन्होंने जोर देकर कहा, 'साहसी लोग शांति स्थापना के उद्देश्य से क्षमा करने से डरते नहीं हैं।'

इन सिद्धान्तों को शिक्षा और सामाजिक विमर्श में समाहित कर गांधीजी की विरासत एक समारोह से आगे जाती है और हमारे सामने जीवन्त यथार्थ बन जाती है। क्षमा, अंतर-धार्मिक सामंजस्य, आदि विषयों पर सेमिनारों और चर्चाओं के साथ ही प्रतिभागियों के बीच संवाद से इन मूल्यों को गहराई से अंगीकार करने की भावना पैदा होती है। इस प्रकार के गहन अनुभव युवा मस्तिष्कों में परिवर्तन के महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में अहिंसा की भावना स्थापित करने में सहायक सिद्ध होते हैं। गांधीजी की विरासत को स्थाई बनाने के दृष्टिकोण से 'गांधी स्मृति' एक जीवन्त श्रृद्धांजलि के रूप में सामने आती है। 'गांधी स्मृति' गांधीजी की स्थाई विरासत के केन्द्र में है और वहां स्थापित है जहां गांधीजी ने अपने जीवन के अंतिम दिन बिताए थे। दिल्ली में 5, तीस जनवरी मार्ग पर स्थित यह ऐतिहासिक स्थान पहले बिड़ला हाउस था। इसका बहुत महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थान है। गांधीजी यहां 9 सितंबर, 1947 को आए थे क्योंकि इसके पहले उनके लक्षित आवास पर विभाजन के बाद पश्चिम पंजाब से आए शरणार्थियों ने कब्जा कर लिया था। आज गांधी स्मृति एक राष्ट्रीय स्मारक है जिसमें संग्रहालय, गांधीजी का संरक्षित कमरा और वह प्रार्थना स्थल है जहां वे शाम को बैठकें करते थे।

यह दुनिया भर के आगंतुकों को अपनी ओर आकर्षित करता है और तीर्थस्थल के रूप में सम्मानित है। यह उस त्रासदी की याद दिलाता है जिसने गांधीजी के भौतिक जीवन को समाप्त कर दिया था। लेकिन इसके बावजूद 'गांधी स्मृति' एक विरासती स्थल से आगे जाता है। यह एक शैक्षणिक केन्द्र है जहां सभी आयुवर्ग के लोग, खासकर बच्चे साहस, संवेदना और जिम्मेदार नागरिकता के सबक सीखते हैं। हर वर्ष गांधीजी की जन्म जयंती और पुण्य तिथि के अवसर पर बच्चे शाम को प्रार्थना बैठक में संगीतमय श्रृद्धांजलि देते हैं। इन आयोजनों से गांधीजी का यह विश्वास मूर्त रूप लेता है कि शांति का प्रारंभ बच्चों से होता है। गांधीजी ने कहा था, 'यदि हम दुनिया में असली शांति सिखाना चाहते हैं तो इसकी शुरुआत हमें बच्चों से करनी चाहिए।'

आज गांधीजी के सिद्धान्तों पर अमल की आवश्यकता है। गांधीजी ने अहिंसा, सुलह-समझौते तथा समझदारी की पैरवी की थी। ये केवल अतीत की सजावटी चीजें न होकर आधुनिक चुनौतियों से निपटने के महत्वपूर्ण हथियार हैं। उनकी शिक्षायें हमें याद दिलाती हैं कि परिवर्तन की शुरुआत दया, संवेदना तथा रचनात्मक संवाद से होती है। बच्चों के मन में इन मूल्यों को पोषित करने से हम ज्यादा सामंजस्यपूर्ण भविष्य की नीव डालते हैं।

गांधीजी के जीवन और दर्शन की याद करते हुए हमें स्मरण रखना चाहिए कि गांधीजी के शरीर का अंत करने वाली तीन गोलियां एक समाप्ति न होकर प्रारंभ था। इससे हमें विभाजनों को एकता, दुश्मनी को समझदारी तथा निराशा को आशा में बदलने की प्रेरणा मिलती है। शांति का मार्ग लंबा और थका देने वाला है, पर इसकी शुरुआत इस साहसी विश्वास से होती है कि अहिंसा की शक्ति तथा अगली पीढ़ी के दिलों में आशा की किरण पैदा करने से हम इसे प्राप्त कर सकते हैं।

पवित्र भावनाओं का सृजन

हमारी भावनाएं शुद्ध होती हैं, तो शुभकामनाएं और अच्छा व्यवहार स्वाभाविक रूप से आते हैं। हमें खुद को किसी के साथ अच्छा व्यवहार करने के लिए कहने की ज़रूरत नहीं है।

ब्रह्मकुमार निकुंज
(लेखक, आध्यात्मिक उपदेशक हैं)

बचपन से ही हमें दूसरों के साथ विनम्र और अच्छा व्यवहार करना सिखाया जाता है। एक तरह से, यह महत्वपूर्ण है क्योंकि आप जो देते हैं, वही आपको मिलता है, और अगर हम चाहते हैं कि दूसरे हमारे साथ अच्छा व्यवहार करें, तो उनके प्रति हमारा व्यवहार भी वैसा ही होना चाहिए, है न? लेकिन! अगर हमारा तथाकथित अच्छा व्यवहार सतही है, जो अच्छी भावनाओं को छिपाने का काम करता है, तो इससे हमें बदले में कोई सद्भावना नहीं मिलेगी, क्योंकि कर्म का नियम सबसे सूक्ष्म स्तर पर भी काम करता है, जो कहता है: जैसा बोओगे, वैसा ही पाओगे।

इसलिए, दूसरों के प्रति वास्तव में अच्छी भावना रखना बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि जब हमारी भावनाएं शुद्ध होती हैं, तो शुभकामनाएं और अच्छा व्यवहार स्वाभाविक रूप से आते हैं। हमें खुद को किसी के साथ अच्छा व्यवहार करने के लिए कहने की ज़रूरत नहीं है या, अधिक सूक्ष्म स्तर पर, किसी को देखकर उठने वाले नकारात्मक विचारों को दबाने या खारिज करने की ज़रूरत नहीं है। क्योंकि अगर भावनाएं शुद्ध हैं, तो हमारे भीतर से ऐसी नकारात्मकता कभी पैदा नहीं होगी। हम अपने प्रियजनों के प्रति शुद्ध भावनाएं और प्यार रखते हैं। हम अपने दिल की गहराइयों से उन्हें शुभकामनाएं देते हैं और उनकी सफलताओं का जश्न मनाते हैं। यहां तक कि जब वे असफल होते हैं, तब भी हम उन्हें उम्मीद देते हैं और उन्हें बेहतर करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। क्यों? क्योंकि हम उनसे प्यार करते हैं।

लेकिन हमारे परिवार और दोस्तों के घेरे से बाहर के लोगों के बारे में क्या? उनके प्रति हमारी भावनाएँ इस बात के अनुसार बदलती रहती हैं कि हम उन्हें कैसे देखते हैं। ऐसा नहीं है कि कोई भी व्यक्ति स्वाभाविक रूप से बुरा होता है, लेकिन यह हमारी धारणा ही है जो हमें अलग तरह से प्रतिक्रिया करने के लिए

प्रेरित करती है जब वही गलती किसी प्रियजन या किसी और द्वारा की जाती है। एक के प्रति हम सहानुभूति और समझ दिखाते हैं, और दूसरे के प्रति हम चिड़चिड़ाहट और गुस्सा दिखा सकते हैं। हम दूसरों पर नकारात्मक लेबल लगाने में जल्दी करते हैं जैसेः स्वार्थी, आलसी, मूर्ख, अहंकारी, आदि। उस व्यक्ति के प्रति हमारे विचार, शब्द और व्यवहार उस लेबल से आकार लेते हैं। इस प्रकार, हम खुद को कुछ लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करने में असमर्थ पाते हैं। हालाँकि, यह समझना महत्वपूर्ण है कि हमारी धारणा अक्सर हमारे अपने पूर्वाग्रहों और पूर्वाग्रहों से घिरी हो सकती है। हम हमेशा अपने निर्णयों के पीछे के कारणों से अवगत नहीं हो सकते हैं, और ये निर्णय हमें ऐसे तरीकों से कार्य करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं जो वास्तव में हमारे मूल्यों को प्रतिबिंबित नहीं करते हैं। इसे स्वीकार करके, हम अपनी धारणाओं को चुनौती देना शुरू कर सकते हैं और अधिक सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण की दिशा में काम कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, अगर हम किसी ऐसे व्यक्ति से मिलते हैं जो शुरू में अप्राप्य या मुश्किल लगता है, तो अपनी शुरुआती धारणा को अपनी बातचीत को निर्धारित करने देने के बजाय, हमें उन अंतर्निहित कारकों की संभावना पर विचार करने के लिए एक पल लेना चाहिए जो उनके व्यवहार को प्रभावित कर सकते हैं।

माइंडफुलनेस हमें वर्तमान में मौजूद रहने और प्रत्येक बातचीत को खुले दिमाग और दिल से करने के लिए प्रोत्साहित करती है। जब हम माइंडफुल होते हैं, तो हम आवेगपूर्ण तरीके से प्रतिक्रिया करने या अपने निर्णयों को अपनी बातचीत को प्रभावित करने की अनुमति देने की संभावना कम होती है। यह हमें अधिक गहराई से सुनने और अधिक सहानुभूति के साथ प्रतिक्रिया करने में मदद करता है। यह प्रशंसा स्वाभाविक रूप से दूसरों तक फैलती है, जिससे हमें उनमें अच्छाई देखने में मदद मिलती है, भले ही यह उनके कार्यों या व्यवहार से अस्पष्ट हो। इसके अलावा, मजबूत, प्रामाणिक संबंध बनाने के लिए प्रयास और इरादे की आवश्यकता होती है। इसमें न केवल आसान क्षणों में दयालु होना शामिल है, बल्कि चुनौतीपूर्ण समय के दौरान समझ और समर्थन बढ़ाना भी शामिल है। इसका मतलब है खुले और ईमानदार संचार में शामिल होने और प्रतिक्रिया के लिए ग्रहणशील होना। संक्षेप में, हर व्यक्ति को दया और करुणा से देखने की आदत से गहरा परिवर्तन हो सकता है - न केवल उनमें, बल्कि हममें भी।

जब हम लगातार दूसरों में अच्छाई देखना चुनते हैं और अपना समर्थन देते हैं, तो हम एक ऐसा वातावरण बनाते हैं जहाँ उपचार और विकास संभव है। इन दृष्टिकोणों और प्रथाओं को विकसित करके, हम एक अधिक दयालु और समझदार दुनिया में योगदान करते हैं। याद रखें!

हममें से प्रत्येक के पास अपने कार्यों और दृष्टिकोणों के माध्यम से अपने परिवेश को प्रभावित करने की शक्ति है, और दूसरों के साथ सार्थक और सहायक तरीके से जुड़ने का विकल्प चुनकर, हम वास्तविक सद्भावना और सद्भाव की विशेषता वाले समुदाय का निर्माण करने में मदद करते हैं।

आप की बात

भावनाओं पर नियंत्रण जरूरी

देश आस्थावानों से भरा पड़ा है। छोटे-मोटे पर्वों पर भी लोग धार्मिक स्थलों और नदी क्षेत्रों में बड़ी तादाद में उमड़ पड़ते हैं। प्रयागराज में मौनी अमावस्या पर हुई भगदड़ दुखद और चिंताजनक तो है ही धार्मिक आयोजनों में बढ़ती भीड़ प्रबंधन के लिए गंभीर चुनौती बन चुकी है। पिछले दो कुंभ आयोजनों 1954 और 2013 में अप्रत्याशित हादसों के बाद सुधार के लिए अमल में लायें गए उपाय बढ़ती आबादी के आगे छोटे साबित हो रहे हैं। चाहे कोई बड़ा धार्मिक आयोजन हो या कुंभ अथवा सिंहस्थ भीड़ के रेले में अनियंत्रित भीड़ के कारण अव्यवस्था के शिकार हो जाते हैं जो बड़ी जन-धन हानि की वजह बनते है।इस भीड़ में जब विशिष्ट सरकारी अतिथि, कोई बड़ी हस्ती की उपस्थिति हो तो सुरक्षा को ठेंगा अवश्य देखने में आता है। हादसा भीड़ में आत्मसंयम की बड़ी कमजोरी से होना माना जाता है जो छोटे से कार्यक्रम में भी जरूरी होती है। लोग आगे आने के लिए संयम तोड़ बेठते हैं और नतीजन हादसे हो जाते है। अक्सर धार्मिक आयोजनों में ऐसे स्थानों पर सुरक्षा व्यवस्था केवल नियंत्रण भर की होती है लेकिन इस हादसे के बाद अब उसका सख्त होना बहुत जरूरी हो गया है। भीड़ प्रबंधन के माकुल इंतजाम एक व्यवहारिक आचार संहिता के जरिए तय किए जाने चाहिए जिससे धार्मिक आयोजन सुरक्षित और गरिमापूर्ण बने रहें ही और हादसों से उन्हें कलंकित होने से भी बचाया जा सके।

- **अमृतलाल मारू,** इंदौर

केजरीवाल का चरित्र

शीला दीक्षित से रॉबर्ट वाड्रा सहित कांग्रेस के नेतृत्व के प्रति भ्रष्टाचार के आरोपों की झड़ी, जनलोकपाल से लेकर कांग्रेस से कैसा भी गठजोड़ नहीं करने के लिए अपने ही बच्चों की शपथ, सरकारी गाड़ी, सुरक्षा और निवास न लेने का संकल्प, नितिन गडकरी पर आरोप मढ़ने से बाद में क्षमायाचना की कथा, पंजाब विधानसभा चुनाव में अकाली नेता विक्रम मजीठिया पर पंजाब में नशा व्यापार का आरोप फिर माफी। आम आदमी पार्टी के नेता अरविन्द केजरीवाल का यही चरित्र है इसलिए जब उसने हरियाणा द्वारा दिल्ली के पानी को विषैला बनाने का दावा किया तो आश्चर्यचकित होने की अपेक्षा ऐसे राजनेता को राजनीति से विलग कर देना मतदाता का दायित्व है और चुनाव आयोग का भी । झूठ, पाखण्ड, अराजकता, धूर्तता, कुटिलता ही केजरीवाल के राजनीतिक उपकरण हैं । प्रारम्भ से ही इसकी कोई भी बात विश्वसनीय नहीं है। बस कुछ (बिजली, पानी आदि) मुफ्त बांटने के अतिरिक्त। दुर्भाग्य से भ्रष्टाचार के गम्भीर आरोपों के रहते भी सुप्रीम कोर्ट ने केजरीवाल व उसके गिरोह जनों को जेल से बाहर निकाल दिल्ली के सामाजिक राजनैतिक वातावरण में प्रदूषण को बनाए रखने का काम किया है। सब जानते हैं कि सुप्रीम जज किस आधार पर निर्णय लेते हैं, सब जानते हैं सुप्रीम जजों और अभिषेक मनु सिंघवी - कपिल सिब्बल का गठजोड़ ।

- **डॉ जय प्रकाश**, अंबाला छावनी

मिलावटखोरी की समस्या

भारत अपनी प्रगति, सांस्कृतिक विरासत और आर्थिक विकास के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध है, लेकिन मिलावटखोरी जैसी कुप्रथाएं इसकी छवि को गंभीर रूप से नुकसान पहुंचा रही हैं। हाल ही में, मध्य प्रदेश में मिलावटी दूध और उससे बने उत्पादों की आपूर्ति से जुड़ा मामला सामने आया, जिसमें ईडी ने नौ स्थानों पर छापेमारी की। चौंकाने वाली बात यह है कि इन मिलावटी उत्पादों की आपूर्ति न केवल देश में, बल्कि विदेशों तक भी की जा रही थी। इससे आम जनता के स्वास्थ्य के साथ-साथ भारत की वैश्विक साख को भी खतरा है। मिलावटी खाद्य पदार्थों, विशेषकर दूध और दुग्ध उत्पादों, का सेवन अत्यंत हानिकारक होता है। इनमें मिलाए गए रसायन गंभीर बीमारियों का कारण बन सकते हैं। यदि भारत से निर्यात किए गए उत्पादों में मिलावट पाई जाती है, तो इससे अंतरराष्ट्रीय बाज़ार में भारतीय खाद्य उद्योग की विश्वसनीयता को गहरा आघात लगेगा। यह समस्या सिर्फ दूध तक सीमित नहीं है, बल्कि मसाले, मिठाइयां और अन्य खाद्य पदार्थ भी इसकी चपेट में हैं। मिलावट का यह जाल जितना विस्तृत होता जा रहा है, उतना ही यह देश की साख और आम जनता के स्वास्थ्य के लिए घातक सिद्ध हो रहा है। सरकार कड़े कदम उठा रही है, लेकिन जब तक जनता जागरूक नहीं होगी और सख्त कार्रवाई नहीं होगी, यह बुरी प्रथा जारी रहेगी।

- **आर के जैन**, बड़वानी

इस ओर भी ध्यान दें!

समय के साथ सुविधाओं के तौर तरीके बदले हैं अब लगभग सामान्य जरूरत की सभी चीजें होम डिलीवरी के लिए उपलब्ध हैं। बाजार में प्रतिस्पर्धा बढ़ रही है और प्रतिस्पर्धा में भी सबसे तेज पहुंचने की होड़ में लगभग हर कोई आगे निकलना चाहता है। पिज्जा तीस मिनट में आपके घर पहुँचने की गारंटी दी जाती है , अगर थोडी सी भी देर हो जाए तो हम डिलीवरी पहुंचाने वाले व्यक्ति पर नाराजगी ज़ाहिर करते हैं लेकिन क्या हमने समय पर हर चीज पहुंचाने वाले इन लोगों की सुरक्षा और स्वास्थ्य के बारे में कभी सोचा है ? आजकल डिलीवरी सेवा देने वाले कर्मचारियों पर दबाव बढ़ चुका है। उन्हें समय पर हर चीज पहुंचाने की जिम्मेदारी दी जाती है, लेकिन इस प्रक्रिया में उनकी सुरक्षा और स्वास्थ्य अक्सर अनदेखा कर दिया जाता है। अक्सर देखा जाता है कि इन डिलीवरी कर्मचारियों को ट्रैफिक, मौसम, या अन्य जोखिमों का सामना करते हुए तेज़ी से पहुंचने की कोशिश करनी पड़ती है, जिससे उनका मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। अगर किसी डिलीवरी कर्मचारी को चोट लगती है या वह थकान ग्रस्त होता है, तो उस पर किसी का ध्यान नहीं जाता।

- **नितिन रावत**, फिरोज़ाबाद

पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से responsemail.hindipioneer@gmail.com पर भी भेज सकते हैं।

विश्व शांति का मार्ग प्रशस्त करती है बापू की शिक्षा व त्यागमय जीवनः मुख्यमंत्री

● सीएम योगी ने महात्मा गांधी की पुण्यतिथि पर बच्चों के साथ दी स्वरांजलि

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गुरुवार को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की पुण्यतिथि पर जीपीओ स्थित उनकी प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। इस दौरान बच्चों ने बापू की पुण्यतिथि पर स्वरांजलि दी। सीएम योगी भी बच्चों के साथ स्वरांजलि में हिस्सा लिया।

इसी के साथ ही उन्होंने महात्मा गांधी को याद करते हुए अपने एक्स अकाउंट पर लिखा 'स्वाधीनता आंदोलन के महानायक, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की पुण्यतिथि पर उन्हें शत-शत नमन! श्रद्धेय बापू की शिक्षाएं और उनका त्यागमय जीवन विश्व शांति का मार्ग प्रशस्त करते हैं। आइए, बापू के दिखाए सत्य, अहिंसा व स्वदेशी के मार्ग पर चलकर हम सभी नए भारत-विकसित भारत के निर्माण हेतु संकल्पित हों।' सीएम योगी ने बच्चों के साथ स्वारांजलि में हिस्सा लिया। इस दौरान बच्चों 'रघुपति राघव राजाराम...', वैष्णव जन तो तेने कहिये जे पीड़ परायी जाणे रे...' जैसे गीतों को मधुर स्वर में प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के बाद सीएम योगी ने बच्चों के साथ फोटो भी खिंचाई। इस दौरान महापौर सुषमा खर्कवाल, विधायक नीरज बोरा, राजेश्वर सिंह, अमरेश कुमार, विधान परिषद सदस्य लाल जी प्रसाद निर्मल आदि गणमान्य लोगों ने भी बापू को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनकी प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की।

96 घंटे में 65 लाख श्रद्धालु पहुंचे अयोध्या

सुरक्षा के लिहाज से अर्द्धसैनिक बल तैनात

● मुख्यमंत्री रोजाना कर रहे अयोध्या में व्यवस्थाओं की समीक्षा

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/ अयोध्या

मौनी अमावस्या पर प्रयागराज में पुण्य की डुबकी लगाने के बाद शाम से ही श्रद्धालुओं के अयोध्या आने का शुरू हुआ सिलसिला गुरुवार दोपहर बाद तक जारी रहा। आलम यह रहा कि रातों-रात अयोध्या की सड़कें श्रद्धालुओं से खचाखच भर गईं। भोर होते ही जय श्रीराम के जयकारों से अयोध्या गुंजायमान हो गई। जानकारों के मुताबिक 96 घन्टे में करीब 65 लाख श्रद्धालु अयोध्या पहुंच चुके हैं। उधर, बढ़ती भीड़ देखकर नगर के वरिष्ठ अधिकारियों ने मोर्चा संभाल लिया। रातभर पैदल निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लेते रहे।

प्रयागराज में मौनी अमावस्या पर स्नान करने के बाद श्रद्धालु सीधे रामनगरी पहुंच रहे हैं। आंखों में श्रद्धा व सिर पर गठरी लिए श्रद्धालुओं का रेला उमड़ पड़ा है। भोर में चार बजे से सरयू के घाटों पर स्नान शुरू हो गया। इसके बाद श्रद्धालुओ ने हनुमानगढ़ी व राम मंदिर का रुख किया। रामपथ और भक्तिपथ पर श्रद्धालुओं का सैलाब देख हर कोई अचंभित दिखा। आराध्य के दर्शन पाने को श्रद्धालु देर रात तक कतार बद्ध दिखे। एक अनुमान के मुताबिक राममंदिर में रोजाना तीन लाख व हनुमानगढ़ी में श्रद्धालु दर्शन को पहुंच रहे हैं। इसके लिए मंदिर में दर्शन का समय बढ़ाकर लगभग 18 घण्टे कर दिया गया है। वहीं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ अयोध्या में जिला प्रशासन को समय-समय पर निर्देशित भी कर रहे हैं। इसका नतीजा यह है कि अधिकारी से लेकर कर्मचारी तक श्रद्धालु की सेवा में जुटे हुए हैं। श्रद्धालुओं को राम जन्मभूमि परिसर में पुलिस की तरफ से पानी पिलाया जा रहा है।

इसके अलावा सेहत का ख्याल रखने के लिए मंदिर परिसर में मेडिकल कैंप की भी व्यवस्था की गई है। राम मंदिर ट्रस्ट के कर्मचारी और वालंटियर श्रद्धालुओं की सेवा में तैनात कर दिए गए हैं। अयोध्या आने वाले मुख्य मार्ग के थाने और चौकियों के साथ रेलवे से संपर्क कर श्रद्धालुओं की संख्या का पूर्वानुमान भी लगाया जा रहा है। रामनगरी में लगातार बढ़ रही श्रद्धालुओं की संख्या को देखते हुए सुविधा के लिए व्यापक इंतजाम किए गए हैं। गोंडा, अंबेडकरनगर, सुल्तानपुर और लखनऊ रोड होल्डिंग एरिया बना दिया गया है, ताकि भीड़ बढ़ने पर श्रद्धालुओं को वहां रोका जा सके। वहीं केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, गोवा, महाराष्ट्र और गुजरात से बड़ी से संख्या में श्रद्धालु दर्शन को अयोध्या पहुंच रहे हैं। महाकुंभ से भारी संख्या में रेलमार्ग से भी अयोध्या में श्रद्धालुओं का आगमन हो रहा है। अयोध्या आने वाले श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए नगर आयुक्त संतोष कुमार शर्मा द्वारा शाम को रेलवे स्टेशन कैंट के आस-पास और गुरु गोविंद सिंह चौराहे पर लाउड स्पीकर के माध्यम से अपील की गई है कि वे रेलवे स्टेशन कैंट के निकट बने आश्रय स्थल में ही ठहरें। यह अनुरोध श्रद्धालुओं के ठहरने के लिए सुरक्षित और सुविधाजनक स्थान प्रदान करने के उद्देश्य से किया गया।

जिले के वरिष्ठ अधिकारी ग्राउंड जीरो पर मौजूद हैं। लगातार समुचित दर्शन की व्यवस्था बनाए हुए हैं। शहर में एडीजी जोन लखनऊ एसबी शिरोडकर आईजी प्रवीण कुमार और कमिश्नर गौरव दयाल जिलाधिकारी चंद्र विजय सिंह, एसएसपी राजकरण नैयर ने कमान संभाल रखी है।

अयोध्या के दो धार्मिक स्थलों के पर्यटन विकास के लिए दो करोड़ की धनराशि स्वीकृत

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

● धार्मिक स्थलों का विकास हमारी प्राथमिकता, श्रद्धालुओं के हित में लेंगे निर्णयः जयवीर सिंह

पवित्र नगरी अयोध्या में भगवान श्रीराम के विराजमान होने के बाद देश विदेश से बड़ी संख्या में श्रद्धालु एवं पर्यटक दर्शनार्थ पधार रहे हैं। यहां लगातार श्रद्धालुओं की संख्या में वृद्धि हो रही है। इसको दृष्टिगत रखते हुए अयोध्या के आसपास स्थित धार्मिक स्थलों पर बुनियादी सुविधाएं विकसित की जा रही हैं। इसी क्रम में अयोध्या जनपद के लिए लगभग 2 करोड़ रुपए की दो पर्यटन विकास योजनाएं स्वीकृत की गयी हैं। इस धनराशि में से 1 करोड़ 20 लाख रुपए अवस्थापना सुविधाओं के लिए जारी कर दिये गये हैं।

पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने बताया कि अयोध्या के मसूदा विकासखंड के ग्राम अबानपुर सरोहा में ग्रामीण पर्यटन के अंतर्गत थीमेटिक गेट एवं पर्यटन सुविधाओं का विकास किया जाएगा। इसके लिए एक करोड़ रुपए स्वीकृत हुए हैं, जिसमें 60 लाख रुपए जारी किए जा चुके हैं। स्वीकृत राशि में यात्री शेड, कॉमन टॉयलेट, सैन्ड स्टोन फ्लोरिंग, स्टोन बेंच, गेट, साइनेज एवं सोलर लाइट का कार्य व पर्यटक सुविधाएं आदि विकसित की जाएंगी। उन्होंने बताया कि पूरे प्रदेश के 75 जनपदों में स्थित पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण धार्मिक स्थलों के आसपास बुनियादी सुविधाओं के विकास को प्राथमिकता दी जा रही है। पर्यटन मंत्री ने बताया कि भगवान राम की नगरी अयोध्या की पवित्र भूमि पर महंत रामदीन दास करीब 150 वर्ष पूर्व आए थे। उन्होंने यहीं तपस्या की थी। इसलिए यह कुटी तपोस्थली के नाम से प्रसिद्ध है। यह मंदिर धार्मिक एवं पौराणिक है। यहां वर्ष में कई मेलों का आयोजन होता है, जिसमें स्थानीय, क्षेत्रीय एवं ग्रामीण लोग बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हैं। दीपोत्सव, चैत राम नवमी, सावन झूला मेला एवं कार्तिक पूर्णिमा मेला के अवसर पर श्रद्धालुओं का आवागमन जारी रहता है। उन्होंने बताया कि पर्यटन सेक्टर में असीमित संभावनायें हैं। इसको देखते हुए राज्य सरकार ने जनपद के कम से कम एक अथवा अधिक पर्यटन स्थलों को पर्यटन मैप पर लाने का प्रयास कर रही है।

यूपी के ग्रामीण युवाओं का हुनर देखेगा देश

लखनऊ। उत्तर प्रदेश कौशल विकास मिशन के तत्वावधान में आगरा में दो दिवसीय क्षेत्रीय कार्यशाला का शुभारंभ हुआ। दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना 2.0 और आरएसईटीआई 2.0 के अंतर्गत आयोजित इस कार्यशाला में आठ राज्यों के प्रतिनिधि कौशल विकास के नए आयामों पर मंथन कर रहे हैं। कार्यशाला की अध्यक्षता ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार के संयुक्त सचिव पंकज यादव ने की। इस अवसर पर मिशन निदेशक अभिषेक सिंह, एमडी/सीईओ, एसआरएलएम/एसएसडीएम, आरएसईटीआई और अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे। कार्यशाला में उत्तर प्रदेश सहित अन्य आठ राज्य/ केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, उत्तराखंड और लद्दाख के प्रतिनिधि भाग ले रहे हैं। डीडीयूजीकेवाई के अंतर्गत संचालित योजनाओं में ग्रामीण युवाओं को निरूशुल्क प्रशिक्षण, आधुनिक कक्षाएं, लैब, आवास, भोजन, प्रशिक्षण सामग्री और यूनिफॉर्म जैसी सुविधाएं दी जा रही हैं। इस कार्यशाला के माध्यम से युवाओं को अधिक रोजगारपरक कौशल से जोड़ने और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के तरीकों पर विस्तार से चर्चा हो रही है।

शहीद दिवस पर मुख्यमंत्री ने स्वतंत्रता संग्राम में वीरगति पाने वाले अमर शहीदों को किया नमन

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

● दीप प्रज्ज्वलित कर की गोमती मैया की पूजा-अर्चना, सुने भजन

शहीद दिवस के अवसर पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने लखनऊ स्थित गोमती नदी के तट पर बने शहीद स्मारक स्थल पहुंचकर महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित की। इस मौके पर उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में वीरगति प्राप्त अमर शहीदों को भी नमन किया और गोमती नदी में दीपदान कर राष्ट्र की एकता व शांति के लिए प्रार्थना की।

इस विशेष अवसर पर भजन संध्या का भी आयोजन किया गया, जिसमें भक्तिमय वातावरण बना रहा। भजन गायकों ने श्रीराम स्तुति 'श्रीराम चंद्र कृपालु भज मन', 'वैष्णव जन तो तेने कहिए' और 'रघुपति राघव राजा राम' जैसे भजनों की मनमोहक प्रस्तुति दी। कार्यक्रम के अंत में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने यहां दीप प्रज्ज्वलित किया फिर गोमती मैया की पूजा-अर्चना भी की। इस दौरान कैबिनेट मंत्री संजय निषाद, महापौर सुषमा खर्कवाल, विधायक नीरज बोरा, योगेश शुक्ल, जय देवी, ओपी श्रीवास्तव, विधान परिषद सदस्य लाल जी प्रसाद निर्मल आदि गणमान्य उपस्थित रहे।

महाकुम्भ दुर्घटना की जांच के लिए गठित न्यायिक आयोग ने कार्यभार संभाला

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

प्रयागराज महाकुंभ में मौनी अमावस्या के मौके पर हुई दुर्घटना के कारणों की पड़ताल के लिए गठित तीन सदस्यीय न्यायिक आयोग ने कामकाज शुरू कर दिया है। आयोग के तीनों सदस्य गुरुवार को लखनऊ के जनपथ स्थित अपने कार्यालय पहुंचे। आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति (सेवानिवृत्त) हर्ष कुमार ने बताया, क्योंकि जांच को प्राथमिकता के आधार पर लिया जाना है इसलिए हमने घोषणा के कुछ ही घंटों के भीतर कार्यभार संभाल लिया है। उन्होंने कहा, हमारे पास एक महीने का समय है, लेकिन फिर भी हम जांच को तेजी से पूरा करने की कोशिश करेंगे। आयोग के अध्यक्ष ने यह भी कहा कि वह जल्द ही प्रयागराज का दौरा करेंगे। बता दें कि प्रयागराज महाकुंभ में मौनी अमावस्या के मौके पर स्नान के लिए उमड़ी भीड़ में भगदड़ की स्थिति बन गई, जिसमें 30 लोगों की मौत हो गई थी और 60 अन्य घायल हो गए थे। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने हादसे की जांच के लिए तीन सदस्यीय न्यायिक आयोग का गठन किया था। इलाहाबाद उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायमूर्ति हर्ष कुमार की अध्यक्षता वाले इस आयोग में सेवानिवृत्त आईएएस अफसर डी. के. सिंह और सेवानिवृत्त आईपीएस अधिकारी वी. के. गुप्ता भी शामिल हैं। आयोग को अपने गठन के एक महीने के अंदर मामले की जांच रिपोर्ट देनी होगी। इस सिलसिले में जारी अधिसूचना के मुताबिक आयोग भगदड़ के कारणों और परिस्थितियों की जांच करेगा। साथ ही भविष्य में ऐसी घटना की पुनरावृत्ति रोकने के सिलसिले में सुझाव भी देगा।

आधा दर्जन जैन विभूतियों को आज सम्मानित किया जाएगा

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

संस्कृति विभाग उप्र के अधीन जैन विद्या शोध संस्थान का 34वां स्थापना दिवस समारोह 31 जनवरी, 2025 को पूर्वान्ह 11 बजे अन्तरराष्ट्रीय बौद्ध शोध संस्थान, गोमतीनगर में आयोजित किया गया है। इस अवसर पर 6 जैन विद्वान विभूतियों को निजी सहभागिता के आधार पर जैन विद्वानों को विभिन्न श्रेणियों में पुरस्कार एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया जाएगा।

इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री जयवीर सिंह जैन विद्वानों को सम्मानित करेंगे। पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने बताया कि तीर्थंकर ऋषभदेव सम्मान से प्रो. राजा राम जैन, नोएडा, तीर्थंकर महावीर अहिंसा सम्मान से डॉ. पत्रिका जैन, लखनऊ, आचार्य कुन्दकुन्द सम्मान से डॉ. सचिन्द्र जैन, मंगलायतन, अलीगढ़, भरत चक्रवर्ती सम्मान से डॉ. ज्योति जैन, मुजफ्फरनगर, गणेश प्रसाद वर्णी श्रुत आराधक सम्मान से डॉ. पंकज जैन (भोपाल) और श्रुत संवर्धन सम्मान से जैन अमन अकलंक को सम्मानित किया जाएगा। पर्यटन मंत्री ने बताया कि निजी सहयोग से पहली बार संस्कृति विभाग के जैन संस्थान द्वारा तीर्थंकर महावीर मोक्षकल्याणक वर्ष 2024 सम्मान प्रारंम्भ किया गया है। ये सम्मान प्रति वर्ष प्रदेश के जैन धर्म-संस्कृति के विद्वानों को प्रदान किया जाएगा, जो जैन धर्म, संस्कृति और विद्या के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान देने और समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए निरंतर कार्य कर रहे हैं। तीर्थंकर ऋषभदेव सम्मान के तहत स्मृति चिह्न, अंगवस्त्र के साथ एक लाख रुपए की धनराशि प्रदान की जाएगी। वहीं, तीर्थंकर महावीर अहिंसा सम्मान और आचार्य कुन्दकुन्द सम्मान के अंतर्गत स्मृति चिह्न, अंगवस्त्र के साथ 51-51 हजार रुपए की धनराशि दी जाएगी। जयवीर सिंह ने बताया कि भरत चक्रवर्ती सम्मान के अंतर्गत स्मृति चिह्न, अंगवस्त्र के साथ 31 हजार रुपये तथा गणेश प्रसाद वर्णी श्रुत आराधक सम्मान और श्रुत संवर्धन सम्मान के अंतर्गत स्मृति चिह्न, अंगवस्त्र के अलावा 21-21 हजार रुपए की धनराशि प्रदान की जाएगी। सम्मान समारोह में युवाओं को प्रोत्साहित करने के लिए विभिन्न विद्यालयों के छात्रों के बीच प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाएगा। विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र भी दिया जाएगा।

कमता चौराहे पर ट्रैफिक जाम की समस्या से निजात के लिए मेट्रो को भी नोटिस

विधि संवाददाता। लखनऊ

कमता चौराहे पर जाम की समस्या से निजात के लिए दाखिल जनहित याचिका में हाईकोर्ट की लखनऊ खंडपीठ ने मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन को भी पक्षकार बनाते हुए उसे नोटिस जारी करने का आदेश दिया है। जस्टिस एआर मसूदी एवम जस्टिस सुभाष विद्यार्थी की पीठ ने यह आदेश अवध बार एसोसिएशन की एक जनहित याचिका पर दिया है। वर्ष 2017 में दाखिल इस याचिका पर पिछली सुनवाई के दौरान ही पीठ ने कहा था कि मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन का कोई जिम्मेदार अधिकारी भी ट्रैफिक समस्या से निजात का हल तलाशने वाली कोर टीम में होना चाहिए। ताकि भविष्य में मेट्रो रेल को लेकर कोई बाधा उत्पन्न न हो। पीठ ने यह भी कहा था कि शहीद पथ से कमता पर आने वाली ट्रैफिक सर्विस लेन पर शिफ्ट होने और संकरे सर्विस लेन के कारण जो अव्यवस्था फैलती है उसके समाधान की आवश्यकता है। कमता चौराहे पर शहीद पथ व एयरपोर्ट पॉलिटेक्निक से अयोध्या रोड आदि का पूरा ट्रैफिक आकर मिलता है। जिसकी वजह से यह चौराहा बॉटलनेक में तब्दील हो जाता है। पीठ ने एलडीए को आदेश भी दिया कि इन बातों को ध्यान में रखते हुए और विस्तृत व लंबे समय तक टिकने वाले समाधान की आवश्यकता है।

महाकुंभ हादसे के लिए प्रदेश व केंद्र की भाजपा सरकारें जिम्मेदारः अखिलेश यादव

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

अखिलेश यादव ने प्रयागराज महाकुंभ में हुई घटना को बेहद दुःखद बताते हुए कहा कि इसके लिए भाजपा की प्रदेश और केन्द्र दोनों की सरकारें जिम्मेदार हैं। यादव ने कहा कि प्रयागराज में जो कुछ हुआ है, श्रद्धालुओं की जान गयी है, लोगों ने अपनो को खोया है उसकी जिम्मेदारी सरकार की है। भाजपा सरकार इस जिम्मेदारी से बच नहीं सकती है।

अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा सरकार ने महाकुंभ का जितना प्रचार किया उतना इंतजाम नहीं किया। इंतजाम अच्छे होते तो यह घटना नहीं होती। मृतकों के परिजनों के लिए मुआवजा राशि 25 लाख रुपये कम है और मदद करनी चाहिए। साथ ही साथ जिन श्रद्धालुओं की मौत हुई है और जो श्रद्धालु लापता हैं, सबकी सूची जारी करनी चाहिए। क्योंकि आशंका बहुत है, लोगों में कन्फ्यूजन है, वह तभी दूर होगा जब पूरी सूची जारी होगी। गुरुवार को दिल्ली दौरे के दौरान मीडिया के सवालों का जवाब देते हुए अखिलेश यादव ने कहा कि केवल यह कह देना कि वीआईपी वजह से इतनी बड़ी घटना हो गयी यह दुर्भाग्यपूर्ण है। सरकार दावा कर रही कि दस हजार करोड़ का बजट दिया है। हर तरह की सुरक्षा व्यवस्था का दावा है, डबल इंजन की सरकार आयोजन में लगी है, व्यवस्था में अगर कोई कमी नहीं है तो इतने लोगों को कैसे जान गवांनी पड़ी। अखिलेश यादव ने कहा कि कुंभ में हुए हादसे की जानकारी हमें रात में 2 बजकर 48 मिनट पर हुई थी, तो मुख्यमंत्री जी और सरकार को तो जानकारी और पहले हो गयी होगी। लेकिन दुर्भाग्य है कि इतनी बड़ी दुखद घटना के बाद सुबह-सुबह मुख्यमंत्री जी का जो ट्विूट आया उसकी कोई कल्पना नहीं कर सकता है कि सरकार ऐसा ट्विूट कर सकती है। अखिलेश ने कहा कि सरकार महाकुंभ में आने के लिए खुद न्यौता और कार्ड बांट रही थी, जबकि अभी तक कभी कुंभ में आने के लिए कार्ड या न्यौता नहीं बांटे जाते थे। जितना भी पौराणिक और ऐतिहासिक रिकार्ड है, कभी किसी को कार्ड नहीं दिया गया। श्रद्धालु स्वयं अपनी आस्था से कुंभ में स्नान के लिए आते हैं। स्नान, दान के लिए लोग जाते हैं। सरकार ने कार्ड वीआईपी को दिया था। जिन श्रद्धालुओं की भगदड़ में जान गयी है, उन्हें कार्ड नहीं मिला था। ये लोग सरकार की वजह से कुंभ नहीं आये थे, वे अपनी भावना और आस्था से कुंभ आये थे।

'हर घर मछलीघर' की परिकल्पना को मूर्त रूप दे रहीं ग्रामीण महिलाएं

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

आईसीएआर-नेशनल ब्यूरो ऑफ फिश जेनेटिक रिसोर्सेज (आईसीएआर-एनबीएफजीआर) अपनी अनुसूचित जाति उप योजना (एससीएसपी) परियोजना के माध्यम से मिशन नवशक्ति 2.0 के साथ ग्रामीण परिवर्तन का नेतृत्व कर रहा है। आठ गांवों में फैले 13 स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) की 51 महिलाएं उन्नाव जिले के औरास और हसनगंज ब्लॉक के डोहरा, चिरैया, मीठेपुर, बम्बनाखेड़ा, ऊंचद्वार, सिगनापुर, नवई, बाराखेड़ा और मीरखेड़ा। नारी शक्ति, जय अंबे, जय मां लक्ष्मी, ज्योति स्वामी, कमल, महिला सरस्वती, जय बालाजी, जय हनुमान, जय संतोषी मां, सुघरदास बाबा, ओराश, राधास्वामी और पूजा एसएचजी से जुड़ी महिलाएं आईसीएआर की एक एक्सपोजर यात्रा पर निकलीं। महिलाएं जिन्होंने पहले ही एक्वावर्ल्ड, हाईटेक फिशरीज, केवीके उन्नाव और आईसीएआर-एनबीएफजीआर के सहयोग से केवीके उन्नाव में कौशल विकास प्रशिक्षण पूरा कर लिया है, अब बाजार की जरूरतों के अनुरूप नए उत्पाद बनाने के लिए प्रणालीगत डिजाइन सोच को लागू कर रही हैं। इस संरचित दृष्टिकोण के माध्यम से, वे शहरी घरों और कार्यालय स्थानों के लिए सूक्ष्म और नैनो एक्वेरियम विकसित कर रहे हैं, जो 'हर घर मछली घर' की परिकल्पना को मूर्त रूप देते हैं, जो सजावटी एक्वेरियम को आधुनिक जीवन का एक अभिन्न अंग बनाना चाहता है।

प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय में महात्मा गांधी के बलिदान दिवस पर अर्पित की गई श्रद्धांजलि

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के बलिदान दिवस (30 जनवरी) के मौके पर प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय में पूर्वान्ह 10:59 बजे सायरन बजते ही कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एवं पूर्व विधायक श्याम किशोर शुक्ला के नेतृत्व में वरिष्ठ नेताओं एवं कार्यकर्ताओं द्वारा दो मिनट मौन रखकर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गयी।

इसी क्रम में आज दिल्ली के राजघाट स्थित राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की समाधि स्थल पहुंचकर उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष, पूर्व मंत्री अजय राय ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए भावभीनी श्रद्धांजलि दी। इस मौके कांग्रेस सांसद तनुज पुनिया, इमरान मसूद एवं पूर्व सांसद प्रदीप जैन आदित्य मुख्य रूप से मौजूद रहे। इस अवसर पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता पूर्व विधायक श्याम किशोर शुक्ल की तथा संचालन बृजेन्द्र कुमार सिंह ने किया। सर्वप्रथम सभी नेताओं ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के चित्र पर माल्यार्पण कर श्रद्धासुमन अर्पित किया। तदुपरान्त विचार गोष्ठी को सम्बोधित करते हुए पूर्व विधायक श्याम किशोर शुक्ला ने कहा कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के मूल्यों और आदर्शों की आज पूरी दुनिया में पूजा हो रही है। लेकिन बड़े दुख की बात है कि मौजूदा सरकार के समर्थन में कुछ ऐसे तत्व हैं जो राष्ट्रपिता की हत्या करने वाली विचारधारा का संरक्षण करते हैं।

हिन्दी संस्थान के अभिनन्दन पर्व पर आज नौ बाल साहित्यकारों को किया जाएगा सम्मानित

लखनऊ। उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा अभिनन्दन पर्व के अवसर पर कल शुक्रवार 31 जनवरी, 2025 को पूर्वाह्न 11 बजे से हिन्दी भवन के निराला सभागार में वर्ष 2023 के निमित्त नौ बाल साहित्यकारों को सम्मानित किया जाना है। हिन्दी संस्थान की प्रधान संपादक डॉ. अमिता दुबे न बताया कि बाल साहित्यकारों को राज बहादुर, निदेशक, उप्र हिन्दी संस्थान द्वारा सम्मानित किया जायेगा। बाल साहित्य सम्मान से सम्मानित साहित्यकारों में सुभद्रा कुमारी चौहान महिला बाल साहित्य सम्मान से डॉ करूणा पाण्डे, लखनऊ को, सोहन लाल द्विवेदी बाल कविता सम्मान से डॉ आरपी सारस्वत, सहारनपुर को, अमृत लाल नागर बाल कथा सम्मान से डॉ मोहम्द अरशद खान, शाहजहांपुर को, शिक्षार्थी बाल चित्रकला सम्मान से दिलीप शर्मा, अलीगढ़ को, लल्ली प्रसाद पाण्डेय बाल पत्रकारिता सम्मान से नरेन्द्र निर्मल, गौतमबुद्ध नगर को, डॉ राम कुमार वर्मा बाल नाटक सम्मान स बलराम अग्रवाल, गौतमबुद्ध नगर को, कृष्ण विनायक फड़के बाल साहित्य समीक्षा सम्मान से देवी प्रसाद गौड़, मथुरा को, जगपति चतुर्वेदी बाल विज्ञान लेखन सम्मान से डॉ दीपक कोहली, लखनऊ को तथा उमाकान्त मालवीय युवा बाल साहित्य सम्मान से अनिल कुमार 'निलय', प्रतापगढ़ को सम्मानित किया जायेगा।

डीएम ने ली उद्योग बन्धु समिति की बैठक

संवाददाता। फतेहपुर

जिला स्तरीय उद्योग बन्धु समिति की बैठक कलेक्ट्रेट महात्मा गांधी सभागार में जिलाधिकारी रविन्द्र सिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। उन्होंने निवेश मित्र पोर्टल से संबंधित आवेदनों का निस्तारण ससमय कराने के निर्देश दिए एवं कोई भी प्रकरण डिफॉल्टर न होने पाए का विशेष ध्यान रखे संबंधित अधिकारी। वित्त पोषण योजना के तहत उद्योग स्थापना के लिए जो ऋण बैंक से स्वीकृत हो गए है, उनका जल्द से जल्द वितरण कराना सुनिश्चित करे। साथ ही जो आवेदन लंबित है उनका ससमय निस्तारण कराए।

उन्होंने कहा कि एच0वी0-02 एवं विद्युत उपभोक्ताओं को सुचारू रूप से आपूर्ति हेतु बिन्दकी टाउन से निर्मित 11 केवी दक्षिणी फीडर का लोड बांटने हेतु नए 11 केवी फीडर का निर्माण मुगल रोड पर बिन्दकी टाउन पावर हाउस से सम्राट मोड तक किया जाना है, के लिए जो पोल लगाने के लिए शेष बचे है, को जल्द से जल्द मानक के अनुसार लगवाने के निर्देश अधिशाषी अभियंता विद्युत बिन्दकी को दिए।

राईस मिल तथा कोल्ड स्टोरेज के लिए शांतिनगर बेरूईहार विद्युत उपकेंद्र से विद्युत आपूर्ति की जा रही है में ट्रिपिग का मामला सामने आया जिस पर जिलाधिकारी ने कहा उच्च स्तरीय जांच हेतु संबंधित को पत्राचार करने के निर्देश संबंधितों को दिए। उन्होंने कहा औद्योगिक क्षेत्र मलवा में जिन औद्योगिक प्रतिष्ठानों को स्वच्छ पेय जल की आवश्यकता है के लिए आवेदन करें, सभी आवेदनों को एकत्र के रिपोर्ट से अवगत कराने के निर्देश उपायुक्त उद्योग को दिए। मिनी औद्योगिक स्थान चकहाता को मूलभूत सुविधाओं से विकसित करने के लिए आगणन बनाते हुए कार्यवाही पूरी की जाय।

उन्होंने कहा कि औद्योगिक क्षेत्र में जो भूखंड पूर्व में आवंटित हो गए है परंतु उनमें उद्योग स्थापित नहीं है एवं निरस्तीकरण की श्रेणी में आते है तो निरस्तीकरण की कार्यवाही पूरी की जाये। साथ ही खाली हुए भूखंडो को नियमानुसार कार्यवाही कर उद्योग लगाने के लिए आवंटित किए जाय। औद्योगिक क्षेत्र मलवा में औद्योगिक प्रतिष्ठानों के लिए जो विद्युत लाइन गई है, में विद्युत तार जर्जर है को नियमानुसार कार्यवाही करते हुए जर्जर तार बदलने के निर्देश संबंधित को दिए।

उन्होंने कहा कि ऐसे विद्युत बिल जिसमें टीडीएस/जीएसटी काटा गया है परंतु उनके खाते में प्रदर्शित नहीं हो रहा है कि सूची उपलब्ध कराने के निर्देश संबंधितों को दिए। जेड सर्टिफिक्रेशन के प्रशिक्षण के संबंध में विस्तार से जेड के प्रतिनिधियों ने जानकारी दी और कहा कि जेड प्रमाणन योजना का उद्देश्य यह है कि एम0एस0एम0ई0 के बीच शून्य दोष और शून्य प्रभाव (जेड) विनिर्माण को बढ़ावा देना और निम्नलिखित उद्देशों के साथ उनके प्रमाणन के लिए जेड मूल्यांकन करनादृगुणवत्ता, उपकरण/प्रणाली और ऊर्जा कुशल विनिर्माण के अनुकूल को बढ़ावा देना है एवं इससे होने वाले फायदे के बारे में जानकारी उद्यमियों को दी।

सड़क दुर्घटना में घायल हुए शिक्षक की मौत

मौदहा, हमीरपुर। कस्बे के बीआरसी कार्यालय में परिषदीय विद्यालय के शिक्षक की सड़क दुर्घटना के उपरांत इलाज के दौरान मौत हो गई ।जिसकी शोक सभा बीआरसी कार्यालय में शिक्षक संगठन ने संवेदना प्रकट करते हुए शिक्षा विभाग के अधिकारियों की संवेदनहीनता पर आक्रोश भी जताया। जानकारी के अनुसार तीस जनवरी को बीआरसी मौदहा में सभी शिक्षक संगठनों एवं अध्यापकों के द्वारा स्वर्गीय शिक्षक अजय कुमार पांडेय प्रधानाध्यापक उच्च प्राथमिक विद्यालय कुनेहटा मौदहा के निधन पर शोक संवेदना प्रकट की गई एवं 2 मिनट मौन रहकर उनकी आत्मा की शांति के लिए शिक्षकों ने अपनी अपनी शोक संवेदना व्यक्त की उनके निधन से सारा शिक्षक समाज शोक में डूबा हुआ है। मगर ग्रुप में सूचना प्रेषित करने के बाद भी शिक्षक के आकस्मिक निधन पर जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी हमीरपुर द्वारा किसी भी तरह की शोक संवेदना व्यक्त नहीं की गई।

अनुसूचित जाति वित्त विकास निगम के हाल बेहाल, ऋण की वसूली एक फीसदी से कम

संवाददाता। हमीरपुर

अनुसूचित जाति वित्त विकास निगम द्वारा गरीबों को दिया गया ऋण की वसूली नही हो पा रही है,साढ़े तीन करोड़ रुपये की वसूली के सापेक्ष हमीरपुर जिले से एक फीसदी से भी कम वसूली हुई है लिहाजा पूरे प्रदेश में जिले का 22 वां स्थान मिला है। शासन ने पत्र लिखकर वसूली करने के आदेश दिये है।

जानकारी के मुताबिक अनूसूचित जाति वित्त विकास निगम द्वारा जिले में पिछले कई सालों में अनूसूचित जाति के गरीब लोगो को ऋण वितरण किया गया था जिले में 351.07 लाख रुपये का ऋण वितरित किया गया है जिसमे मार्जिन मनी भी शामिल है। समय समय पर इस मामले में बैठक भी होती रहती है। जिसमे वसूली के सख्त आदेश दिये जाते रहे है,बताया जाता है कि शासन की हुई समीक्षा बैठक में नवंबर 2024 तक केवल .61 फीसदी यानी एक फीसदी से भी कम वसूली हो पायी है। लिहाजा वसूली की श्रेणी में जिले का प्रदेश में 22वां स्थान बताया जाता है। बताया जाता है कि इसमे ज्यादातर लोन बहुत पुराना है,हालाकि शासन ने समाज कल्याण अधिकारी (प्रशासन) को कड़ा पत्र लिखकर वसूली करने को कहा है।

इधर जिले में समाज कल्याण अधिकारी का प्रशासन की सीट कई सालों से खाली चल रही है जिससे वसूली व ऋण देने का काम ठप चल रहा है। हालाकि गरीबों को वित्त विकास निगम से बडा ऋण नही दिया गया है मगर वसूली के लिये प्रयास न करने से स्थिति खराब होती जा रही है। अधिकारियों का कहना है कि समाज कल्याण विभाग के ब्लाकों में जो एडीओ समाज कल्याण होते है उनकी भी जिम्मेदारी होती है कि वसूली जमा करे ताकि राजस्व को बढाया जा सके। इधर वित्त विकास निगम में सहायक प्रबंधक का पद कई सालों से खाली चल रहा है। संबिदा कर्मी के काम करने से वसूली बेहद प्रभावित हो रही है। शासन के इस मामले को जिलाधिकारी ने गंभीरता से लेते हुये सीडीओ को कार्यवाही कर वसूली बढ़ाने के आदेश दिये है।

हालांकि शासन ने वसूली न होने से ऋण की व्यवस्था धीरे धीरे समाप्त करती जा रही है। समाज कल्याण अधिकारी का कहना है कि इस मामले में प्रयास किया जा रहा है। अपार आईडी में लापरवाही करने वाले खंड शिक्षा अधिकारियों के खिलाफ कार्यवाही के आदेश एडी बेसिक द्वारा दिए गए हैं।

152 दिनों से नहर कालोनी में धरना दे रहे ठगी पीड़ित, नहीं हो रही सुनवाई

फतेहपुर। बड्स एक्ट 2019 को लागू करके ठगी पीड़ितों का जमा धन वापस कराए जाने की मांग को लेकर 152 दिनों से लगातार ठगी पीड़ित जमाकर्ता परिवार का धरना नहर कालोनी प्रांगण में चल रहा है। इसके बावजूद अभी तक कोई सुनवाई नहीं हुई। जिस पर गुरूवार को ठगी पीड़ितों ने धरना स्थल पर जमकर नारेबाजी करते हुए आंदोलन को आगे भी जारी रखने का ऐलान किया। धरना दे रहे ठगी पीड़ितों की अगुवई कर रहे संगठन के राष्ट्रीय संयोजक मदन लाल आजाद ने कहा कि 152 दिनों से ठगी पीड़ित नहर कालोनी प्रांगण में अपनी आवाज बुलंद कर रहे हैं लेकिन उनकी कोई सुनने वाला नही है। उन्होने कहा कि ठग कंपनीज ने जिले के लोगों को लूटने का काम किया। उन्होने कहा कि ठगी पीड़ित चुप बैठने वाले नहीं है, जब तक उनका बकाया भुगतान नहीं हो जाता तब तक यह आंदोलन जारी रहेगा। राष्ट्रीय संयोजक के नेतृत्व में ठगी पीड़ितों ने जिलाधिकारी को ज्ञापन सौंपकर निवेशकों को उनकी डूबी हुई रकम ब्याज मुआवजा क्षतिपूर्ति के साथ बड्स एक्ट 2019 एवं यूपीपीआईडी एक्ट 2016 के तहत अविलंब वापस कराने के लिए सक्षम अधिकारियों को आवेदन लेने और उन आवेदनों पर विधिसम्मत कार्रवाई करने के आदेश दिए जाएं।

जिलाधिकारी की अध्यक्षता में हुई सड़क सुरक्षा समिति की बैठक

संवाददाता। बांदा

जनवरी जिलाधिकारी श्रीमती जे0 रीभा की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में सड़क सुरक्षा समिति की बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में जिलाधिकारी ने सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाने के लिए पुलिस, परिवहन विभाग द्वारा विद्यालयों में रोड सेफ्टी क्लब का गठन कर बच्चों को सड़क सुरक्षा की जागरूकता के साथ यातायात प्रबन्धन का प्रशिक्षण भी दिलाये जाने के निर्देश दिये। उन्होंने परिवहन विभाग द्वारा समस्त व्यवसायिक वाहनों विशेषकर टैऊक्टर की ट्रालियों में अभियान चलाकर रिफलेक्टर टेप लगाये जाने के निर्देश सम्बन्धित विभागों के अधिकारियों को दिये। उन्होंने शहर के प्रमुख चैराहों कालूकुआं चैराहा, महाराणा प्रताप चैराहा, आदि चैराहों पर टैऊफिक लाइट लगाये जाने के सम्बन्ध में प्रस्ताव तैयार कर शीघ्र प्रस्तुत करने के निर्देश लोक निर्माण विभाग, आरटीओ एवं पुलिस विभाग के अधिकारियों को दिये।

उन्होंने मार्गवार हुई दुर्घटनाओं की समीक्षा करते हुए सड़क मार्ग में होने वाली दुर्घटनाओं की सूचना प्राप्त होने पर तत्काल सहायता उपलब्ध कराने के निर्देश दिये। उन्होंने कोतवाली नगर बॉदा नरैनी मार्ग में अधिक सड़क दुर्घटनायें होने पर सड़क सुरक्षा हेतु आवश्यक उपाय किये जाने के निर्देश सम्बन्धित विभागों के अधिकारियों को दिये। उन्होंने ओवरलोड वाहनों पर नियंत्रण हेतु परिवहन विभाग द्वारा प्रवर्तन की कार्यवाही किये जाने के निर्देश दिये। उन्होंने ओवरलोड वाहनों के विरूद्ध कडी कार्यवाही किये जाने हेतु पुलिस एवं परिवहन विभाग के अधिकारियों को निर्देशित किया।

उन्होंने अधिक संख्या में संचालित हो रहे ई रिक्शा द्वारा जाम की समस्या के निदान हेतु शहर के मुख्य चैराहों को जोडकर ई-रिक्सा के लिए एकल दिशा मार्ग बनाये जाने के निर्देश परिवहन व पुलिस विभाग के अधिकारियों को दिये। उन्होंने जनपद के समस्त कार्यालयों के अधिकारियों/कर्मचारियों को हेलमेट पहनने तथा चार पहिया वाहन के संचालन मे सीटबेल्ट लगाये जाने के निर्देश दिये तथा पेट्रोल पम्पों पर हेलमेट के स्टाल क्रय हेतु लगाये जाने के निर्देश दिये।

शहादत दिवस पर कांग्रेसियों ने बापू को किया याद

फतेहपुर। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की 77वीं शहादत दिवस पर जिला व शहर कांग्रेस कमेटी के पदाधिकारियों ने कचेहरी पहुंच कर उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें याद किया। तत्पश्चात बापू के बताए गए रास्ते पर चलने का संकल्प दोहराया। कार्यक्रम के दौरान निवर्तमान जिलाध्यक्ष बीरेंद्र सिंह चौहान ने गांधी जी को सही मायने में ईश्वर का अवतार बताते हुए कहा कि उन्होंने अपने कर्मों के बल पर ही सकल विश्व में अपनी छाप छोड़ी और शांति के बल पर बड़े से बड़े युद्ध को जीतने की प्रेरणा दी। निवर्तमान शहर अध्यक्ष मो0 आरिफ गुड्डा ने कहा कि आज हमारा भारत सत्यमेव जयते शब्द को चरितार्थ करते हुए विश्व में अग्रणी भूमिका निभा रहा है।

क्विक न्यूज

दो सड़क दुर्घटनाओं में एक अधेड़ और एक बालिका की मौत

संडीला, हरदोई। अलग-अलग हुई दो सड़क दुर्घटनाओं में एक बालिका समेत दो लोगों की मौत हो गयी। प्राप्त जानकारी के अनुसार कोतवाली संडीला के अंतर्गत शुक्लाहार निवासी 50 वर्षीय परमेश्वर पुत्र रामकुमार देर शाम साइकिल से दूध बेचने जा रहे थे। बेनीगंज संडीला मार्ग पर बहादुरपुर बरगद तिराहे के पास एक तेज रफ्तार कार ने उनकी साइकिल को टक्कर मार दी जिससे वे गंभीर रूप से घायल हो गए। इनकी इलाज के दौरान दुखद मौत हो गयी। दूसरी दुर्घटना नया गांव करीम नगर मार्ग पर हुई। बताया जाता है कि नया गांव से जा रहा एक ई-रिक्शा एक बच्चे को बचाने के लिए अनियंत्रित हो गया और सड़क के किनारे खड़ी हुई संदीप पाल की पुत्री आस्था पर जाकर पलट गया। इसके नीचे वह बालिका दब गयी। ग्रामीणों ने रिक्शा सीधा करके बालिका को उसके नीचे से निकाला। उसे पहले सीएचसी लाया गया जहां से उसे ट्रॉमा सेंटर भेजा गया। रास्ते में ही आस्था की मौत हो गयी।

अमर जवान चौक की पुर्नस्थापना न होने से नाराज़गी

संडीला, हरदोई। लखनऊ हरदोई रोड पर स्थापित अमर जवान चौक की पुर्नस्थापना की मांग करते हुए जिलाधिकारी को प्रार्थना पत्र भेजे गए हैं। लखनऊ हरदोई रोड पर संडीला चौराहे पर 22 जून 2018 को अमर जवान चौक की स्थापना की गयी थी। इस शुभारंभ तत्कालीन जिलाधिकारी पुल्कित खरे, नपाप के चेयरमैन मो0 रईस अंसारी तथा तत्कालीन पुलिस अधीक्षक विपिन मिश्रा की उपस्थिति में हुई थी। लगभग 6 महीना पूर्व जब नैशनल हाई वे निर्माण प्रारंभ हुआ तो इस चौक को यह आश्वासन देकर हटा दिया गया कि हाई वे निर्माण होते ही यहां पर अमर जवान चौक की स्थापना की जाएगी लेकिन हाई वे निर्माण पूरा होने के बाद भी अभी तक इस चौक की पुर्ननिर्माण के लिए कोई कार्रवाई नहीं की गयी। बताते चलें कि विभिन्न राष्ट्रीय पर्वों पर नगर के प्रबुद्ध लोग तथा स्थानीय नेतागण इस स्थान पर भारत के वीर जवानों को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए आया करते थे। इसकी स्थापना न होने से लोगों में व्यापक नाराज़गी है।

राजस्व विभाग की कार्यवाही से खाली हुई सरकारी जमीन

खागा, फतेहपुर। थाना सुल्तानपुर घोष के अंतर्गत आने वाले राजस्व ग्राम सराएं ऐरायां में सरकारी भूमि पर कब्जा मुक्त कराने हेतु उपजिलाधिकारी एवं तहसीलदार के निर्देशन एवं नायब तहसीलदार के कुशल पर्यवेक्षण में हल्का लेखपाल के साथ ही अन्य राजस्व कर्मियों की उपस्थिति में कब्जे की नियत से बांधी गई तार को जेसीबी से हटवाया है। बताते चलें कि राजस्व ग्राम सराए ऐरायां में गाटा संख्या 186 (रकबा 0.4690 हेक्टेयर) जोकि बंजर भूमि में दर्ज है जिस पर गांव के कुछ लोगों द्वारा कब्जा करने की नियत से तार बांधकर अवैध कब्जा किया गया था जिसकी सूचना पर उच्च अधिकारियों के निर्देशन एवं नायब तहसीलदार विजय प्रकाश त्रिपाठी के कुशल पर्यवेक्षण में राजस्व निरीक्षक कोतला दया सागर, क्षेत्रीय लेखपाल अनामिका सिंह एवं हल्का लेखपाल अतुल कुमार द्वारा अवैध कब्जा हटवाया गया।

विजय-आशीष के साथ ताइक्वांडो टीम लखनऊ रवाना

फतेहपुर। राजधानी लखनऊ के स्टेडियम में आयोजित दो दिवसीय ताइक्वांडो चैंपियनशिप में भाग लेने के लिए जिले से ताइक्वांडो खिलाड़ियों की टीम विजय आशीष के साथ लखनऊ रवाना हो गई। प्रतियोगिता में विजय पताखा फहराकर वापस लौटने पर टीम का फिर स्वागत किया जाएगा। ताइक्वांडो एसोसिएशन ऑफफतेहपुर के चेयरमैन किशन मेहरोत्रा ने टीम के खिलाड़ियों को तिलक लगाकर विजय आशीष के साथ लखनऊ के लिए रवाना किया। उन्होने बताया कि लखनऊ स्थित स्टेडियम में तीस व इक्तीस जनवरी को ताइक्वांडो चैंपियनशिप का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें जिले से ग्यारह खिलाड़ी प्रतिभाग कर रहे हैं। उन्होने बताया कि बचपन स्कूल कॉलक्टरगंज से कर्णिका सिंह, दित्य पांडेय, अंजलि मिश्रा, तनुज बाजपेई, आशु मौर्य, आरव अग्रहरि, वत्सल श्रीवास्तव, सानिध्य कुमार, साक्षी चौधरी, मदर सुहाग पब्लिक स्कूल से दीक्षा सिंह, अनुज साहू, आदर्श वर्मा, कोच भारत वर्मा और शिव कुमार शामिल हैं।

एमपी से अपहरण कर लाई युवती बरामद

सुमेरपुर। मध्य प्रदेश पुलिस स्थानीय पुलिस के साथ मिलकर कस्बे में नवीन गल्ला मंडी के समीप छापा मारकर युवक के साथ युवती को गिरफ्तार कर साथ ले गई है। गुरुवार को सुबह मध्य प्रदेश के मुरैना जनपद की पुलिस थाने में दाखिल हुई और स्थानीय पुलिस को साथ लेकर नवीन गल्ला मंडी के समीप पेट्रोल पंप के पीछे बनी बस्ती में छापा मारकर एक मकान से एक युवक युवती को गिरफ्तार किया। युवक के खिलाफयुवती के अपहरण का मुकदमा मुरैना जनपद के किसी थाने में दर्ज हुआ है। मध्य प्रदेश पुलिस युवक की लोकेशन कस्बे में मिलने के उपरांत यहां पहुंची थी और दोनों को दबोच कर साथ ले गई है।

गांव में हुई पीडीए जनचौपाल में भाजपा पर जमकर बोला गया हमला

संवाददाता। राठ, हमीरपुर

विधानसभा क्षेत्र और विकास खंड राठ के सरगांव में पीडीए जनचौपाल कार्यक्रम में सपानेता राजपूत चंद्रवती वर्मा ने कहा कि भाजपा सरकार धर्म जाति की घिनौनी राजनीति करके मानवता में जहर घोलने का काम कर रही है जो देश हित में नहीं है ऐसी सरकार को उखाड़ फेंकने का काम करना है। पीडीए जनचौपाल के माध्यम से गांव हम लोगो को गांव तक समाजवादी पार्टी की सोच और आम जनता के साथ हो रहे भाजपा द्वारा अन्याय और अत्याचार की तस्वीर से अवगत कराने का उद्देश्य है । उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार ने नये नये तमाम कानून बना दिये जिससे हर आदमी परेशान है। उन्होंने कहा कि इनकी हर योजना केवल धन कमाने और आम जनता का खून चूसना है। उन्होंने गांव में लगने पानी वाली टंकियों बिजली मीटरों पर बोलते हुए कहा कि आज तक गांव में टंकी से पानी नहीं पहुंचा बिजली नहीं मिल रही है लेकिन हजारों के बिल का बोझ गांव की जनता पर डाल दिया। भाजपा रोजी रोजगार की बात नहीं करेगी केवल जाति धर्म की बात करके अपना उल्लू सीधा करते है। उन्होंने कहा कि जब भाजपाई पिछड़ा के घर जायेंगे तो अगड़ा और दलित की बुराई करेंगे और जब दलित के घर जायेंगे तो पिछड़ा और अगड़ा की बुराई करेंगें।

उन्होंने कहा कि हमें ऐसी धोखेबाज पार्टी को हटाने के लिए आगामी विधानसभा चुनाव 2027 में सपा प्रत्याशी को जिताकर एक मजबूत सपा की सरकार बनाने का काम करेंगे। भाजपा सरकार में मंहगाई चर्म सीमा पर है जिससे किसानों का भारी नुकसान हो रहा है।इस मौके पर प्रताप सिंह सोमवंशी गोकुल राजपूत शैलेंद्र राजपूत जगदीश मिश्रा पुष्पेंद्र अहिरवार नीरज मुखिया लखन यादव बलवान पाल सियाराम पाल राजू यादव दुलीचंद अनुरागी सियाराम आचार्य अरविन्द राजपूत पुष्पेंद्र चौधरी रामस्वरूप सहित सैकड़ों ग्रामीणों की उपस्थिति रही।

कुष्ठ उन्मूलन के तहत मना कुष्ठ निवारण दिवस

लखीमपुर, खीरी। राष्ट्रीय कुष्ठ उन्मूलन कार्यक्रम के अन्तर्गत 30 जनवरी को कुष्ठ निवारण दिवस मनाया गया। जिसके अन्तर्गत जिलाधिकारी की अध्यक्षता में मुख्य चिकित्सा अधिकारी द्वारा कुष्ठ निवारण दिवस के अवसर पर जिला अधिकारी के संदेश पढ़ा गया। साथ ही यह भी बताया कि कुष्ठ रोग एक दीर्घ कालिक संक्रामक रोग है जो कि माइकोबैक्टीरियम लेप्री नामक जीवणु से होता है। इसको हेन्सन रोग के नाम से भी जाना जाता है, जो मुख्यत: हाथो, पैरो की परिधीय तंत्रिका, त्वचा को प्रभावित करता है। इस बार की थीम आइए मिलकर जागरूकता फैलाए भ्रांतियों को दूर भगायें, कुष्ठ प्रभावित कोई पीछे छूट न जाये। आयोजित किया जायेगा। जिसमें सभी अधिकारी एवं कर्मचारी की उपस्थिति में कुष्ठ रोग से जुडे कलंक एवं भेदभाव की समस्या को दूर करने के उदेश्य से एवं जागरूकता बढाने के लिये स्पर्श कुष्ठ जागरूकता अभियान 30 जनवरी से 13 फरबरी 2025 तक आयोजित किया जाएगा।

शहीद दिवस पर आयोजित हुई गोष्ठी, बापू को किया नमन

गुरसहायगंज, कन्नौज। रविवार को नगर के गोमती देवी आदर्श इण्टर कालेज परिसर में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की पुण्यतिथि पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें प्रबन्धक/उ.प्र. कांग्रेस कमेटी पूर्व प्रदेश सचिव विजय मिश्र सहित कांग्रेसियों ने महात्मा गांधी के चित्र पर पुष्पांजलि व माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की। गुरुवार को प्रबन्धक/उ.प्र. कांग्रेस कमेटी पूर्व प्रदेश सचिव विजय मिश्र ने छात्र-छात्राओं को संबोधित करते हुये बताया कि महात्मा गांधी जिन्हें नेता जी सुभाष चन्द्र बोस नें राष्ट्रपिता की उपाधि से संबोधित किया था। तभी से पूरा राष्ट्र उन्हे राष्ट्रपिता या बापू के नाम से पुकारनें लगे। रवीन्द्र नाथ टैगोर नें गांधी जी को महात्मा उपाधि प्रदान की थी। स्वाधीनता आन्दोलन में महात्मा गांधी ने अग्रणी भूमिका निभाते हुये सभी धर्मो को एक धागे में पिरोकर देश को आजादी दिलाने का कार्य किया था। उनके बलिदान और त्याग को व्यर्थ नहीं जाने दिया जायेगा। 30 जनवरी 1948 को नाथूराम गोडसे नामक व्यक्ति ने गोली मारकर हत्या कर दी थी वह उस समय बिडला मंदिर में पूजा करने जा रहे थे। इसलिये 30 जनवरी को इतिहास में काले दिन के रुप मे मनाया जाता है।

सीडीपीओ के निर्देशन में 50 आंगनबाड़ी केंन्द्रों पर हुआ ड्राई राशन का वितरण

निघासन-खीरी। सीडीपीओ पूजा त्रिपाठी के निर्देशन में स्थानीय विकास क्षेत्र के 50 आंगनबाड़ी केंद्रों पर माह अक्टूबर 2024 हेतु प्राप्त ड्राई राशन का वितरण किया गया। जानकारी के अनुसार ग्राम पंचायत भैरमपुर के भैरमपुर प्रथम , द्वितीय एवं तृतीय , ग्राम पंचायत भेड़ौरा के मसुरहा , नया ताल , पुराना ताल , ग्राम पंचायत गंगानगर के गंगानगर , रामनगर , ग्राम पंचायत मूडाबुजुर्ग के पचपेड़ी , विछपरी एवं महाराज नगर , ग्राम पंचायत ग्राम पंचायत ढखेरवा खालसा के घनश्याम पुरवा रंगई पुरवा पसियन पुरवा एवं मुन्ना पुरवा , ग्राम पंचायत खैरी गढ़ के खैरीगढ़ , अवध नगर , कुंदन नगर , रहीम पुरवा , एवं महेंद्र नगर ग्राम पंचायत सिंगहा कला के सिंगहा कला प्रथम द्वितीय एवं तृतीय , ग्राम पंचायत हरसिंहपुर के रघु नगर हरसिंहपुर एवं जुम्मन पुरवा , ग्राम पंचायत शीतलपुर , ग्राम पंचायत लुधौरी के चूरा टांडा , जगनपुरवा एवं पुरैना ग्राम पंचायत हरद्वाही के चितिहा , मथुरा पुरवा एवं पकरिया पुरवा ग्राम पंचायत सिसवारी , ग्राम पंचायत बल्लीपुर के बल्लीपुर प्रथम द्वितीय , तृतीय ,चतुर्थ एवं पंचम सहित लगभग 50 आंगनबाड़ी केंद्रों पर लाभार्थियों को राशन वितरित किया गया । इस समाचार के लिखे जाने तक राशन वितरण संबंधी कोई शिकायत प्राप्त नहीं हुई ।

सड़क सुरक्षा समिति की बैठक में डीएम ने कसे सिस्टम के पेंच

संवाददाता। फतेहपुर

जिला स्तरीय सड़क सुरक्षा समिति की बैठक कलेक्ट्रेट महात्मा गाँधी सभागार में जिलाधिकारी रविन्द्र सिंह की अध्यक्षता में संपन्न हुई। उन्होंने सड़क सुरक्षा से सम्बंधित पिछली बैठक मे दिये गए निर्देश के अनुपालन आख्या की समीक्षा करते हुए विस्तृत चर्चा की। उन्होंने एआरटीओ एवं पुलिस विभाग को निर्देश दिए कि सर्विस रोड एवं हाईवे पर वाहनों को किसी भी दशा में न खड़े होने दे और हाईवे पर वाहन खड़ा पाए जाने पर नियमानुसार कार्यवाही की जाय। उन्होंने टीएसआई से कहा लखनऊ बाईपास में ट्रक सड़क के किनारे खड़े रहते है, को स्थान चिन्हित करते हुए सड़क से बाहर खड़ा कराए इसका कड़ाई से अनुपालन सुनिश्चित किया जाय। बांदा बहराइच मार्ग (एनएच-232) में फतेहपुर से यमुना नदी तक साइनेज, रिफ्लेक्टर एवं ब्रेकर की, कस्बे एवं जहां आवश्यकता है, वहां लगाए/बनाए जाय ताकि दुर्घटनाएं न हो सके साथ ही सड़क के किनारे पटरी भी सही कराये जाने तथा जहां पटरी पर अतिक्रमण है को हटवाने व सोल्डर ठीक कराने के निर्देश एनएचआई रायबरेली को दिए।

उन्होंने क्षेत्राधिकारी यातायात को निर्देश दिए कि राष्ट्रीय राजमार्गद्2, एनएचद्232 में ऐसे स्थान जहां वर्ष में 02 एक्सीडेंट (मृत्यु) हुए है, कि रिपोर्ट से अवगत कराए। साथ ही पेट्रोल पंप से 01 किमी पहले साइन बोर्ड (पेट्रोल पंप) लगवाने एवं अनुपालन आख्या से अवगत कराने हेतु जिला पूर्ति अधिकारी को निर्देशित किया गया। उन्होंने जिला विद्यालय निरीक्षक, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी एआरटीओ को निर्देशित किया कि सड़क सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम कराते रहे। उन्होंने कहा कि वाहन चालको द्वारा यातायात के नियमों का उलंघन बारद्बार करते हुए पाए जाने पर ड्राइविंग लाईसेंस नियमानुसार निरस्त करते हुए कार्यवाही करें, साथ ही विभिन्न मध्यमो से प्रचारद्प्रसार भी कराया जाय। उन्होंने कहा कि पुलिस विभाग, परिवहन विभाग संवेदनशीलता के साथ प्रवर्तन की कार्यवाही निरंतर करें। वाहन चालको को यातायात के नियमों का पालन करने, दोपहिया वाहन चालको को हेलमेट, चार पहिया वाहन चालको को सीट बेल्ट लगाने के लिए जागरूक किया जाय। यातायात नियमों, रेट्रो रिफ्लेक्टिव टेप के बारे में जागरूकता शिविर की रिपोर्ट परिवहन विभाग द्वारा प्रस्तुत नहीं करने पर कड़ी नाराजगी व्यक्त की।

इस अवसर अपर जिलाधिकारी (वित्त/राजस्व) अविनाश त्रिपाठी, मुख्य चिकित्सा अधीक्षक, अधिशासी अभियंता लोक निर्माण विभाग, एआरटीओ प्रवर्तन, जिला विद्यालय निरीक्षक, एन0एचआई0 रायबरेली, कानपुर के पदाधिकारी, टीएसआई यातायात, अधिशाषी अधिकारी नगर पालिका परिषद सदर, समिति के सदस्य अशोक तपस्वी सहित संबंधित उपस्थित रहे।

भाजपा नेता ने पटुका पहना किया कथा व्यास का सम्मान

गुरसहायगंज, कन्नौज। क्षेत्र के ग्राम लाडपुर में आयोजित श्रीमद् भागवत कथा के सात दिवसीय अनुष्ठान के भव्य समापन पर पहुंचे पूर्व भाजपा नगर अध्यक्ष दीपू शर्मा ने कथा व्यास को पटुका पहनाकर सम्मानित किया। इस दौरान उन्होनें धर्म प्रेमियों को आशीर्वाद प्राप्त करने का संदेश दिया। इस दौरान उन्होंने कहा कि श्रीमद्ध भावगत कथा धार्मिक चेतना और भक्ति की भावना को बढाती है। श्रीमद् भागवत कथा के समापन दिवस पर पूर्व भाजपा नगर अध्यक्ष दीपू शर्मा सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लिया और भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं का श्रवण किया। कथा के दौरान कथा व्यास ने भक्ति, धर्म और सत्कर्मों की महत्ता पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि श्रीमद् भागवत कथा केवल एक ग्रंथ नहीं, बल्कि जीवन को सद्मार्ग पर ले जाने का एक दिव्य माध्यम है। कथा समापन के पश्चात आयोजित भण्डारा कार्यक्रम में सैकड़ों श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण किया।

चार ठगी पीड़ितों की धनराशि बैंक खाते में कराई गई वापस

फतेहपुर। एनसीआरपी पोर्टल एवं साइबर ठगी पीड़ितों के दिए गए शिकायती प्रार्थना पत्र की जांच के अनुक्रम में साइबर क्राइम पुलिस थाने की टीम ने सार्थक प्रयास करते हुए माह जनवरी में चार पीड़ितो के कुल 258722 रूपये की धनराशि बैंक खाते में पुन: वापस कराई। बताते चलें कि 11 दिसंबर 2024 को राजेश सिंह लोधी ने साइबर क्राइम थाना में उपस्थित होकर प्रार्थना पत्र प्रस्तुत कर बताया कि अज्ञात व्यक्तियों ने पंजाब नेशनल बैंक खाते से नौ लाख रूपये से अधिक की धनराशि आनलाइन माध्यम से ट्रांसफर करा लिए। जिसकी जानकारी उन्हे मैसेज आने पर हुई। तत्काल अभियोग पंजीकृत करते हुए आवेदक से ट्रांसफर किये गये रूपयो का विवरण प्राप्त करते हुये संल्पित खातो का फ्रीज कराया गया। न्यायालय से आदेश प्राप्त कर ठगी गई धनराशि में से 158535 रूपए आवेदक के खाते में सकुशल वापस करा दी गई। शेष अन्य रूपयो को रिकवर करने के संबंध में भी सार्थक कार्यवाही प्रचलित है।

इसी तरह 17 नवंबर 2024 को राहुल कुमार ने प्रार्थना पत्र प्रस्तुत कर बताया कि उनका मोबाइल कही गुम हो गया। जिसके उपरान्त उनके खाते से 50000 रूपये की धनराशि आनलाइन माध्यम से ट्रांसफर कर ली गई। साइबर क्राइम पुलिस थाना टीम ने त्वरित कार्यवाही करते हुये आवेदक से ट्रांसफर किये गये रूपयो का विवरण प्राप्त करते हुए संल्पित खाते को फ्रीज कराया। ठगी गई सम्पूर्ण धनराशि आवेदक के खाते में सकुशल वापस करा दी गई। वहीं 30 सितंबर 2024 को विजयपाल ने प्रार्थना पत्र प्रस्तुत कर बताया कि अज्ञात व्यक्तियो ने उन्हे काल कर गंदी वीडियो देखने व पुलिस में शिकायत दर्ज होने की बात बताकर 57 हजार रूपये की धनराशि आनलाइन माध्यम से ट्रांसफर करा लिया। साइबर क्राइम पुलिस टीम ने त्वरित कार्यवाही करते हुये अभियोग पंजीकृत कर घटना में संलिप्त एक अभियुक्त को गिरफ्तार कर जेल भेजा।

बलात्कार के आरोप में कांग्रेस सांसद राकेश राठौर गिरफ्तार

सीतापुर। (भाषा) सीतापुर से कांग्रेस के सांसद राकेश राठौर को बलात्कार के आरोप में बृहस्पतिवार को उनके आवास से गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस सूत्रों ने यहां बताया कि राठौर इलाहाबाद उच्च न्यायालय से अग्रिम जमानत याचिका खारिज होने के बाद अपने आवास पर संवाददाता सम्मेलन कर रहे थे। इसी दौरान कोतवाली नगर पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। पुलिस के मुताबिक, सांसद राठौर को न्यायिक प्रक्रिया के तहत गिरफ्तार किया गया है और आगे की कानूनी कार्रवाई की जा रही है। कांग्रेस सांसद राकेश राठौर के खिलाफ इसी महीने 15 जनवरी को एक महिला से शादी का झांसा देकर बलात्कार करने के आरोप में प्राथमिकी दर्ज की गई है। महिला ने अपनी शिकायत में आरोप लगाया है कि राठौर ने शादी का झांसा देकर उसके साथ कई बार बलात्कार किया है। सूत्रों के मुताबिक, महिला ने शिकायत में कहा है कि राठौर पिछले चार साल से उससे शादी करने और उसे राजनीतिक करियर बनाने का झांसा देकर उससे बलात्कार कर रहे थे। राठौर ने स्थानीय अदालत से जमानत याचिका खारिज होने के बाद सांसद राठौर ने इलाहाबाद उच्च न्यायालय का रुख किया था मगर वहां से भी उन्हें राहत नहीं मिली। उसके बाद इस मामले मे उनकी गिरफ्तारी का रास्ता साफ हो गया था।

रेल प्रशासन ने मौनी अमावस्या के दिन 364 आउटवर्ड गाड़ियों का किया परिचालन

यात्रियों की सुविधा हेतु पिछले 42 घंटे में 335 मेला स्पेशल गाड़ियों का संचालन, महाकुंभ मौनी अमावस्या स्नान पर्व पर रेल प्रशासन की चिकित्सा टीम ने 9285 श्रद्धालुओं को दिया प्राथमिक उपचार

महाकुंभ नगर। महाकुंभ में आने वाले श्रद्धालुओं को रेलवे सुविधाओं का सुखद अनुभव देने के लिए रेलवे प्रशासन सिविल प्रशासन के साथ मिलकर कार्य कर रहा है। रेल प्रशासन द्वारा मौनी अमावस्या के दिन संगम में स्नान कर घर वापसी करने वाले श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए प्रयागराज के विभिन्न स्टेशनों से 364 आउटवर्ड गाड़ियों का परिचालन किया गया। इस अवधि में रेलवे द्वारा 77 इंवर्ड गाड़ियों का परिचालन भी किया गया। आउटवर्ड गाड़ियों में 142 नियमित और 222 महाकुंभ मेला विशेष गाड़ियां शामिल रहीं। इसी क्रम में 29 जनवरी एवं आज दिनांक 30 जनवरी को 18 बजे तक को महाकुंभ में मौनी अमावस्या के महापर्व के अवसर पर महाकुंभ में आए श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए प्रयागराज के सभी स्टेशनों से रिकार्ड 335 ट्रेन का परिचालन किया गया। 29 जनवरी को 222 विशेष गाड़ियों का परिचालन किया गया। इसमें प्रयागराज जंक्शन से 104 प्रयागराज छिवकी से 23 नैनी से 17 सूबेदारगंज से 13 प्रयाग से 23 फाफामऊ से 5 प्रयागराज रामबाग से 9 एवं झूंसी से 28 गाड़ियों का परिचालन किया गया। इसी क्रम में आज प्रयागराज के सभी स्टेशनों से रिकार्ड 113 विशेष गाड़ियों का परिचालन किया गया। इसमें प्रयागराज जंक्शन से 57 प्रयागराज छिवकी से 03 नैनी से 06 सूबेदारगंज से 05 प्रयाग से 11 फाफामऊ से 5 प्रयागराज रामबाग से 7 एवं झूंसी से 19 सहित यात्रियों की सुविधा हेतु पिछले 24 और 18 घंटे में 335 मेला स्पेशल गाड़ियों का परिचालन किया गया।

मेला की पूर्ण अवधि में रेलवे द्वारा लगभग 13450 गाड़ियों के परिचालन की योजना बनाई गई है। जिसमें 10028 नियमित गाड़ियां और 3400 से अधिक विशेष गाड़ियों का परिचालन शामिल है। अब तक 2000 से अधिक विशेष गाड़ियों का परिचालन किया जा चुका है। रेलवे ने स्पष्ट किया है कि सारी गाड़ियों का परिचालन योजनानुसार किया जा रहा है। पूर्व दी गई सूचना के आलोक में कुछ गाड़ियों का मार्ग परिवर्तित करके चलाया जा रहा है। जबकि कुछ गाड़ियों का टर्मिनल स्टेशन प्रयागराज की जगह सूबेदारगंज किया गया है। इसी क्रम में उत्तर मध्य रेलवे के चिकित्सा विभाग ने महाकुंभ के दौरान उत्कृष्ट सेवाएं प्रदान करते हुए मौनी अमावस्या स्नान के दिन 9285 श्रद्धालुओं सहित 11 जनवरी 2025 से 29 जनवरी 2025 तक 70000 श्रद्धालुओं को चिकित्सा सेवा प्रदान की। इस दौरान विभिन्न स्टेशनों पर बनाए गए आब्जर्वेशन रूम में भी गंभीर स्थिति में लाये गए श्रद्धालुओं का भी इलाज किया गया एवं स्थिति सामान्य होने के उपरांत अग्रिम इलाज हेतु रेलवे अस्पताल एवं शहर के अन्य अस्पतालों में भर्ती कराया गया। यात्रियों की सुविधा हेतु प्रयागराज स्टेशन से सभी दिशाओं के लिए आवश्यकतानुसार गाड़ियों का लगातार संचालन किया जा रहा है। महाप्रबंधक उपेन्द्र चन्द्र जोशी वॉर रूम से तथा मंडल रेल प्रबंधक हिमांशु बडोनी कंट्रोल रूम से लगातार स्थिति की मॉनिटरिंग कर रहे हैं। श्रद्धालुओं की संख्या जैसे ही बढ़नी शुरू हुई उत्तर मध्य रेलवे ने खुसरोबाग में स्थित होल्डिंग पॉइंट को ओपरेट कर दिया।

महाकुंभ के बीच प्रयागराज के लिए किराया हुआ स्थिर, उड़ानें बढ़ाईं : इंडिगो

नई दिल्ली। एयरलाइन कंपनी इंडिगो ने बृहस्पतिवार को कहा कि प्रयागराज के लिए उड़ानों का किराया स्थिर हो गया है और उसने महाकुंभ के लिए इस मार्ग पर उड़ानों की संख्या बढ़ाकर 900 कर दी है।यात्रियों की बढ़ती मांग के चलते प्रयागराज की उड़ानों पर किराए में बढ़ोतरी को लेकर लगातार चिंता बनी हुई है और सरकार ने एयरलाइन कंपनियों से टिकट की कीमतें स्थिर रखने के साथ-साथ इस मार्ग पर और अधिक उड़ानें संचालित करने को कहा है। महाकुंभ 13 जनवरी से शुरू हुआ है और 26 फरवरी को समाप्त होगा।पहले से सक्रिय की गई अतिरिक्त क्षमता के अलावा, इंडिगो ने कहा कि वह अपने नेटवर्क के अन्य हिस्सों से क्षमता का पुनः आवंटन करने पर भी काम कर रही है, ताकि यात्रियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए अधिक उड़ानें जोड़ी जा सकें।इंडिगो ने बयान में कहा, एयरलाइन ने किराए को स्थिर रखना भी सुनिश्चित किया है और अपने सभी ग्राहकों को सर्वोत्तम संभव यात्रा अनुभव प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। बुधवार को सूत्रों ने बताया था कि इंडिगो ने प्रयागराज की उड़ानों के किराए में 30-50 प्रतिशत तक की कमी की है। एयरलाइन के अनुसार, उसने महाकुंभ अवधि के दौरान प्रयागराज हवाई अड्डे से उड़ानों की संख्या और सीट क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि की है। बयान के अनुसार, इस विशेष अवधि के लिए, एयरलाइन अब प्रयागराज सेाके लिए।,65,000 से अधिक सीटों का संचालन करेगी, जो हवाई अड्डे की इसकी सामान्य क्षमता से दोगुनी से भी अधिक है। कंपनी ने बयान में कहा, इस अवधि के दौरान, इंडिगो प्रयागराज को भारत में 10 स्थानों से जोड़ेगी। इनमें दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु, हैदराबाद, लखनऊ, रायपुर और भुवनेश्वर से मौजूदा संपर्क के अलावा अहमदाबाद, कोलकाता और जयपुर से उड़ानें भी शामिल होंगी। इसके अलावा, इंडिगो ने कहा कि उसने प्रयागराज सेाके लिए मौजूदा मार्गों पर बड़े विमान ए321 के परिचालन और फेरे बढ़ाकर क्षमता मे वृद्धि की है। इंडिगो ने कहा, कुल मिलाकर, एयरलाइन प्रयागराज सेाके लिए लगभग 900 उड़ानें संचालित करेगी, जो कि 490 नियमित सेवाओं की तुलना का लगभग दोगुना है। प्रयागराज की उड़ानों के लिए अत्यधिक किराया वसूले जाने के बीच नागर विमानन मंत्रालय ने बुधवार को एयरलाइन कंपनियों से उचित टिकट कीमतें बनाए रखने को कहा था। साथ ही, उपभोक्ता मामलों के मंत्री प्रल्हाद जोशी ने विमानन नियामक नागर विमानन महानिदेशालय (डीजीसीए) से कीमतों को कम करने के लिए कदम उठाने का आग्रह किया था।

महाप्रसाद से महाकुंभ में मिट रही सैकड़ों श्रद्धालुओं की भूख

महाकुंभ नगर। महाकुंभ में इन दिनों पूरे शहर को रोशनी से जगमगा दिया गया है। वहीं शहर में आगंतुकों की भीड़ से जहां शहर में हर जगह भीड़ और ट्रैफिक जाम की स्थिति देखी जा रही हैए तो वहीं इन कठिनाइयों के बीच श्रद्धालुओं की इच्छा मेला स्थल में पहुच कर पवित्र गंगा और संगम में श्रद्धा की डुबकी लगाकर अपने आराध्य को अपना तनमन समर्पित करने की है। इस बीच इन श्रध्दालुओं की पेट की भूख और प्यास के साथ थकान को मिटाने अदाणी समूह ने बीड़ा उठाया है। अदाणी समूह ने विश्व के सबसे बड़े और सनातम धर्म के प्रचारक इस्कॉन के संयुक्त तत्वाधान में निःशुल्क भोजन प्रसाद वितरण का आयोजन किया है। जिसमें हर दिन सुबह से रात तक निर्बाध लाखों श्रद्धालुओं को स्वादिष्ठ और सात्विक भोजनप्रसाद परोसा जा रहा है। अदाणी और इस्कान समूह की इस जुगल बंदी ने पूरे मेलाक्षेत्र में घूमकर घूमकर अब तक करोड़ों आगंतुकों को स्वादिष्ठ भोजन महाप्रसाद परोसा है।

महाकुंभ में श्रद्धालुओं की सुरक्षा की प्रतिबद्धता

प्रयागराज। केस कंस्ट्रक्शन इक्विपमेंट ने महाकुंभ में भाग लेने वाले लाखों श्रद्धालुओं की सुरक्षा के लिए प्रोजेक्ट मिलाप लॉन्च किया है। यह एक अभूतपूर्व पहल है जिसका उद्देश्य महकुंभ मेले में भाग लेने वाले लाखों श्रद्धालुओं की सुरक्षा सुनिश्चित करना है। इस पहल को एमरे करज़ली, शलभ चतुर्वेदी और पुनीत विद्यार्थी की उपस्थिति में आधिकारिक तौर पर हरी झंडी दिखाई गई। सीएनएच की सीएसआर हैड कविता साह ने कहा कि परियोजना मिलाप सामाजिक जिम्मेदारी और सामुदायिक कल्याण के प्रति हमारी निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है। इस प्रोजेक्ट के माध्यम सेए हमारा लक्ष्य महाकुंभ मेले में भाग लेने वाले लाखों तीर्थयात्रियों के लिए एक सुरक्षित अनुभव सुनिश्चित करना है।

फडणवीस ने राउत के गठबंधन संबंधी दावे को खारिज किया

मुंबई (भाषा)। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस ने बृहस्पतिवार को शिवसेना (उबाठा) नेता संजय राउत के इस दावे को खारिज कर दिया कि सत्तारूढ़ भाजपा के कई नेता उद्धव ठाकरे नीत पार्टी के साथ गठबंधन करना चाहते हैं। दिल्ली में पत्रकारों द्वारा पूछे गए एक सवाल पर फडणवीस ने कहा कि सामान्य बैठकों को राजनीतिक रूप से नहीं देखा जाना चाहिए। राउत ने भाजपा नेता चंद्रकांत पाटिल और शिवसेना प्रमुख उद्धव ठाकरे के करीबी सहयोगी मिलिंद नार्वेकर के बीच यहां हुई बातचीत के बाद टिप्पणी की।

शिवसेना (उद्धव बालासाहेब ठाकरे) नेता राउत ने बृहस्पतिवार को दावा किया कि सत्तारूढ़ भाजपा के कई नेता उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाली पार्टी के साथ गठबंधन करना चाहते हैं। राउत ने कहा कि हालांकि शिवसेना (उबाठा) के भीतर ऐसी कोई चर्चा नहीं हुई है, लेकिन पार्टी के कुछ सदस्य भी ऐसी ही भावनाएं रख सकते हैं। उनकी यह टिप्पणी बुधवार रात विधायक पराग अलवानी की बेटी के विवाह के मौके पर आयोजित प्रीतिभोज में ठाकरे के सहयोगी मिलिंद नार्वेकर एवं भाजपा के मंत्री चंद्रकांत पाटिल के बीच कुछ हंसी-मजाक वाली बातचीत के बाद आई है। प्रीतिभोज में ठाकरे भी मौजूद थे।

भाजपा नेता अलवानी मुंबई के उपनगरीय क्षेत्र विले पार्ले से तीन बार विधायक रह चुके हैं। भाजपा के एक पदाधिकारी ने बताया कि ठाकरे के अलवानी के साथ अच्छे संबंध हैं। समारोह में शामिल लोगों ने बताया कि नार्वेकर ने पाटिल से मजाक में कहा, "यह अच्छा है कि पत्रकार यहां नहीं हैं... अन्यथा, वे कहेंगे कि गठबंधन की बातचीत चल रही है।

पाटिल ने चुटकी लेते हुए कहा, "यह एक स्वर्णिम क्षण होगा। राउत ने कहा, पाटिल भाजपा की पुरानी पीढ़ी से हैं जो शिवसेना-भाजपा संबंधों के महत्व को समझते हैं। यह 25 वर्षों तक अच्छी तरह से काम करता रहा। राउत के दावों को खारिज करते हुए फडणवीस ने दिल्ली में संवाददाताओं से कहा, "किसी को भी इतना भोला नहीं होना चाहिए... लोग प्रीतिभोज में मिलें और गठबंधन बन जाए या दल करीब आ जाएं। इस कार्यक्रम में सत्तारूढ़ महायुति के नेता भी शामिल हुए (जिसमें भाजपा, एकनाथ शिंदे की शिवसेना और अजित पवार की पार्टी राकांपा शामिल है)। फिल्म निर्माता मधुर भंडारकर, शिवाजी साटम और सचिन खेडेकर सहित मनोरंजन उद्योग के लोग भी समारोह में शामिल हुए। इससे पहले राउत ने कहा कि भाजपा में कई लोग पाटिल की स्वर्णिम क्षण वाली भावनाओं को साझा करते हैं। उन्होंने कहा, मुझे संदेह है कि एकनाथ शिंदे की शिवसेना कितने समय तक भाजपा के साथ रहेगी। हम इंतजार करो और देखो की स्थिति में हैं।यह पूछे जाने पर कि क्या शिवसेना (उबाठा) के नेता भी भाजपा के साथ गठबंधन की ऐसी भावना रखते हैं, राउत ने कहा, "हो सकता है। हम भाजपा के कुछ नेताओं की वजह से एमवीए के साथ गए। आपने हमारी पार्टी को विभाजित कर दिया और एकनाथ शिंदे को वह दे दिया जिसकी हम मांग कर रहे थे। उन्होंने कहा, हमने पहले भी कई बार इस तरह की चर्चा की है। हालांकि शिवसेना (उबाठा) में अभी तक ऐसी कोई बातचीत नहीं हुई है।

हिंदू महासभा ने मनाया महात्मा गांधी की हत्या का जश्न, गोडसे को दिया सम्मान

मेरठ। (भाषा) अखिल भारत हिंदू महासभा ने बृहस्पतिवार को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की पुण्यतिथि पर उनकी हत्या का जश्न मनाया और उनके हत्यारे नाथूराम गोडसे को सम्मान देकर विवाद खड़ा कर दिया। हिंदू महासभा से कथित तौर पर जुड़े गोडसे ने दिल्ली के बिड़ला हाउस में 30 जनवरी 1948 को प्रार्थना सभा के दौरान गांधी की गोली मारकर हत्या कर दी थी। उसे 1949 में अंबाला जेल में फांसी दे दी गई थी। अखिल भारत हिंदू महासभा के सदस्य अमर शहीद नाथूराम गोडसे नाना आप्टे धाम में एकत्र हुए और गोडसे के कार्यों को याद किया। महासभा के वरिष्ठ नेता और नाना आप्टे धाम के संस्थापक पंडित अशोक शर्मा ने कार्यक्रम का नेतृत्व किया। समारोह में हवन और पूजा आदि की गई तथा हनुमान चालीसा का पाठ किया गया।

अयोध्या में जुटा भक्तों का हुजूम, रात से ही राम मंदिर और हनुमानगढ़ी में लग रही कतारें

अयोध्या। (भाषा) मौनी अमावस्या पर प्रयागराज में पवित्र संगम में डुबकी लगाने के बाद शाम से ही श्रद्धालुओं के अयोध्या आने का शुरू हुआ सिलसिला बृहस्पतिवार दोपहर बाद तक जारी रहा। भक्त राम मंदिर और हनुमानगढ़ी में दर्शन की इच्छा लिए रात से ही कतारों में खड़े दिखाई दिए। सरकार द्वारा बृहस्पतिवार को जारी एक बयान के मुताबिक गत 96 घंटे में करीब 65 लाख श्रद्धालु अयोध्या पहुंच चुके हैं। भीड़ के मद्देनजर वरिष्ठ अधिकारी मौके पर मौजूद हैं और पूरी रात पैदल गश्त कर व्यवस्थाओं का जायजा ले रहे हैं। एक बयान के मुताबिक प्रयागराज में मौनी अमावस्या पर स्नान करने के बाद श्रद्धालु सीधे रामनगरी पहुंच रहे हैं। तड़के चार बजे से ही सरयू के घाटों पर स्नान का सिलसिला शुरू हो जा रहा है और इसके बाद श्रद्धालु हनुमानगढ़ी व राम जन्मभूमि मंदिर का रुख कर रहे हैं। बयान के मुताबिक राममंदिर और हनुमानगढ़ी में रोजाना कम से कम तीन लाख श्रद्धालु दर्शन को पहुंच रहे हैं। इसकी वजह से मंदिर में दर्शन का समय बढ़ाकर लगभग 18 घंटे कर दिया गया है। बयान में कहा गया कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ स्वयं अयोध्या जिला प्रशासन को समय-समय पर आवश्यक निर्देश दे रहे हैं। इसके मुताबिक राम जन्मभूमि मंदिर में पुलिस द्वारा श्रद्धालुओं के लिए पेयजल की व्यवस्था की गई है और मंदिर परिसर में चिकित्सा शिविर भी लगाया गया है। राम मंदिर ट्रस्ट के कर्मचारी और स्वयंसेवकों को श्रद्धालुओं की सेवा में तैनात किया गया है।

बयान के मुताबिक अयोध्या आने वाले मुख्य मार्ग के थाने और चौकियों के साथ रेलवे से संपर्क कर श्रद्धालुओं की संख्या का पूर्वानुमान भी लगाया जा रहा है।प्रशासन ने बताया कि भीड़ को नियंत्रित करने के लिए गोंडा, अंबेडकरनगर, सुल्तानपुर और लखनऊ रोड पर होल्डिंग एरिया बनाया गया है, ताकि भीड़ बढ़ने पर श्रद्धालुओं को वहां रोका जा सके। बयान के मुताबिक केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, गोवा, महाराष्ट्र और गुजरात से बड़ी संख्या में श्रद्धालु दर्शन को अयोध्या पहुंच रहे हैं।अयोध्या के नगर आयुक्त संतोष कुमार शर्मा द्वारा बुधवार शाम को अयोध्या कैंट रेलवे स्टेशन के आस-पास और गुरु गोविंद सिंह चौराहे पर लाउड स्पीकर के माध्यम से अपील की कि वे रेलवे स्टेशन कैंट के निकट बने आश्रय स्थल में ही ठहरें।

वक्फ अधिनियम में संशोधन से मुसलमान और हाशिए पर चले जाएंगे : पारा

श्रीनगर। पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) नेता वहीद पारा ने बृहस्पतिवार को कहा कि वक्फ अधिनियम में संशोधन देश के मुसलमानों पर हमला है, जो अल्पसंख्यक समुदाय को और हाशिए पर धकेल सकता है। जम्मू-कश्मीर के पुलवामा से विधायक पारा ने एक्स पर एक पोस्ट में आरोप लगाया कि भारत में मुसलमान पहले से ही सबसे हाशिए पर पड़े समुदायों में से हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि मुसलमानों को सड़कों पर पीट-पीटकर मार दिया जाता है, उनके घरों और व्यवसायों को ध्वस्त कर दिया जाता है और उनके नेताओं को जेल भेज दिया जाता है। पारा ने कहा, अब, वक्फ अधिनियम में भाजपा के नए संशोधन इस निरंतर हमले में एक और कदम का संकेत देते हैं, इस बार मुस्लिम धार्मिक एवं धर्मार्थ संस्थानों की नींव को निशाना बनाया गया है। सुधार की परिभाषा के तहत, ए बदलाव वक्फ संपत्तियों पर नियंत्रण हासिल करने का प्रयास है, जिससे मुसलमानों को हाशिए पर धकेला जा सके और उनकी संपत्तियों पर सरकार की पकड़ मजबूत हो सके।

कला-विज्ञान के बीच की दूरी पाटने की जरूरत : नोबेल विजेता वेंकी रामकृष्णन

जयपुर। (भाषा) नोबेल पुरस्कार विजेता वेंकी रामकृष्णन ने बृहस्पतिवार को यहां जयपुर साहित्य उत्सव के उद्घाटन के अवसर पर कहा कि एआई (आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस) जैसी तकनीकें केवल तकनीकी विशेषज्ञता की ही मांग नहीं करती हैं बल्कि ए मानवीय इतिहास और मूल्यों की समझ को भी जरूरी बनाती हैं जिसके बिना किसी भी प्रस्तावित समाधान के खोखला या नुकसानदायक होने का भी खतरा है।

गुलाबी नगरी के क्लार्क आमेर होटल में आयोजित साहित्य के सबसे बड़े उत्सवों में से एक जयपुर साहित्योत्सव (जेएलएफ) के 18वें संस्करण में वेंकी रामकृष्णन ने कला और विज्ञान के बीच भेद को पाटने की जरूरत को रेखांकित किया।

जेएलएफ में हर उम्र, हर नस्ल और वर्ग के श्रोताओं के विशाल सागर के समक्ष भारत की कला, संगीत, साहित्य, परंपरा और विज्ञान की विविध धाराओं की प्रस्तुतियां दी जाएंगी। इसी के उद्घाटन सत्र में रामकृष्णन ने अपने अध्यक्षीय भाषण में महत्तर समानुभूति के विचार को आगे बढ़ाया। अंग्रेजी उपन्यासकार सी पी स्नो के महत्वपूर्ण निबंध दी टू कल्चर्स का हवाला देते हुए उन्होंने कहा कि विज्ञान और गणित अस्पष्ट प्रतीत होते हैं और कुछ लोगों के लिए तो ए लगभग चमत्कारिक हैं।

रामकृष्णन ने कहा, हम ऐसे युग में जी रहे हैं जिसमें कृत्रिम बुद्धिमत्ता से लेकर जीन एडिटिंग और जलवायु विज्ञान तक पर तकनीकी प्रगति हावी है। इनमें से कई नवाचारों में मानव अस्तित्व को गहन तरीके से नया रूप देने की क्षमता है। लेकिन जैसा कि स्नो ने 1959 में चेताया था, आम जनता में अक्सर मूलभूत वैज्ञानिक साक्षरता तक का अभाव होता है।

उन्होंने कहा कि यहां तक कि वैज्ञानिक भी अपनी संकीर्ण विशेषज्ञताओं के बाहर इन प्रगति को मुश्किल ही समझ पाते हैं। रामकृष्णन ने कहा कि ऐसे समय में जब रोजगार, खाद्य सुरक्षा, भविष्य की महामारियों के लिए तैयारी और तेजी से परिष्कृत होते हथियारों जैसे मुद्दे केंद्र में हैं, एआई और जेनेटिक इंजीनियरिंग जैसी प्रौद्योगिकियां जबरदस्त संभावनाओं के साथ-साथ जबरदस्त जोखिम भी लेकर आई हैं। उन्होंने कहा, इन सब के लिए तकनीकी विशेषज्ञता से कहीं अधिक की जरूरत है। ए मानव इतिहास, संस्कृति और मूल्यों की समझ तथा समानुभूति की मांग करते हैं। इस व्यापक संदर्भ के बिना हम जो समाधान पेश करते हैं उनके उथला, अल्पकालिक और यहां तक कि नुकसानदायक होने का खतरा है। रामकृष्णन के अनुसार, हमें मानविकी, साहित्य, दर्शन और इतिहास की आवश्यकता है ताकि वैज्ञानिक आविष्कारों के नैतिक और सामाजिक निहितार्थों से निपटने के लिए ढांचा एक प्रदान किया जा सके।उनका नजरिया कहता है कि समय से पहले लोगों को विशेषज्ञ बनाने से ज्यादा एक व्यापक पाठ्यक्रम जिसमें विज्ञान और मानविकी दोनों शामिल हों, को पेश किए जाने की जरूरत है ताकि व्यापक शिक्षित आबादी तैयार की जा सके। स्नो का निबंध बौद्धिक अलगाव के खतरे में झांकता है और एक ऐसी संस्कृति के पोषण की तात्कालिकता को रेखांकित करता है जहां ज्ञान, उत्सुकता और रचनात्मकता अलग अलग क्षेत्रों तक सीमित न रहें। सत्तर वर्षीय रामकृष्णन ने कहा, इन दोनों के बीच के अंतर को पाटने की हमारी क्षमता पर भविष्य निर्भर करता है। इस मायने में जेएलएफ एक शानदार पुल है लेकिन हमें अपनी शिक्षा व्यवस्था समेत ऐसे बहुत से पुलों की जरूरत है। इसलिए मुझे कहना चाहिए कि आइए, इस विभाजन को पाटने के लिए बातचीत शुरू करें। इस साल जेएलएफ में नोबेल पुरस्कार विजेता, बुकर पुरस्कार विजेता, पत्रकार, नीति निर्माता और प्रशंसित लेखकों जैसे 300 से अधिक दिग्गज शामिल होंगे। प्रतिभागियों में अभिजीत बनर्जी, एस्तेर डफ्लो, अमोल पालेकर, इरा मुखोटी, गीतांजलि श्री, डेविड हरे, मानव कौल, जावेद अख्तर, राहुल बोस, युवान एवेस, शाहू पटोले और कल्लोल भट्टाचार्य शामिल हैं। इस बार जयपुर बुकमार्क (जेबीएम) प्रकाशन सम्मेलन अपने 12वें वर्ष का जश्न मनाएगा, जिसमें अनुवाद, कहानी कहने के नवाचारों और प्रकाशन के भविष्य को आकार देने में एआई की भूमिका पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा।

पेज 1 का शेष

महाकुंभ...

बेरोजगारी और किसानों की 'दुर्दशा' का मुद्दा भी उठाया जाएगा। सूत्रों ने बताया कि सर्वदलीय बैठक में जदयू नेता संजय झा ने जेपीसी के कार्यकाल में विस्तार की मांग की, जिसे बजट सत्र के अंतिम सप्ताह के पहले दिन अपनी रिपोर्ट सौंपने के लिए कहा गया। झा 39 सदस्यीय समिति के सदस्य हैं, जिसका गठन एक राष्ट्र, एक चुनाव (ओएनओई) प्रस्ताव पर चर्चा के लिए किया गया है। भाजपा सांसद पी पी चौधरी की अध्यक्षता वाली समिति की दूसरी बैठक शुक्रवार को होने वाली है। झा चाहते हैं कि संसद आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के क्षेत्र में भारत की मौजूदा स्थिति पर भी चर्चा करे। उन्होंने इस क्षेत्र में चीनी कंपनी डीपसीक द्वारा पैदा की गई लहरों की ओर भी इशारा किया, जिस पर अब तक अमेरिकी कंपनियों का दबदबा रहा है।

आम आदमी...

जवाब मांगे हैं, ऐसा न करने पर वह उनसे आगे कोई संदर्भ लिए बिना उचित निर्णय लेगा। आयोग ने पांच सवाल पूछे, जिसमें पूछा गया, 'हरियाणा सरकार ने यमुना में किस तरह का जहर मिलाया है? जहर की मात्रा, प्रकृति और पता लगाने के तरीके, यह कहां मिला, डीजेबी के किन इंजीनियरों ने इसका पता लगाया और कैसे और कहां।' चुनाव आयोग ने केजरीवाल को एक प्रमुख सार्वजनिक व्यक्ति और पूर्व मुख्यमंत्री के रूप में इस तरह के बयानों के 'भयानक परिणामों' की याद दिलाई, जो हरियाणा और दिल्ली में पहचाने जाने वाले समूहों के बीच संभावित रूप से 'स्थायी निशान' छोड़ सकते हैं। आयोग ने अपने पत्र में कहा, आपके संदर्भित बयान पर आपके जवाब पर वापस आते हुए, आयोग ने प्रथम दृष्टया पाया है कि यमुना नदी के जहर के बारे में आपके आरोप विभिन्न समूहों के बीच वैमनस्य और दुश्मनी को बढ़ावा देते हैं और सबसे गंभीर व्याख्या के आधार पर भी कुल मिलाकर सार्वजनिक अव्यवस्था और अशांति को बढ़ावा देते हैं। चुनाव आयोग ने दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री को यह भी चेतावनी दी कि उनके बयान हरियाणा और दिल्ली के निवासियों के बीच संबंधों को नुकसान पहुंचा सकते हैं, जिससे स्थायी विभाजन हो सकता है। चुनाव आयोग ने लिखा है, एक प्रमुख सार्वजनिक व्यक्ति और एक पूर्व मुख्यमंत्री के रूप में, आयोग को आपको उन भयंकर परिणामों की याद दिलाने की आवश्यकता नहीं है जो आपके ऐसे बयानों और कार्यों के कारण हो सकते हैं और दो राज्यों के निवासियों के सुस्पष्ट समूहों और/या हरियाणा राज्य और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली में एक साथ रहने वाले लोगों के बीच स्थायी निशान छोड़ सकते हैं। चुनाव आयोग के पत्र में उल्लेख किया गया है कि एक अभियान के दौरान केजरीवाल ने आरोप लगाया था कि हरियाणा दिल्ली में 'नरसंहार' करने के लिए यमुना नदी को 'जहर' दे रहा है, जिसे कथित तौर पर दिल्ली जल बोर्ड के इंजीनियरों ने पकड़ा और रोका। आयोग ने बताया कि अपने बयान के तथ्यात्मक और कानूनी पेचीदगी को स्पष्ट करने के बजाय, केजरीवाल ने नदी में उच्च अमोनिया सामग्री का संदर्भ देकर इसे सही ठहराना चुना, एक मामला जिसे अलग से संबोधित किया जा रहा है। हालांकि, चुनाव आयोग ने स्वीकार किया कि वह इस तर्क से सहमत है कि पर्याप्त और स्वच्छ पानी की उपलब्धता एक शासन संबंधी मुद्दा है और इस बात पर जोर दिया कि सभी संबंधित सरकारों को इसे सभी के लिए सुरक्षित करने के लिए काम करना चाहिए। आयोग ने कहा, आयोग को इस स्थिति पर किसी के विवाद का कोई कारण नहीं मिलता है, और कहा कि यह मामले को सरकारों और एजेंसियों की क्षमता और विवेक पर छोड़ देगा, चुनाव अवधि के दौरान जल-बंटवारे या प्रदूषण के मुद्दों पर हस्तक्षेप करने से परहेज करेगा, जो लंबे समय से और भविष्य के निहितार्थों के साथ हैं, जहां सुप्रीम कोर्ट और राष्ट्रीय हरित न्यायाधिकरण (एनजीटी) के निर्देश शामिल हैं।

ईसी ने...

स्क्वायड टीम (एफएसटी) की शिकायत पर की जा रही है। एफएसटी की सुरक्षा के लिए पुलिस की मौजूदगी की आवश्यकता है। इस बीच, आप ने भाजपा पर एक निर्वाचित मुख्यमंत्री के घर पर छापेमारी करने और खुलेआम पैसे बांटने के लिए भाजपा के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं करने का आरोप लगाया। राज्य चुनावों से पहले अपनी पार्टी के उम्मीदवार के लिए प्रचार कर रहे मान ने पंजाबियों को बदनाम करने के लिए दिल्ली पुलिस और चुनाव आयोग की आलोचना की। आज, चुनाव आयोग की टीम दिल्ली पुलिस के साथ दिल्ली में मेरे घर कपूरथला हाउस पर छापा मारने आई है। भाजपा के लोग दिल्ली में खुलेआम पैसे बांट रहे हैं, लेकिन दिल्ली पुलिस और चुनाव आयोग को कुछ नहीं दिख रहा है। इस सब पर कोई कार्रवाई नहीं की जा रही है। पंजाब के सीएम ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, एक तरह से दिल्ली पुलिस और चुनाव आयोग भाजपा के इशारे पर पंजाबियों को बदनाम कर रहे हैं, जो बहुत निंदनीय है। दिल्ली की उनकी समकक्ष और कालकाजी की उम्मीदवार आतिशी ने आरोप लगाया कि भाजपा के लोग खुलेआम पैसे, जूते, चप्पल और चादरें बांट रहे हैं, लेकिन पुलिस यह नहीं देख पा रही है और छापे के लिए एक निर्वाचित मुख्यमंत्री के आवास पर पहुंच गई। दिल्ली पुलिस भगवंत मान के दिल्ली स्थित घर पर छापा मारने पहुंच गई है। भाजपा के लोग दिनदहाड़े पैसे, जूते और चादरें बांट रहे हैं, जो दिखाई नहीं देता।

चैट जीपीटी...

ऐसा आधार मॉडल बनाएगा जो विश्व स्तरीय होगा और यह दुनिया भर के सर्वश्रेष्ठ मॉडलों के साथ प्रतिस्पर्धा करने में सक्षम होगा।इसके साथ ही सरकार ने अपने एआई ब्लूप्रिंट के अगले कदमों, जिसमें की घोषणा की, जिसमें 18,693 ग्राफिक्स प्रोसेसिंग यूनिट या जीपीयू की पेशकश के लिए पैनल में शामिल बोलीदाताओं (इस सूची में जियो प्लेटफॉर्म, सीएमएस कंप्यूटर, टाटा कम्युनिकेशंस, ईडब्ल्यूई नेटवर्क, योट्टा डेटा सर्विसेज और अन्य शामिल हैं) द्वारा एआई सुरक्षा संस्थान की शुरुआत के साथ 8 परियोजनाओं को मंजूरी दी गई है। सरकार भारत के अपने आधारभूत मॉडल विकसित करने के लिए प्रस्ताव भी मांग रही है, जो भारतीय संदर्भ, भारतीय भाषाओं, संस्कृति से जुड़े होंगे, जहां मूल रूप से डेटासेट 'हमारे देश और हमारे नागरिकों के लिए' होंगे और पूर्वाग्रहों को दूर किया जाएगा। सरल शब्दों में कहें तो, जनरेटिव एआई में आधारभूत मॉडल बड़े, पूर्व-प्रशिक्षित मॉडल हैं जो विभिन्न एआई अनुप्रयोगों के लिए आधार बनाते हैं। वैष्णव ने आश्वासन दिया कि सामान्य कंप्यूट सुविधा (18,693 जीपीयू द्वारा संचालित) वैश्विक लागत बेंचमार्क के एक अंश पर उपलब्ध कराई जाएगी। सरकार द्वारा वहन की जाने वाली 40 प्रतिशत लागत के बाद कंप्यूट सुविधा 'सबसे सस्ती' होगी, जो एक डॉलर (प्रति जीपीयू घंटा) से भी कम होगी। वैष्णव ने कहा, आधुनिक तकनीक को सभी के लिए सुलभ बनाना, यही हमारे प्रधानमंत्री की आर्थिक सोच है... इस समय हमारी सबसे सस्ती कंप्यूटिंग सुविधा है। मंत्री ने कहा कि कम से कम छह प्रमुख डेवलपर्स/स्टार्टअप हैं जो अगले 8-10 महीनों में बाहरी सीमा पर और अधिक आशावादी अनुमान पर 4-6 महीनों में आधारभूत मॉडल बनाने में सक्षम होंगे। मंत्री ने कहा, एल्गोरिदमिक दक्षता बहुत मायने रखती है, यह आज दुनिया की तुलना में बहुत कम लागत और कम समय में एक मॉडल तैयार कर सकती है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि आने वाले कुछ महीनों में भारत के पास 'विश्व स्तरीय आधारभूत मॉडल' होगा।

कोहली...

महात्मा गांधी की पुण्यतिथि पर उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित करने राजघाट गए थे। डीडीसीए सचिव अशोक शर्मा ने पीटीआई से कहा , मैं 30 साल से अधिक समय से दिल्ली क्रिकेट से जुड़ा हूं लेकिन रणजी ट्रॉफी मैच में ऐसा नजारा नहीं देखा। इससे साबित होता है कि कोहली की लोकप्रियता का कोई सानी नहीं। उन्होंने कहा , यह इसलिए भी और चुनौतीपूर्ण हो गया क्योंकि दर्शक उसी समय स्टेडियम में आ रहे थे जब बाहर प्रधानमंत्री मोदी की वीआईपी मूवमेंट थी। कड़े प्रोटोकॉल और पुलिस के निर्देशों के बाद हमें जनता के लिए दूसरा स्टैंड खोलना पड़ा। दिल्ली पुलिस ने भी स्टेडियम के भीतर कुछ अफरातफरी के बाद बयान जारी करके बताया कि कोई अप्रिय घटना नहीं हुई है। पुलिस ने बयान में कहा , अतिरिक्त दरवाजे तुरंत खेल दिए गए। किसी को कोई चोट नहीं लगी है और स्थिति नियंत्रण में है। आखिरी बार किसी घरेलू मैच में इस तरह की भीड़ तब देखी गई थी जब सचिन तेंदुलकर ने 2013 में हरियाणा के लाहली में मुंबई के लिए आखिरी प्रथम श्रेणी मैच खेला था।

पायनियर

नई दिल्ली, शुक्रवार, 31 जनवरी 2025

दक्षिणी राज्यों का जनसंख्या वृद्धि पर जोर देना अच्छा विचार नहीं: सुब्बाराव

भाषा। हैदराबाद

केंद्र द्वारा राज्यों को दिए जाने वाले कोष में असमानताओं को दूर करने के लिए कुछ दक्षिणी राज्यों के जनसंख्या वृद्धि का आह्वान करने के बीच आरबीआई के पूर्व गवर्नर डी सुब्बाराव ने बृहस्पतिवार को कहा कि आबादी बढ़ाना कोई समाधान नहीं है। यहां तीसरे बीपीआर विट्ठल स्मारक व्याख्यान सत्र को संबोधित करते हुए सुब्बाराव ने कहा कि भाजपा, जो पहले मुफ्त की सुविधाओं को रेवड़ी संस्कृति कहती थी, अब दिल्ली विधानसभा चुनाव प्रचार में योजनाएं पेश करने में आम आदमी पार्टी (आप) के साथ प्रतिस्पर्धा कर रही है। उन्होंने हालांकि कहा कि एक गरीब देश में जहां लाखों लोग दैनिक जीवन के लिए संघर्ष करते हैं, सरकार के लिए लोगों की मदद करना अनिवार्य है। कुछ राज्यों द्वारा महिलाओं को सरकारी बसों में मुफ्त यात्रा की पेशकश के बारे में भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के पूर्व प्रमुख ने कहा कि इस बात का कोई सबूत नहीं है कि यह उनकी मदद करने का सबसे बेहतर तरीका है।

सुब्बाराव ने कहा, मैंने 50 साल तक सरकारी नौकरी की है। जब मैं पहली बार सेवा में आया, तो हमारी सबसे बड़ी प्राथमिकता जनसंख्या नियंत्रण, परिवार नियोजन थी और हमारा मानना था कि जनसंख्या वृद्धि सभी विकास को बाधित कर रही है। लेकिन मैंने कभी नहीं सोचा था कि हम एक ऐसा दिन देखेंगे जब राजनीतिक नेता कहेंगे कि हमें अपनी जनसंख्या बढ़ानी चाहिए। उन्होंने कहा, इसका स्पष्ट संदेश यह है कि कुछ राज्य जिन्होंने जनसंख्या नियंत्रण में अच्छा काम किया है, वे केंद्रीय सहायता से वंचित हो रहे हैं। लेकिन मेरा मानना है कि जनसंख्या बढ़ाना इसका समाधान नहीं है, क्योंकि भारत एक देश है। हमारे यहां अभी भी समग्र स्तर पर जनसंख्या की समस्या है। केरल सरकार ने हाल में केंद्रीय करों में अपने हिस्से को वर्तमान 41 प्रतिशत से बढ़ाकर 50 प्रतिशत करने और विभाज्य पूल में राज्यों के लिए प्रति व्यक्ति आधारित हिस्से को 45 प्रतिशत से घटाकर 30 प्रतिशत करने की मांग की। विभाज्य पूल सकल कर राजस्व का वह हिस्सा है जिसे केंद्र और राज्यों के बीच वितरित किया जाता है। जनसंख्या अनुपात के आधार पर आवंटन को बिना किसी पक्षपात के शीघ्र वितरित किए जाने का अनुरोध करते हुए, तेलंगाना सरकार ने हाल में बजट पूर्व बैठक में कहा था कि केंद्र प्रायोजित योजनाओं के संबंध में उसे कम धनराशि दी गई है। आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू और उनके तमिलनाडु समकक्ष एम के स्टालिन ने हाल के दिनों में अधिक बच्चे पैदा करने की वकालत की थी। सुब्बाराव ने कहा कि केंद्र सरकार को राजनीतिक दलों द्वारा स्वीकार्य सीमा से अधिक मुफ्त में दी जाने वाली सुविधाओं पर नियंत्रण के लिए एक तंत्र की आवश्यकता है।

उन्होंने कहा, मुफ्त की सुविधाओं को लेकर सबसे बड़ी निराशा यह है कि तीन साल पहले प्रधानमंत्री ने बयान दिया था कि मुफ्तखोरी पर लगाम लगनी चाहिए। इसके दो महीने बाद उत्तर प्रदेश चुनाव में, भाजपा मुफ्त की सुविधाएं उपलब्ध कराने में लगी रही। और आज, वे (भाजपा) मुफ्त में सब कुछ देने के मामले में आम आदमी पार्टी से मुकाबला कर रहे हैं। सुब्बाराव ने कहा कि केंद्र और राज्यों के बीच बेहतर सहयोग भी विकसित भारत के लिए महत्वपूर्ण है।

केरल: कविता पर शराब इकाई को मंजूरी दिलाने का आरोप बीआरएस नेता ने किया खंडन

मलप्पुरमाहैदराबाद। (भाषा) कांग्रेस नेता वी. डी. सतीशन ने बृहस्पतिवार को आरोप लगाया कि तेलंगाना के पूर्व मुख्यमंत्री के. चंद्रशेखर राव की बेटी और दिल्ली आबकारी नीति कथित घोटाले में आरोपी बीआरएस नेता के. कविता ने पलक्कड़ में शराब बनाने वाली इकाई को मंजूरी दिलाने के सिलसिले में केरल का दौरा किया था हालांकि पूर्व सांसद ने इन आरोपों का खंडन किया है। कविता ने सतीशन के रोपों को निराधार और अपमानजनक करार दिया और कहा कि अगर कांग्रेस नेता ने अपना झूठा बयान वापस नहीं लिया तो वह कानूनी कदम उठाएंगी। केरल विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष सतीशन ने आरोप लगाया, वह (कविता) ओएसिस कमर्शियल प्राइवेट लिमिटेड कंपनी के लिए केरल आई थीं। मीडिया को संबोधित करते हुए सतीशन ने राज्य में कविता के ठहरने की जांच कराए जाने की मांग की।उन्होंने आरोप लगाया, शराब निर्माण इकाई के आवंटन की आड़ में कई रहस्यमय सौदे हुए थे। उन्होंने दोहराया कि यह निर्णय संबंधित सरकारी विभागों से परामर्श किए बिना लिया गया। सतीशन ने कहा कि मुख्यमंत्री पिनराई विजयन और आबकारी मंत्री एम बी राजेश ने एकतरफा तरीके से ओएसिस कमर्शियल प्राइवेट लिमिटेड कंपनी को शराब निर्माण संयंत्र स्थापित करने की अनुमति देने का निर्णय लिया था।कविता ने आरोपों पर जवाब देते हुए कहा कि उन पर लगाए गए आरोप कांग्रेस द्वारा सस्ती राजनीतिक सुर्खियां बटोरने के लिए हताश और बेवजह प्रयास के अलावा और कुछ नहीं हैं। बीआरएस नेता ने कहा कि उनकी प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचाने के उद्देश्य से सतीशन के मनगढ़ंत दावों को वह स्पष्ट रूप से खारिज करती हैं। उन्होंने हैदराबाद में पीटीआई-भाषा से कहा, मैं यह स्पष्ट कर दूं कि अगर सतीशन अपने झूठे बयानों को तत्काल और बिना शर्त वापस नहीं लेते हैं, तो मैं इस दुर्भावनापूर्ण अपमान के लिए उन्हें जवाबदेह ठहराने व अपनी ईमानदारी की रक्षा की खातिर कठोर कानूनी कार्वाई करने के लिए बाध्य होऊंगी। इससे पहले बुधवार को विपक्षी गठबंधन यूडीएफ ने अपने दावों के समर्थन में कैबिनेट नोट जारी किया था।

फ्रांस के साथ राफेल-एम, स्कार्पीन समझौते पर जल्द मुहर लगाएगा भारत

नई दिल्ली। (भाषा) भारत अपनी नौसेना की शक्ति बढ़ाने के लिए फ्रांस से राफेल लड़ाकू जेट के 26 नौसैनिक संस्करण और तीन स्कॉर्पीन पनडुब्बी की खरीद पर अगले कुछ हफ्ते में मुहर लगा सकता है। मामले से वाकिफ लोगों ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। हालांकि, फिलहाल यह स्पष्ट नहीं है कि राफेल-एम और स्कॉर्पीन की खरीद संबंधी घोषणा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की आगामी पेरिस यात्रा के दौरान की जाएगी या नहीं। मोदी कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) पर आधारित दो दिवसीय शिखर सम्मेलन में हिस्सा लेने के लिए 10-11 फरवरी को पेरिस की यात्रा करेंगे। शिखर सम्मेलन से इतर उनके फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों से द्विपक्षीय वार्ता करने की संभावना है। मामले से वाकिफ लोगों ने बताया कि दोनों समझौते अंतिम चरण में हैं और सुरक्षा मामलों पर कैबिनेट समिति (सीसीएस) को इन पर विचार करना होगा। जुलाई 2023 में रक्षा मंत्रालय ने फ्रांस से 22 राफेल (एम) जेट की खरीद को मंजूरी दी थी, मुख्य रूप से स्वदेशी रूप से निर्मित विमान वाहक आईएनएस विक्रांत पर तैनाती के लिए। मंत्रालय ने फ्रांस से तीन स्कॉर्पीन पनडुब्बी की खरीद को भी स्वीकृति दे दी थी। भारतीय नौसेना के प्रोजेक्ट-75 के तहत फ्रांस के नौसेना समूह के सहयोग से मझगांव डॉक लिमिटेड (एमडीएल) भारत में छह स्कॉर्पीन पनडुब्बी का निर्माण पहले ही कर चुका है। राफेल-एम जेट के साथ-साथ हथियार प्रणालियों और कलपुर्जों सहित संबंधित सहायक उपकरणों की खरीद एक अंतर-सरकारी समझौते (आईजीए) पर आधारित होगी। भारतीय वायुसेना ने फ्रांस से 36 राफेल लड़ाकू विमान उड़ने लायक स्थिति में खरीदे थे। वायुसेना का मानना है कि उसे राफेल जेट के कम से कम दो और बेड़े की खरीद करनी चाहिए।

हत्या मामले में 12 साल से अधिक जेल में बिताने वाले व्यक्ति को शीर्ष अदालत ने बरी कर दिया

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने बुधवार को केरल में हत्या के एक मामले में 12 साल से अधिक समय तक जेल में बंद एक व्यक्ति को बरी कर दिया। न्यायमूर्ति अभय एस. ओका और उज्जल भुइयां की पीठ ने दो प्रत्यक्षदर्शी गवाहों के बयान पर संदेह जताते हुए कहा कि आरोपी के खिलाफ अपराध साबित नहीं हुआ। शीर्ष अदालत ने यह फैसला विनोभाई की उस अपील पर सुनाया, जिसमें उन्होंने केरल उच्च न्यायालय के सितंबर 2016 के उस फैसले को चुनौती दी थी। फैसले में व्यक्ति की दोषसिद्धि और उम्रकैद की सजा को बरकरार रखा गया था। न्यायालय ने कहा, "अभियुक्त 12 साल से अधिक समय तक जेल में रहा है। यदि किसी अन्य मामले में उसकी आवश्यकता नहीं है तो उसे तुरंत रिहा किया जाए"। विनोभाई को निचली अदालत ने हत्या का दोषी ठहराते हुए आजीवन कारावास की सजा सुनाई थी। उन पर 31 दिसंबर 2010 को रामकृष्णन की चाकू से प्रहार कर हत्या करने का आरोप था। अभियोजन पक्ष ने दावा किया था कि विनोभाई और रामकृष्णन के बीच पुरानी दुश्मनी थी। मृतक कथित रूप से विनोभाई के बड़े भाई की हत्या में शामिल था। पीठ ने दो गवाहों के बयान पर संदेह जताते हुए कहा कि "दोनों प्रत्यक्षदर्शियों का यह बयान विरोधाभासी है"। न्यायालय ने यह भी कहा कि दोनों गवाहों ने घटना के तुरंत बाद पुलिस को सूचना नहीं दी थी। शीर्ष अदालत ने यह भी उल्लेख किया कि एक गवाह ने रामकृष्णन को माकपा समर्थक बताया था, जबकि विनोभाई भाजपा कार्यकर्ता था। शीर्ष अदालत ने उच्च अदालत के सितंबर 2016 के फैसले और निचली अदालत के अक्टूबर 2012 के आदेश को रद्द कर दिया।

मीडिया कंपनी के खिलाफ धोखाधड़ी मामले में 100 करोड़ की संपत्ति बैंकों को लौटाई गई

नई दिल्ली। (भाषा) वित्तीय जांच एजेंसी प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने बैंकों के एक गठजोड़ को 100 करोड़ रुपए की संपत्ति लौटा दी है। दिल्ली की एक मीडिया कंपनी ने कथित तौर पर बैंकों के गठजोड़ के साथ धोखाधड़ी की थी। ए संपत्तियां पिक्सियन मीडिया लिमिटेड के परिसमापक (बैंकों की ओर से) को वापस कर दी गईं।जांच एजेंसी ने बृहस्पतिवार को बयान में कहा कि धन शोधन रोधक अधिनियम (पीएमएलए) के तहत जांच के दौरान लगभग 156 करोड़ रुपए की संपत्ति जब्त की गई थी। इनमें वाणिज्यिक और आवासीय संपत्तियां और बैंक जमा शामिल हैं। प्रवर्तन निदेशालय ने यह मामला केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) द्वारा पिक्सियन मीडिया प्राइवेट लिमिटेड, पर्ल विजन प्राइवेट लिमिटेड, महुआ मीडिया प्राइवेट लिमिटेड, सेंचुरी कम्युनिकेशन लिमिटेड, पिक्सियन विजन प्राइवेट लिमिटेड और पर्ल स्टूडियोज प्राइवेट लिमिटेड के खिलाफ दर्ज मुकदमे (एफआईआर) के आधार पर दायर किया था। ए मुकदमा प्रबोध कुमार तिवारी उर्फ पीके तिवारी से संबंधित हैं, जिनपर बैंकों से 657.11 करोड़ रुपए की धोखाधड़ी करने का आरोप है।एजेंसी ने बताया कि सीबीआई की एफआईआर पंजाब नेशनल बैंक, इंडियन ओवरसीज बैंक, ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स, भारतीय स्टेट बैंक और बैंक ऑफ इंडिया सहित अन्य बैंकों की लिखित शिकायतों के आधार पर दर्ज की गई थी। एजेंसी ने कहा कि ऋणदाता बैंकों ने दिवाला और ऋणशोधन अक्षमता संहिता (आईबीसी) के तहत कॉरपोरेट दिवाला समाधान प्रक्रिया शुरू की थी और अगस्त, 2019 में राष्ट्रीय कंपनी विधि न्यायाधिकरण (एनसीएलटी) द्वारा एक परिसमापक नियुक्त किया गया था।

रूस की समूह वीजा-मुक्त यात्रा के लिए भारत के साथ बातचीत

मुंबई। (भाषा) रूस समूह वीजा-मुक्त व्यवस्था के लिए भारत सरकार के साथ बातचीत कर रहा है। इसके तहत समूह में यात्रा करने वाले पर्यटकों की एक निश्चित संख्या को बिना वीजा के रूस में प्रवेश करने की अनुमति दी जाएगी। मॉस्को सिटी टूरिज्म कमेटी के चेयरमैन एवगेनी कोजलोव ने बुधवार शाम को एक कार्यक्रम के दौरान पीटीआई-भाषा को बताया, पर्यटकों के एक समूह में रूस की यात्रा करने पर, यात्रा को वीजा मुक्त बनाने के लिए दस्तावेज में एक विशेष संख्या का उल्लेख किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, चीनी दस्तावेज में समूह में 10-20 लोग होने चाहिए। हम इस सुविधा का लाभ उठाने के लिए भारतीय विदेश मंत्रालय के साथ बातचीत कर रहे हैं, ताकि एक समूह में शामिल लोगों की संख्या पर अंतिम समझौता किया जा सके। उन्होंने आगे कहा कि भारत एक महत्वपूर्ण देश है और चीन के बाद दूर के देशों में स्रोत बाजार के मामले में दूसरे स्थान पर है।

पटना में पुलिस ने प्रदर्शनकारियों को खदेड़ा

बीपीएससी परीक्षा विवाद

पटना। (भाषा) बिहार लोक सेवा आयोग (बीपीएससी) की एकीकृत 70वीं संयुक्त (प्रा.) परीक्षा 2024 में कथित तौर पर अनियमितताओं को लेकर इस इम्तिहान को रद्द किए जाने की मांग कर रहे प्रदर्शनकारियों ने बृहस्पतिवार को आयोग के कार्यालय के सामने प्रदर्शन करने की कोशिश की, लेकिन पुलिस ने उन्हें खदेड़ दिया। पुलिस ने कहा कि जहां आयोग का कार्यालय स्थित है वह प्रतिबंधित क्षेत्र है और वहां किसी भी तरह के प्रदर्शन की अनुमति नहीं है। पटना के जिलाधिकारी चंद्रशेखर सिंह ने स्पष्ट किया कि प्रदर्शनकारियों पर कोई लाठीचार्ज नहीं किया गया है, लेकिन उन पर पुलिस मुख्यालय, राजभवन और मुख्यमंत्री आवास जैसे महत्वपूर्ण स्थानों के करीब स्थित क्षेत्र में सड़क यातायात को बाधित करने के लिए मामला दर्ज किया जाएगा। जिलाधिकारी ने पीटीआई-भाषा को बताया, "हमने उन लोगों की पहचान कर ली है जिनके उकसाने पर अभ्यर्थी आयोग के कार्यालय के पास इकट्ठा हुए और बेली रोड पर यातायात की आवाजाही को बाधित किया। सभी प्रदर्शनकारियों को सुरक्षाकर्मियों ने हटा दिया है। पुलिस बीपीएससी अभ्यर्थियों को भड़काने के लिए पटना के दो शिक्षकों के खिलाफ भी प्राथमिकी दर्ज कर रही है"। उन्होंने बताया कि पता चला है कि अधिकतर प्रदर्शनकारी राजधानी के बाहर से लाए गए थे और कुछ दूसरे राज्यों से भी आए थे। बीपीएससी अभ्यर्थी बृहस्पतिवार को बड़ी संख्या में आयोग कार्यालय के पास एकत्र हुए और 13 दिसंबर को राज्य भर में आयोजित एकीकृत 70वीं संयुक्त (प्रा.) परीक्षा 2024 को रद्द करने की मांग की। इस मांग को आयोग ने खारिज कर चुका है। मौके पर पहुंचे पुलिसकर्मियों ने उन्हें वहां से हटा दिया। जिलाधिकारी ने कहा, "वे बीपीएससी कार्यालय की ओर बढ़ना चाहते थे, लेकिन पुलिस और प्रशासन के अधिकारियों ने उन्हें ऐसा करने की अनुमति नहीं दी। सुरक्षाकर्मियों के बार-बार अनुरोध के बावजूद उन्होंने सड़क खाली करने से इनकार कर दिया। यह प्रतिबंधित क्षेत्र है और यहां विरोध प्रदर्शन की अनुमति नहीं है"। रिपोर्ट के मुताबिक, प्रदर्शन के दौरान दो-तीन छात्र घायल भी हुए हैं। पटना उच्च न्यायालय 13 दिसंबर को हुई परीक्षा रद्द करने की मांग वाली याचिका पर शुक्रवार को सुनवाई करने वाला है।

एसपीओ मानदेय में वृद्धि को लेकर भ्रामक पोस्ट के लिए उमर के सोशल मीडिया सलाहकार को बर्खास्त किया गया

श्रीनगर। (भाषा) सत्तारूढ़ नेशनल कॉन्फ्रेंस (नेकां) ने बृहस्पतिवार को कहा कि उसने पार्टी उपाध्यक्ष उमर अब्दुल्ला के सोशल मीडिया सलाहकार को जम्मू-कश्मीर पुलिस में विशेष पुलिस अधिकारियों (एसपीओ) के मानदेय में बढ़ोतरी का श्रेय लेने का दावा करने संबंधी गलत पोस्ट करने के लिए बर्खास्त कर दिया है। नेकां ने एक्स पर अपने आधिकारिक हैंडल पर एक पोस्ट में कहा, एसपीओ के मानदेय से संबंधित हाल की एक पोस्ट पार्टी और मुख्यमंत्री से जुड़े विभिन्न हैंडल से साझा की गई थी। इस पोस्ट को प्रकाशित नहीं किया जाना चाहिए था और साझा की जा रही जानकारी को सत्यापित करने के किसी भी प्रयास के बिना पोस्ट किया गया था। हालांकि हम मानदेय में वृद्धि की पुरजोर वकालत करते रहे हैं और ऐसा करने के लिए हरसंभव प्रयास कर रहे हैं, लेकिन अब तक ऐसा नहीं हुआ है। इससे पहले पार्टी के आधिकारिक हैंडल पर एक पोस्ट में दावा किया गया था कि उमर अब्दुल्ला सरकार ने एसपीओ का मानदेय बढ़ा दिया है। बाद में इस पोस्ट को हटा दिया गया था। पार्टी ने कहा, जिम्मेदार व्यक्ति के खिलाफ कार्वाई की गई है और उन्हें पार्टी के उपाध्यक्ष के सोशल मीडिया सलाहकार के पद से हटा दिया गया है। पीपुल्स कॉन्फ्रेंस के अध्यक्ष सज्जाद गनी लोन समेत विभिन्न वर्गों की आलोचना के मद्देनजर नेशनल कॉन्फ्रेंस ने यह कदम उठाया है। लोन ने कहा, क्या यह सच है? एसपीओ के वेतन का वित्तपोषण गृह मंत्रालय द्वारा एसआरई (सुरक्षा संबंधी व्यय) के माध्यम से किया जाता है। फिर भी, यदि उमर सरकार ने उनके वेतन में वृद्धि करने का कोई तरीका बनाया है - तो उस पर कुछ स्पष्टीकरण दिया जाना चाहिए। वस्तुत: यह गृह मंत्रालय का क्षेत्राधिकार है।

फडणवीस ने मुंडे को हटाने की मांग पर कहा, अजित पवार का निर्णय अंतिम होगा

मुंबई। (भाषा) महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने बीड सरपंच हत्या मामले में बृहस्पतिवार को गेंद उपमुख्यमंत्री अजित पवार के पाले में डालते हुए कहा कि वह ही राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) नेता और सरकार में मंत्री धनंजय मुंडे पर फैसला लेंगे। दिल्ली में एक रैली से इतर फडणवीस ने यह टिप्पणी की। इससे कुछ घंटे पहले खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री मुंडे ने उनसे मुलाकात की थी।फडणवीस ने राष्ट्रीय राजधानी में संवाददाताओं से कहा, सुबह मंत्रिमंडल की बैठक के दौरान धनंजय मुंडे और मेरी मुलाकात हुई। वह हमारी सरकार में मंत्री हैं और हमारी मुलाकात के बारे में कुछ भी गुप्त नहीं है। वह मुझसे और मैं उनसे कभी भी मिल सकता हूं। मुख्यमंत्री ने कहा, अजित पवार ने उनके इस्तीफे (की मांग) के बारे में बयान दिया है। अजित पवार जो भी रुख अपनाएंगे, वह अंतिम होगा। दिसंबर में बीड जिले के मासाजोग गांव के सरपंच संतोष देशमुख की हत्या से संबंधित जबरन वसूली के मामले में वाल्मिक कराड की गिरफ्तारी के बाद से मुंडे आलोचनाओं का सामना कर रहे हैं।मुंडे उसी जिले से विधायक हैं।इससे पहले दिन में राकांपा (शरदचंद्र पवार) की सांसद सुप्रिया सुले ने देशमुख हत्याकांड की जांच को लेकर भाजपा नीत सरकार की आलोचना करते हुए कहा कि कथित हत्यारों में से एक घटित अपराध के 50 दिन बाद भी फरार है। हत्या के सिलसिले में सात लोगों को गिरफ्तार किया गया है, जबकि आरोपी कृष्णा अंधाले अब भी फरार है।सुले ने कहा, इस मुद्दे पर बहुत से लोग बोल रहे हैं और हमारी सामूहिक मांग है कि बीड में सीआईडी द्वारा जांच किए जा रहे मामलों को देखते हुए नैतिक आधार पर (धनंजय मुंडे के इस्तीफे की मांग का) निर्णय लिया जाना चाहिए।

जरांगे ने अनशन समाप्त किया, दावा किया कि सरकार कई मांगें मानने को तैयार

जालना। (भाषा) मराठा कार्यकर्ता मनोज जरांगे ने पांच दिनों के विरोध प्रदर्शन के बाद बृहस्पतिवार को अपना अनिश्चितकालीन अनशन समाप्त कर दिया और दावा किया कि सरकारी प्रतिनिधियों ने उन्हें आश्वासन दिया है कि उनकी कई मांगें स्वीकार की जाएंगी। जरांगे ने चेतावनी दी कि यदि मांगें पूरी नहीं की गईं तो मराठा समुदाय के सदस्य मुंबई तक मार्च करेंगे। सरकारी नौकरियों और शिक्षा में मराठा समुदाय के लिए आरक्षण की मांग कर रहे कार्यकर्ता ने महाराष्ट्र के जालना जिले के अंतरवाली सरती गांव में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के विधायक सुरेश धास एवं जिला अधिकारी डॉ. श्रीकृष्ण पंचाल की मौजूदगी में भूख हड़ताल समाप्त की। जरांगे ने संवाददाताओं से कहा कि सरकार के प्रतिनिधियों ने उनसे वादा किया है कि शिंदे समिति को फिर से सक्रिय करने सहित उनकी कई मांगें पूरी की जाएंगी। उन्होंने कहा, सरकार ने आश्वासन दिया है कि मराठा प्रदर्शनकारियों के खिलाफ सभी मामले वापस ले लिए जाएंगे, जबकि समुदाय के सदस्यों के लिए कुनबी प्रमाणपत्र जारी करने के लिए अलग से अनुभाग स्थापित किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि मराठों के लिए आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग के प्रावधानों को भी लागू किया जाएगा, जबकि आरक्षण आंदोलन के दौरान जान गंवाने वाले समुदाय के सदस्यों को मुआवजा दिया जाएगा। हालांकि, जरांगे ने कहा कि सरकार ने मसौदा अधिसूचना को लागू करने के लिए और समय मांगा है जो कुनबी को मराठा समुदाय के सदस्यों के सगे सोयारे (रक्त संबंधी) के रूप में मान्यता देता है ताकि उन्हें ओबीसी (अन्य पिछड़ा वर्ग) श्रेणी के तहत आरक्षण दिया जा सके। मराठों को ओबीसी प्रमाण पत्र जारी करने की पद्धति निर्धारित करने और उनके सदस्यों को कुनबी समुदाय का हिस्सा साबित करने के लिए पर्याप्त साक्ष्य जुटाने के उद्देश्य से सात सितंबर, 2023 को शिंदे समिति का गठन किया गया था।

पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना के तहत अक्टूबर तक 20 लाख घरों में होगी सौर प्रणाली

नई दिल्ली। केंद्रीय बिजली और नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा राज्यमंत्री श्रीपाद एसो नाइक ने बृहस्पतिवार को कहा कि पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना के तहत छतों पर लगाए जा रहे सौर संयंत्रों की संख्या अक्टूबर 2025 तक 20 लाख के आंकड़े पर पहुंचने की उम्मीद है। उन्होंने यहां उद्योग मंडल पीएचडी चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (पीएचडीसीसीआई) के डिस्कॉम सम्मेलन में कहा कि मार्च तक छतों पर लगभग 10 लाख सौर संयंत्र स्थापित होने की उम्मीद है। उन्होंने कहा कि पीएम सूर्य घर: मुफ्त बिजली योजना छतों पर सौर प्रणाली लगाने की दुनिया की सबसे बड़ी पहल है। इस योजना के तहत मार्च, 2027 तक एक करोड़ घरों की छतों पर सौर ऊर्जा प्रणाली स्थापित करने का लक्ष्य रखा गया है। नाइक ने कहा कि योजना के तहत मार्च तक सौर प्रणाली की संख्या 10 लाख का आंकड़ा पार कर जाने और अक्टूबर तक यह संख्या दोगुनी होकर 20 लाख हो जाने की उम्मीद है।

अर्थव्यवस्था सुस्ती में है, सरकार कुछ नहीं कर रही

नई दिल्ली। (भाषा) कांग्रेस के वरिष्ठ नेता पी चिदंबरम ने बृहस्पतिवार को दावा किया कि देश की अर्थव्यवस्था सुस्ती में है, लेकिन सरकार स्थिति को संभालने के लिए कुछ नहीं कर रही है। चिदंबरम ने यहां संवाददाताओं से बातचीत में यह भी कहा कि वर्तमान समय में रोजगार सृजन नहीं हो रहा है, बेरोजारी उच्चतम स्तर पर है, मंहगाई बढ़ रही है तथा व्यापक स्तर पर आर्थिक असमानता है।पूर्व वित्त मंत्री ने कांग्रेस की ओर से तैयार अर्थव्यवस्था की वास्तविक स्थिति 2025 शीर्षक वाली रिपोर्ट जारी की। सरकार द्वारा आर्थिक समीक्षा पेश किए जाने से एक दिन पहले कांग्रेस ने यह रिपोर्ट जारी की है। चिदंबरम ने कहा कि इस रिपोर्ट में कई ऐसे तथ्यों का उल्लेख है जिनको सरकार ने दबा दिया है। उन्होंने कहा कि सरकार अर्थव्यवस्था की जो स्थिति बताती है वह वास्तविकता से

दूर है। चिदंबरम ने दावा किया, अर्थव्यवस्था सुस्ती में है, इससे इनकार नहीं किया जा सकता। पिछले साल की आर्थिक वृद्धि की तुलना में इस साल दो प्रतिशत तक की गिरावट आ सकती है। उन्होंने कहा कि नए रोजगारों का सृजन नहीं हो रहा है तथा पिछले चार पांच साल से वेतन में बढ़ोतरी भी नहीं हो रही है। पूर्व वित्त मंत्री का कहना था कि खाद्य, शिक्षा एवं स्वास्थ्य क्षेत्र से जुड़ी मुद्रास्फीति दोहरे अंक में है। उन्होंने दावा किया, अर्थव्यवस्था वास्तव में चुनौतियों का सामना कर रही है। युवाओं और स्नातकों के बीच उच्च बेरोजगारी दर चिंताजनक है, जो क्रमश: लगभग 40 प्रतिशत और 30 प्रतिशत है। उनके मुताबिक, इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि देश में व्यापक असमानता है तथा अमीर एवं गरीब के बीच खाई बढ़ती जा रही है। चिदंबरम ने आरोप लगाया कि इस खाई को पाटने के लिए सरकार ने कुछ नहीं किया। यह पूछे जाने पर कि क्या अर्थव्यवस्था मंदी की तरफ जा रही है तो पूर्व वित्त मंत्री ने कहा, यदि भारत में कोई सरकार न हो तो भी अर्थव्यवस्था मंदी में नहीं जाएगी। हम 4-5 प्रतिशत की दर से विकास करना जारी रखेंगे क्योंकि यहां किसान, श्रमिक और छोटे उद्योग हैं जो खाद्यान्न और अन्य चीजें पैदा करते हैं, सेवाएं देते हैं। उनका कहना था कि असली सवाल यह है कि सरकार 4-5 प्रतिशत से अधिक कितनी वृद्धि कर सकती है। चिदंबरम ने कहा, इस सरकार की नीतियों ने विकास दर में लगभग 1.5-2 प्रतिशत जोड़ा, लेकिन यह पर्याप्त नहीं है। पार्टी के वरिष्ठ नेता राजीव गौड़ा ने कटाक्ष करते हुए कहा कि देश में 'जॉब लॉस ग्रोथ' हो रही है।

चीनी उद्योग में जीडीपी में अपनी हिस्सेदारी बढ़ाकर तीन प्रतिशत करने की क्षमता: गडकरी

नई दिल्ली। (भाषा) केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने बृहस्पतिवार को कहा कि चीनी उद्योग में सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में अपनी हिस्सेदारी बढ़ाकर तीन प्रतिशत करने की क्षमता है। फिलहाल जीडीपी में इसकी हिस्सेदारी 1.0 से 1.15 प्रतिशत है। उन्होंने गन्ने का प्रति एकड़ उत्पादन बढ़ाने की जरूरत भी बताई। भारतीय कृषि क्षेत्र लगभग 42.3 प्रतिशत आबादी को आजीविका प्रदान करता है और मौजूदा कीमतों पर देश की जीडीपी में इसकी हिस्सेदारी 18.2 प्रतिशत है। उन्होंने कहा, भारतीय चीनी उद्योग देश की जीडीपी में तीन प्रतिशत योगदान देने की क्षमता रखता है। गडकरी ने कहा कि सरकार ने देश में वैकल्पिक ईंधन के उत्पादन को प्रोत्साहित करने के लिए बहुत कुछ किया है। सरकार अब एथनॉल

के निर्यात को बढ़ावा देने के लिए कदम उठा रही है। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने बुधवार को आपूर्ति वर्ष 2024-25 के लिए सी श्रेणी के शीरे से प्राप्त एथनॉल की कीमत (एक्स-मिल) 1.69 रुपए बढ़ाकर 57.97 रुपए प्रति लीटर करने को मंजूरी दी। जबकि अन्य कच्चे माल के लिए दरों को अपरिवर्तित रखा। चीनी उद्योग के उप-उत्पादों से एथनॉल उत्पादन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से यह मूल्यवृद्धि ऐसे समय में की गई है, जब देश 2025-26 तक पेट्रोल में 20 प्रतिशत एथनॉल मिश्रण के अपने लक्ष्य को पूरा करने के लिए प्रयास कर रहा है। मंत्री ने कहा कि चीनी के निर्यात को नियंत्रित करने की सरकार की नीति फायदेमंद और नुकसानदायक दोनों है, ऐसे में चीनी उद्योग को नए नजरिए से फिर से देखने की जरूरत है। बेबाक टिप्पणी के लिए जाने जाने वाले गडकरी ने कहा, देश में सत्ता में कोई भी पार्टी हो, भारतीय नीति निर्माताओं की मानसिकता शहरी केंद्रित है। वे केवल चार उत्पादों... चीनी, तेल, गेहूं और चावल... में मुद्रास्फीति के बारे में चिंतित हैं। उन्होंने कहा, कुछ फसलों की हमारी एमएसपी (न्यूनतम समर्थन मूल्य) दरें बाजार मूल्य से अधिक हैं, फिर भी हम अपनी फसल का प्रतिरूप नहीं बदल रहे हैं।

डोनाल्ड ट्रंप ने अप्रवासी हिरासत कानून पर किए हस्ताक्षर

भाषा। वाशिंगटन

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अवैध अप्रवासियों की सुनवाई-पूर्व हिरासत की अनुमति देने वाले अपने पहले कानून पर हस्ताक्षर कर दिए हैं। यह कानून चोरी, सेंधमारी जैसे अपराधों में आरोपित अवैध अप्रवासियों को सुनवाई से पहले हिरासत में रखने का अधिकार देता है। लेकेन राइली एक्ट को पहले अमेरिकी संसद के दोनों सदन हाउस और सीनेट में द्विदलीय समर्थन मिला था। ट्रंप ने 20 जनवरी को कार्यभार संभालने के बाद पहले विधेयक के तौर पर इस पर हस्ताक्षर किए हैं। ट्रंप ने कहा, इस कानून के तहत, गृह सुरक्षा विभाग को उन सभी अवैध अप्रवासियों को हिरासत में लेने का अधिकार होगा जो चोरी, सेंधमारी, डकैती, पुलिस अधिकारी पर हमला, हत्या या गंभीर चोट से जुड़े अपराधों के लिए गिरफ्तार किए गए हैं।

यह कानून जॉर्जिया की 22 वर्षीय नर्सिंग छात्रा लेकेन राइली के नाम पर रखा गया है। छात्रा की वेनेज़ुएला के एक अवैध अप्रवासी ने हत्या कर दी थी। ट्रंप ने इसे ऐतिहासिक कानून करार दिया। डेमोक्रेटिक पार्टी से सांसद डिक डर्बिन ने इस कानून की आलोचना करते हुए कहा कि यह संघीय सरकार की शक्तियों को कमजोर करता है और संविधान द्वारा निर्धारित आप्रवासन नीतियों के खिलाफ है। सीनेट में यह विधेयक 35 के मुकाबले 64 वोट से पारित हुआ, जबकि हाउस में इसे 156 के मुकाबले 263 मतों से मंजूरी मिली।

जन्मजात नागरिकता पर पाबंदी लगाने संबंधी विधेयक सीनेट में पेश

वाशिंगटन। अमेरिका में रिपब्लिकन पार्टी के कुछ सांसदों के एक समूह ने अवैध आप्रवासियों और अस्थाई वीजा पर देश में रहने वाले गैर-आप्रवासियों के बच्चों को जन्मजात नागरिकता दिए जाने पर रोक लगाने से संबंधित एक विधेयक संसद के उच्च सदन सीनेट में पेश किया है। जन्मजात नागरिकता अधिनियम 2025 नामक विधेयक प्रस्तुत करने वाले सीनेट सदस्यों लिंडसे ग्राहम, टेड क्रूज और केटी ब्रिट के अनुसार, मुख्य रूप से जन्मजात नागरिकता मिलने के कारण अवैध आप्रवासी अमेरिका आते हैं और यह राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा है। अमेरिका दुनिया के उन 33 देशों में से एक है जहां जन्मजात नागरिकता पर कोई प्रतिबंध नहीं है। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अपने कार्यकाल के पहले दिन इस संबंध में एक कार्यकारी आदेश पर हस्ताक्षर किए थे, जिसे वाशिंगटन राज्य के एक संघीय न्यायाधीश ने अवरुद्ध कर दिया था। आव्रजन अध्ययन केंद्र का अनुमान है कि 2023 में अवैध आप्रवासियों से 2,25,000 से 2,50,000 बच्चे पैदा होंगे, जो अमेरिका में जन्म लेने वालों का लगभग सात प्रतिशत है। ग्राहम ने कहा कि अमेरिका में जन्मजात नागरिकता नीति में बदलाव करने में बहुत देर हो चुकी है और इसका कई तरीकों से दुरुपयोग किया जा रहा है। ग्राहम ने कहा, मैं जन्मजात नागरिकता से संबंधित राष्ट्रपति ट्रंप के कार्यकारी आदेश की भी सराहना करता हूं। अब समय आ गया है कि अमेरिका भी बाकी दुनिया के साथ मिलकर इस प्रथा को हमेशा के लिए प्रतिबंधित कर दे। ब्रिट ने कहा, अमेरिकी नागरिकता के वादे के कारण अवैध प्रवास को बढ़ावा नहीं मिलना चाहिए, लेकिन बहुत लंबे समय से यही होता आ रहा है।

अमेरिकी राष्ट्रपति ने ग्वांतानामो बे में 30,000 लोगों की क्षमता वाला प्रवासी हिरासत केंद्र बनाने का आदेश दिया

वाशिंगटन। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने उच्च प्राथमिकता वाले अपराधी विदेशियों को हिरासत में रखने के लिए ग्वांतानामो बे में 30,000 लोगों की क्षमता वाला केंद्र स्थापित करने के संबंध में एक ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। ग्वांतानामो बे हिरासत केंद्र का इस्तेमाल अब तक आतंकवादियों को रखने के लिए किया जाता रहा है, लेकिन अब इसमें आपराधिक रिकॉर्ड वाले अवैध प्रवासियों को भी रखा जाएगा। इस समझौते पर बुधवार को हस्ताक्षर किए गए। ट्रंप ने रक्षा विभाग और गृह सुरक्षा विभाग को यह केंद्र तैयार करने का निर्देश दिया। ज्ञापन के अनुसार, ट्रंप ने उच्च प्राथमिकता वाले अपराधी विदेशियों को समायोजित करने और संबंधित प्रवर्तन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए नौसेना स्टेशन ग्वांतानामो बे में प्रवासी संचालन केंद्र के विस्तार का आदेश दिया। ट्रंप ने अमेरिका के राष्ट्रपति के आधिकारिक आवास एवं कार्यालय व्हाइट हाउस के एक कार्यक्रम में कहा, अधिकतर लोगों को इसके बारे में पता भी नहीं है। हमारे पास ग्वांतानामो में 30,000 बिस्तर हैं, जहां हम अमेरिकी लोगों को खतरा पहुंचाने वाले सबसे खतरनाक अपराधी अवैध विदेशियों को हिरासत में रख सकते हैं। उन्होंने कहा, उनमें से कुछ इतने खतरनाक हैं कि हमें इस बात का भरोसा नहीं है कि उनके देश उन्हें हिरासत में रख पाएंगे। हम नहीं चाहते कि वे वापस आएं इसलिए हम उन्हें ग्वांतानामो भेज रहे हैं।

अमेरिका की राष्ट्रीय खुफिया निदेशक पद के लिए ट्रंप की पसंद तुलसी गबार्ड की होगी परीक्षा

वाशिंगटन। राष्ट्रीय खुफिया निदेशक पद के लिए राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की पसंद तुलसी गबार्ड को रूस के बारे में अतीत में की गई अपनी टिप्पणियों और सीरिया के अपदस्थ हो चुके राष्ट्रपति बशर अल-असद से 2017 में हुई मुलाकात को लेकर बृहस्पतिवार को सांसदों के कड़े सवालों का सामना करना पड़ सकता है। गबार्ड की नियुक्ति की पुष्टि के लिए अमेरिकी संसद के उच्च सदन सीनेट की खुफिया मामलों की समिति उनसे पूछताछ करेगी। इस पूछताछ से तय होगा कि वह पद के लिए योग्य हैं या नहीं। हवाई से डेमोक्रेटिक पार्टी की सांसद रहीं गबार्ड नेशनल गार्ड में लेफ्टिनेंट कर्नल हैं और दो बार मध्य एशिया में तैनात रह चुकी हैं। वर्ष 2020 में उन्होंने राष्ट्रपति चुनाव लड़ने के लिए अपनी दावेदारी पेश की थी। उन्हें खुफिया मामलों का कामकाज देखने का कोई औपचारिक अनुभव नहीं है और न ही वह किसी सरकारी एजेंसी या विभाग की प्रमुख रही हैं। गबार्ड के अतीत के बयान उनकी नियुक्ति की पुष्टि में आड़े आ सकते हैं। गबार्ड यूक्रेन पर रूस के आक्रमण को जायज ठहराने संबंधी रूसी दुष्प्रचार का कई बार समर्थन कर चुकी हैं और यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की को भ्रष्ट तानाशाह बताकर उनकी आलोचना कर चुकी हैं।

रिपब्लिकन पार्टी के सांसदों ने उन पर रूसी दुष्प्रचार को बढ़ावा देने का आरोप लगाया है। रूस का सरकारी मीडिया भी एक बार गबार्ड की तारीफ कर चुका है। साल 2017 में उन्होंने सीरिया जाकर तत्कालीन राष्ट्रपति बशर अल-असद से मुलाकात करके विवाद खड़ा कर दिया था। असद को एक क्रूर गृहयुद्ध के बाद हाल ही में राष्ट्रपति पद छोड़कर देश से जाना पड़ा था। सीरिया यात्रा के बाद गबार्ड पर तानाशाह (असद) को वैधता देने का आरोप लगा। हालांकि गबार्ड ने कहा था कि उन्हें इस बात पर संदेह है कि असद ने गृहयुद्ध के रसायनिक हथियारों का इस्तेमाल किया था। इस बयान को लेकर उन्हें और आलोचना का सामना करना पड़ा।

अंतरराष्ट्रीय न्यायालय में मुकदमों की गति अत्यधिक धीमी, पुतिन के खिलाफ गिरफ्तारी वारंट लंबित

हेग (नीदरलैंड)। अंतरराष्ट्रीय अपराध न्यायालय (आईसीसी) द्वारा कांगो के सैन्य कमांडर थॉमस लुबांगा को बाल सैनिकों की भर्ती के लिए 2012 में 14 साल जेल की सजा सुनाए जाने के बाद से इसने विभिन्न मामलों में केवल 11 लोगों को दोषी करार दिया है और तीन फैसले लंबित हैं। आईसीसी ने दर्जनों गिरफ्तारी वारंट जारी किए हैं, जिनमें इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू और रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के नाम शामिल हैं। लेकिन अंतरराष्ट्रीय न्यायालय के समक्ष कई चुनौतियां हैं।

इंटरनेशनल फेडरेशन फॉर ह्यूमन राइट्स के डान्य चैकेल ने कहा, मुकदमों की सुनवाई नहीं हो पाने से न्यायालय की प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचा है। आईसीसी का काम अंतरराष्ट्रीय अपराधों के जिम्मेदार लोगों के खिलाफ जांच करना और उनपर मुकदमा चलाना है। मौजूदा अभियोजक एवं ब्रिटिश वकील करीम खान ने 24 गिरफ्तारी वारंट के लिए अनुरोध किया है। लेकिन कई संदिग्ध (पुतिन जैसे) अदालत के कठघरे से शायद दूर रहेंगे। न तो रूस, ना ही इजराइल अंतरराष्ट्रीय न्यायालय के सदस्य हैं तथा वे इसके अधिकार क्षेत्र को भी स्वीकार नहीं करते। न्यायालय के 125 सदस्य देशों में से कई देश, राजनीतिक कारणों से संदिग्धों को गिरफ्तार करने के लिए तैयार नहीं हैं। मंगोलिया ने पिछले साल पुतिन की राजकीय यात्रा के दौरान उनका भव्य स्वागत किया था और उनकी गिरफ्तारी के वारंट को नजरअंदाज कर दिया था।

दक्षिण अफ्रीका और केन्या ने सूडान के पूर्व राष्ट्रपति उमर अल-बशीर को गिरफ्तार करने से इनकार कर दिया था। उमर (81) को 2019 में तख्तापलट के जरिए सत्ता से बेदखल कर दिया गया था, लेकिन सूडान के अधिकारियों ने उन्हें आईसीसी को सौंपने से इनकार कर दिया। इटली का दावा है कि लीबिया के सरदार ओसामा अंजीम के लिए आईसीसी वारंट में प्रक्रियागत त्रुटियां थीं। रोम की अपीलीय अदालत के आदेश के तहत उसे इस महीने रिहा कर दिया गया।

इतालवी प्रधानमंत्री जियोर्जिया मेलोनी ने संवाददाताओं से कहा, यह सरकार का फैसला नहीं था। लेकिन इटली, जो आईसीसी का संस्थापक सदस्य है, के पास वारंट को निष्पादित न करने के अपने कारण हो सकते हैं। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अपने दूसरे कार्यकाल के पहले दिन ही न्यायालय के कर्मचारियों को प्रतिबंधित करने वाले अपने पिछले कार्यकाल के शासकीय आदेश को बहाल कर दिया। एक और अधिक नुकसानदेह कानून, जो न्यायालय को एक संस्था के रूप में प्रतिबंधित करेगा, कांग्रेस (अमेरिकी संसद) के एक सदन से पारित हो चुका है।

मेटा ट्रंप के साथ मुकदमा निपटाने के लिए दो करोड़ 50 लाख अमेरिकी डॉलर का भुगतान करने पर सहमत

वाशिंगटन। प्रौद्योगिकी क्षेत्र की कंपनी मेटा ने उसके खिलाफ अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा दर्ज कराए गए मुकदमे के निपटारे के लिए दो करोड़ 50 लाख अमेरिकी डॉलर का भुगतान करने पर सहमति व्यक्त की है। मेटा ने छह जनवरी, 2021 को कैपिटल (अमेरिकी संसद भवन) पर हमले के बाद डोनाल्ड ट्रंप के खातों को निलंबित कर दिया था जिसके बाद यह मुकदमा दर्ज कराया गया था। मेटा ने ऐसे समय में मुकदमे के निपटारे के लिए भुगतान करने पर सहमति जताई है जब कंपनी और इसके मुख्य कार्यकारी अधिकारी मार्क जुकरबर्ग तथा अन्य बड़ी प्रौद्योगिकी कंपनियां नए ट्रंप प्रशासन के साथ तालमेल स्थापित करने की कोशिश कर रही हैं। अधिकारियों ने अपनी पहचान गोपनीय रखे जाने की शर्त पर इस समझौते के बारे में बुधवार को जानकारी दी।

पूर्व राष्ट्रपति जैकब जुमा की बेटी आतंकवाद के आरोप में गिरफ्तार

भाषा। जोहानिसबर्ग

दक्षिण अफ्रीका के पूर्व राष्ट्रपति जैकब जुमा की बेटी को आतंकवाद के आरोप में गिरफ्तार किया गया है और उन्हें बृहस्पतिवार को अदालत में पेश किए जाने की उम्मीद है। जुमा की बेटी डुडुज़िले जुमा-संबुदला संसद सदस्य भी हैं और उनपर जुलाई 2021 में दंगों के दौरान हिंसा भड़काने का आरोप है। जुलाई 2021 में हुए दंगों में 350 से ज्यादा लोग मारे गए थे। पुलिस ने बताया कि डुडुज़िले ने बृहस्पतिवार को पुलिस के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया। वह आतंकवाद एवं संबंधित गतिविधियों से जुड़े अधिनियम तथा हिंसा भड़काने के आरोपों का सामना कर रही हैं। पुलिस प्रवक्ता ब्रिगेडियर थांडी म्बांबो ने बताया, यह गिरफ्तारी डरबन पुलिस की अपराध शाखा द्वारा गंभीर संगठित अपराध की गई सावधानीपूर्वक जांच का परिणाम है, जो 2021 में देश में हुई हिंसा के बाद शुरू की गई थी।

डुडुज़िले के राजनीतिक दल ने इस बात की पुष्टि की है कि उन्हें बृहस्पतिवार को अदालत में पेश किया जाएगा। डुडुज़िले के खिलाफ मामला एक्स (पूर्व में ट्विटर) पर एक किए गए एक पोस्ट पर आधारित है। डुडुज़िले ने उनके पिता को जेल भेजे जाने के बाद यह पोस्ट किया था और उसमें प्रदर्शनकारियों से देशव्यापी प्रदर्शन के दौरान कथित तौर पर अधिक नुकसान पहुंचाने की अपील की थी। भ्रष्टाचार की जांच के मामले में गवाही देने के लिए अदालत के आदेश की अवहेलना करने को लेकर पूर्व राष्ट्रपति जुमा को जेल ले जाया गया था, जिसके बाद, गुस्साई भीड़ ने दुकानों में लूटपाट और आगजनी की तथा संपत्ति को नुकसान पहुंचाया था। मामले में 5,000 से अधिक लोगों को गिरफ्तार किया गया था।

क्विक न्यूज

पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा प्रांत से छह लोगों का अपहरण

पेशावर। पाकिस्तान के अशांत खैबर पख्तूनख्वा प्रांत में अज्ञात बंदूकधारियों ने दो अलग-अलग घटनाओं में छह लोगों का अपहरण कर लिया। अपहृत में एक अर्धसैनिक बल का एक जवान भी शामिल है। पहली घटना में हथियारबंद लोग दो वाहनों में आए और हवा में गोलियां चलाते हुए जबरन पांच नागरिकों को अपने साथ ले गए। अपहृत लोग उत्तरी वजीरिस्तान के शिवा तहसील के मीर अली सब-डिवीजन के अंतर्गत आने वाले हसन खेल गांव में बिजली के खंभे ठीक कर रहे थे। एक अन्य घटना में, अर्धसैनिक बल का एक जवान बाजार से लौटते समय अगवा कर लिया गया। पुलिस ने इलाके में व्यापक तलाशी अभियान शुरू कर दिया है। अब तक किसी भी संगठन ने अपहरण की जिम्मेदारी नहीं ली है। इस क्षेत्र में प्रतिबंधित तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) सक्रिय है, जिसे पहले भी ऐसे अपहरणों के लिए जिम्मेदार ठहराया गया है। टीटीपी की स्थापना 2007 में कई आतंकवादी संगठनों के गठबंधन के रूप में हुई थी और इसे अल-कायदा का करीबी माना जाता है। इस संगठन को पाकिस्तान में कई घातक हमलों के लिए जिम्मेदार माना जाता है।

निर्धारित समय से अधिक ठहरे 7,000 से ज्यादा भारतीय

वाशिंगटन। अमेरिकी सांसदों को एक विशेषज्ञ ने बताया है कि 2023 में भारत के 7,000 से अधिक छात्र और आगंतुक अमेरिका में निर्धारित समय से अधिक अवधि तक ठहरे। देश की आव्रजन नीतियों में कई सुधारों का सुझाव दिया, जिनमें एच-1बी वीजा से संबंधित सुधार भी शामिल है। सेंटर फॉर इमिग्रेशन स्टडीज की जेसिका एम. वॉन ने अमेरिकी संसद के निचले सदन प्रतिनिधि सभा की न्यायपालिका संबंधी समिति को बताया कि निर्धारित समय से अधिक ठहरने वालों में सबसे अधिक संख्या एफ और एम श्रेणी के वीजा धारकों की रही। एफ-1 के तहत वीजा में किसी कॉलेज या किसी मान्यता प्राप्त कॉलेज, विश्वविद्यालय, सेमिनरी, कंजर्वेटरी, अकादमिक हाई स्कूल, प्राथमिक विद्यालय या अन्य शैक्षणिक संस्थान या भाषा प्रशिक्षण कार्यक्रम में पूर्णकालिक छात्र के रूप में अमेरिका में रहने की अनुमति मिलती है। एम-1 वीजा भाषा प्रशिक्षण के अलावा व्यावसायिक या अन्य गैर-शैक्षणिक कार्यक्रमों में अध्ययनरत छात्रों को मिलता है। चार देशों ब्राजील, चीन, कोलंबिया और भारत के दो-दो हजार से अधिक नागरिक 2023 में छात्र/आगंतुक वीजा की अवधि से अधिक समय तक ठहरे। इन देशों में भारतीयों की संख्या सबसे अधिक (7,000) है। उन्होंने कहा कि वीजा जारी करने की नीतियों में समायोजन की आवश्यकता है और आंतरिक प्रवर्तन को मजबूत किया जाना चाहिए। इसके अलावा, संसद को कई महत्वपूर्ण तरीकों से कानून में संशोधन करना चाहिए।

रूस ने ड्रोन से यूक्रेन की इमारत को निशाना बनाया, चार की मौत

कीव। रूस ने बुधवार की रात ड्रोन से उत्तर-पूर्वी यूक्रेन में एक इमारत को निशाना बनाया जिससे चार लोगों की मौत हो गई और नौ अन्य घायल हो गए। सुमी शहर के क्षेत्रीय प्रशासन ने बताया कि रात करीब एक बजे शाहिद ड्रोन से नगर की एक इमारत को निशाना बनाया गया। इस हमले में घायल हुए लोगों में एक बच्चा भी शामिल है। जेलेंस्की ने इसे एक भयानक त्रासदी और रूस द्वारा किया गया भयावह अपराध करार दिया। अगले महीने रूस-यूक्रेन युद्ध के तीन साल पूरे हो जाएंगे और अभी तक इसके समाप्त होने के कोई संकेत नहीं दिख रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र के मुताबिक रूस युद्ध में यूक्रेन के 10,000 से अधिक आम नागरिक मारे गए हैं। यूक्रेन की वायुसेना के मुताबिक रूस ने रात में 80 से अधिक ड्रोन हमले किए जिनमें से अधिकतर को नाकाम कर दिया गया। यूक्रेन के दक्षिणी ओडेसा क्षेत्र के प्रमुख ओलेह किपर ने सोशल मीडिया मंच टेलीग्राम पर दावा किया कि रूसी ड्रोनों ने एक अस्पताल और दो रिहायशी इमारतों को क्षतिग्रस्त कर दिया, लेकिन इन हमलों में कोई हताहत नहीं हुआ। मध्य यूक्रेन के पोल्तावा क्षेत्र में, शाहिद ड्रोन द्वारा एक क्षेत्र को नष्ट कर दिए जाने के बाद आपातकालीन सेवाओं ने चार लोगों को मलबे के नीचे से निकाला।

पारदर्शिता, अच्छे अधिकारियों को सशक्त बनाना हैं एफबीआई की प्राथमिकताएं: काश पटेल

वाशिंगटन। संघीय जांच ब्यूरो (एफबीआई) के निदेशक पद के लिए अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा नामित काश पटेल ने कहा है कि जांच एजेंसी के संदर्भ में उनके दो लक्ष्य हैं- पारदर्शिता लाना और अच्छे पुलिसकर्मियों को पद पर बनाए रखना। यदि एफबीआई निदेशक के तौर पर पटेल (44) के नाम पर मुहर लग जाती है तो वह इस पद पर आसीन होने वाले पहले भारतीय-अमेरिकी होंगे। इस पद पर उनकी नियुक्ति की पुष्टि के लिए वह बृहस्पतिवार को सीनेट न्यायपालिका समिति के समक्ष उपस्थित होंगे। पटेल ने प्रतिष्ठित 'वॉल स्ट्रीट जर्नल' में बुधवार को एक लेख में लिखा, मेरा मानना है कि एफबीआई में जनता का विश्वास फिर से बनाने के लिए दो बुनियादी कदम आवश्यक हैं। सबसे पहली प्राथमिकता यह है कि अच्छे पुलिसकर्मियों को पुलिसकर्मी ही रहने दें। नेतृत्व का मतलब है कि अपराधियों को पकड़ने और हमारे नागरिकों की सुरक्षा करने के मिशन में एजेंटों का समर्थन करना। अगर मेरी नियुक्ति हो जाती है, तो मैं मुख्यालय में संचालन को सुव्यवस्थित करने पर ध्यान केंद्रित करूंगा और पूरे देश में फील्ड एजेंट की मौजूदगी को मजबूत करूंगा।

ताइवान में आया 5.6 तीव्रता का भूकंप

ताइपे। ताइवान में बृहस्पतिवार सुबह 5.6 तीव्रता का भूकंप आया और इसके बाद भूकंप के कम से कम 12 अन्य मामूली झटके महसूस किए गए। केंद्रीय मौसम एजेंसी और अमेरिकी भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण के अनुसार, ताइवान में भूकंप के कई झटके महसूस किए गए लेकिन सबसे जोरदार 5.6 तीव्रता का भूकंप पूर्वाह्न 10 बजकर 11 मिनट पर चियाई काउंटी के दापू कस्बे में 10 किमी की गहराई पर आया। इस भूकंप का केंद्र राजधानी ताइपे से लगभग 250 किमी (155 मील) दक्षिण में था। इस भूकंप के कारण ताइपे में इमारतें हिल गईं। इसके कुछ ही देर बाद दापू में भूकंप के कम से कम 12 मामूली झटके आए। जान-माल का नुकसान होने की फिलहाल कोई सूचना नहीं मिली है। ये 21 जनवरी को दापू में आए 6.4 तीव्रता के भूकंप के बाद के झटके थे। दापू में 21 जनवरी को आए भूकंप में 15 लोगों को मामूली चोटें आई थीं और इमारतों एवं एक राजमार्ग पुल को नुकसान पहुंचा था।

हमास ने इजराइल के आठ और बंधकों को छोड़ा

110 फलस्तीनी कैदियों की रिहाई पर सस्पेंस बरकरार

इजराइली हमलों से बर्बाद दिख रहा गाजा

खान यूनिस (गाजा पट्टी)। गाजा पट्टी में संघर्ष-विराम समझौते के तहत चरमपंथी समूह हमास ने बृहस्पतिवार को इजराइल के आठ और बंधकों को छोड़ दिया। हालांकि, बंधकों के बदले 110 फलस्तीनी कैदियों की रिहाई की इजराइल की योजना को लेकर अनिश्चितता बनी हुई है। दरअसल, इजराइली बंधकों को रेड क्रॉस के हवाले किए जाने के दौरान दिखे अराजक दृश्यों को लेकर तेल अवीव ने कड़ा विरोध जताया और 110 फलस्तीनी कैदियों की रिहाई पर रोक लगाने की घोषणा की। इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने स्पष्ट किया कि हमास जब तक बंधकों की सुरक्षित रिहाई का आश्वासन नहीं देता, तब तक फलस्तीनी कैदियों को आजाद नहीं किया जाएगा।

बाद में नेतन्याहू ने कहा कि मध्यस्थों ने उन्हें भरोसा दिलाया है कि गाजा पट्टी से बंधकों की सुरक्षित निकासी सुनिश्चित की जाएगी। हालांकि, उन्होंने फलस्तीनी कैदियों की संभावित रिहाई के बारे में कुछ नहीं कहा। इस बीच, इजराइली मीडिया ने खबर दी कि फलस्तीनी कैदियों को रिहा किया जाएगा। हमास ने बृहस्पतिवार सुबह इजराइल की महिला सैनिक अगम बर्जर (20) को उत्तरी गाजा के जबालिया शरणार्थी शिविर में भीड़ के सामने परेड कराने के बाद रेड क्रॉस को सौंप दिया। इजराइल सरकार ने बाद में पुष्टि की कि बर्जर उसके बलों के पास पहुंच गई हैं। बर्जर इजराइल की उन पांच महिला सैनिकों में शामिल थीं, जिन्हें हमास ने इजराइल में सात अक्टूबर 2023 को किए गए भीषण हमले के दौरान अगवा कर लिया था। चरमपंथी समूह ने चार अन्य महिला सैनिकों को शनिवार को रिहा कर दिया था। बर्जर के बाद हमास ने बृहस्पतिवार दोपहर सात अन्य बंधकों को रेड क्रॉस के हवाले कर दिया, जिनमें दो इजराइली और पांच थाई नागरिक शामिल थे। इजराइली सेना ने बाद में पुष्टि की कि रेड क्रॉस ने सातों बंधकों को गाजा पट्टी में उसके बलों को सौंप दिया है। हालांकि, दक्षिणी गाजा के खान यूनिस शहर में मारे गए हमास नेता याह्या सिनवार के नष्ट हुए घर के सामने इन सात बंधकों को रेड क्रॉस के हवाले किए जाने के दौरान बेहद अराजक दृश्य देखने को मिला। मौके पर हजारों की संख्या में जुटे फलस्तीनियों ने बंधकों को घेर लिया और उनके खिलाफ आपत्तिजनक नारे लगाए। इस दौरान, हथियारबंद हमास चरमपंथियों को बंधकों को रेड क्रॉस के वाहनों की तरफ ले जाते समय भीड़ में शामिल लोगों को पीछे धकेलते देखा गया। अराजकता के कारण बंधकों को रेड क्रॉस के हवाले करने और गाजा से उनकी निकासी की प्रक्रिया में देरी हुई। बाद में रेड क्रॉस ने बंधकों को गाजा पट्टी में इजराइली बलों के पास पहुंचा दिया।

उत्तर पश्चिमी पाकिस्तान में आतंकवादियों के साथ मुठभेड़ में मेजर समेत दो सुरक्षाकर्मी मारे गए

पेशावर। पाकिस्तान सेना ने बताया कि अफगानिस्तान की सीमा से सटे देश के उत्तर-पश्चिम इलाके में आतंकवादियों के साथ मुठभेड़ में मेजर समेत दो सुरक्षाकर्मी मारे गए। सेना की मीडिया शाखा इंटर-सर्विसेज पब्लिक रिलेशंस (आईएसपीआर) ने बताया कि यह मुठभेड़ 29 जनवरी की रात को खुफिया जानकारी के आधार पर शुरू किए गए अभियान के दौरान हुई। अभियान के दौरान पाकिस्तानी सैनिकों ने छह आतंकवादियों को मार गिराया। मुठभेड़ में मारे गए सुरक्षाकर्मियों की पहचान रावलपिंडी के 29 वर्षीय मेजर हमजा इसरार और नसीराबाद के 26 वर्षीय सिपाही मुहम्मद नईम के रूप में हुई है। इसरार इस अभियान में सैनिकों की टुकड़ी की अगुवाई कर रहे थे। सेना ने बताया कि मुठभेड़ के बाद सुरक्षा बलों ने बचे हुए आतंकवादियों को खत्म करने के लिए, इलाके में तलाशी अभियान शुरू किया।

अमेरिकी कांग्रेस की विदेश समिति भारत नीति की समीक्षा करेगी

भाषा। वाशिंगटन

अमेरिकी कांग्रेस की विदेश मामलों संबंधी शक्तिशाली समिति भारत के प्रति अमेरिका की विदेश नीति और द्विपक्षीय सहयोग के लगातार विस्तार की समीक्षा करेगी और इसमें रक्षा क्षेत्र पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। सदन की विदेश मामलों संबंधी समिति की प्राथमिकताओं की सूची में भारत को 11वें स्थान पर रखा गया है। कमेटी ने कहा कि वह, भारत के प्रति अमेरिकी नीति और साझा लोकतांत्रिक मूल्यों पर आधारित द्विपक्षीय सहयोग के विस्तार की समीक्षा करेगी। साथ ही दक्षिण और मध्य एशिया में अमेरिका के विरोधियों के प्रभाव को रोकने पर ध्यान दिया जाएगा।

समिति ने कहा, हम विशेष रुप से अमेरिका-भारत रक्षा संबंधों पर ध्यान केंद्रित करेंगे, जिसमें सुरक्षा और तकनीकी सहयोग, रक्षा क्षमताओं का विस्तार, आतंकवाद-रोधी प्रयास और अन्य रणनीतिक साझेदारियों को बढ़ावा देने के अवसर शामिल होंगे। इसके अलावा, समिति अमेरिका-भारत आर्थिक संबंधों को मजबूत करने के प्रयासों की भी समीक्षा करेगी। इसमें तकनीक, दूरसंचार और फार्मास्यूटिकल उद्योग में द्विपक्षीय सहयोग से जुड़ी चर्चाएं भी शामिल रहेंगी।

समिति भारत को क्वाड में भागीदारी को मजबूत करने के प्रयासों और भारत को तेजी से बढ़ती ऊर्जा आवश्यकताओं के प्रभावों की समीक्षा करेगी। समिति की शीर्ष प्राथमिकता चीन से उत्पन्न खतरों की समीक्षा करना है। समिति चीन द्वारा हस्ताक्षरित अंतरराष्ट्रीय समझौतों और संधियों के उल्लंघन की भी समीक्षा करेगी। इसमें चीन द्वारा उइगर मुस्लिमों के खिलाफ नरसंहार, मानवाधिकारों के उल्लंघन, बुनियादी कानून के तहत हांगकांग के प्रति अपने दायित्वों का उल्लंघन, विश्व व्यापार संगठन की शर्तों का उल्लंघन, साइबर सुरक्षा समझौतों का उल्लंघन, अवैध परमाणु प्रसार और अन्य द्विपक्षीय व अंतरराष्ट्रीय समझौतों के उल्लंघन शामिल हैं।

चीन के बाद, समिति की दूसरी प्रमुख प्राथमिकता हिंद-प्रशांत क्षेत्र में व्यापार समझौतों पर चर्चा और अमेरिकी विदेश विभाग की भागीदारी की समीक्षा करना है। समिति के शीर्ष दस मुद्दों में ताइवान, यूरोप, रूस और यूक्रेन के खिलाफ उसका युद्ध, पश्चिम एशिया औऱ2353 उत्तरी अफ्रीका, इज़राइल, ईरान, अफ्रीका और अफगानिस्तान शामिल हैं।

स्वीडन में कुरान जलाने के कई मामलों में शामिल इराकी व्यक्ति की हत्या

स्टॉकहोम। स्वीडन में कुरान जलाने के कई मामलों में शामिल रहे इराकी मूल के व्यक्ति की मौत हो गई है। स्टॉकहोम में एक न्यायाधीश ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। स्वीडिश मीडिया के मुताबिक उक्त व्यक्ति की स्टॉकहोम के नजदीकी शहर में हुई गोलीबारी में मौत हुई। सलवान मोमिका (38) ने 2023 में स्वीडन में इस्लाम की पवित्र किताब को जलाने और अपवित्र करने की कई घटनाओं को अंजाम दिया था। कुरान को जलाने का वीडियो प्रसारित होने के बाद कई मुस्लिम देशों में आक्रोश और आलोचना देखने को मिला और कई जगहों पर दंगे और अशांति की घटनाएं सामने आईं।

स्टॉकहोम जिला अदालत ने कहा कि मोमिक नामक एक आरोपी के मुकदमे में बृहस्पतिवार को आने वाला फैसला स्थगित कर दिया गया है क्योंकि एक आरोपी की मृत्यु हो गई है। न्यायाधीश गोरान लुंडाहल ने पुष्टि की कि मृतक मोमिक ही है। उन्होंने कहा कि उन्हें इस बारे में कोई जानकारी नहीं है कि मोमिक की मौत कब और कैसे हुई। उन्हें स्टॉकहोम के पास सोडरटालजे में बुधवार रात गोलीबारी की सूचना मिली थी, जिसमें एक व्यक्ति गोली लगने से घायल हो गया था, बाद में उसकी मौत हो गई और हत्या की प्रारंभिक जांच शुरू कर दी गई है।

प्रसारक एसवीटी ने सूत्रों के हवाले से बताया कि पीड़िता मोमिक ही था। इसने कहा कि मोमिक 2018 में इराक से स्वीडन आया था और उसे 2021 में तीन साल का निवास परमिट दिया गया था। अभियोजक रासमस ओमान ने स्वीडिश समाचार एजेंसी टीटी को बताया कि इस मामले में कई लोगों को गिरफ्तार किया गया है। इस बारे में विस्तार से कुछ नहीं बताया। मोमिक ने दलील दी थी कि उसका विरोध मुस्लिमों के प्रति नहीं है बल्कि इस्लाम से है। उसने तर्क दिया कि वह स्वीडन की जनता को कुरान के संदेशों से बचाना चाहते हैं।

मर्केल ने धुर दक्षिणपंथी समर्थन वाले प्रवासन वोट को लेकर अपनी पार्टी के नेता की आलोचना की

भाषा। बर्लिन

जर्मनी की पूर्व चांसलर एंजेला मर्केल ने बृहस्पतिवार को देश के मध्य-दक्षिणपंथी नेता के रूप में अपने उत्तराधिकारी फ्रेडरिक मर्ज की सार्वजनिक रूप से आलोचना की, जो अगले महीने जर्मनी में होने वाले चुनाव में सबसे आगे हैं। मर्ज ने नए कठोर प्रवासन नियमों के लिए संसद में प्रस्ताव रखा था, जिसे एक धुर दक्षिणपंथी पार्टी की मदद से पारित किया गया था।

जर्मनी की मध्य-वाम सत्तारूढ़ दलों ने इस बात पर संदेह जताया है कि क्या रूढ़िवादी नेता मर्ज पर अब भी भरोसा किया जा सकता है कि वह बुधवार के घटनाक्रमों के बाद धुर-दक्षिणपंथी अल्टरनेटिव फॉर जर्मनी या एएफडी को सत्ता में नहीं लाएंगे। पिछले सप्ताह, एक शरणार्थी द्वारा चाकू से जानलेवा हमले के बाद अनियमित प्रवासन को कम करने के लिए अपने मध्य-दक्षिणपंथी यूनियन गठबंधन की प्रतिबद्धता को रेखांकित करने के लिए दृढ़ संकल्पित मर्ज ने प्रवासियों को वापस भेजने के लिए एक गैर-बाध्यकारी प्रस्ताव रखा, जो दक्षिणपंथी पार्टी के समर्थन के कारण तीन मतों के अंतर से पारित हुआ।

सर्वेक्षणों से पता चलता है कि मर्ज की मुख्यधारा की मध्य-दक्षिणपंथी यूनियन लगभग 30 प्रतिशत समर्थन के साथ आगे चल रही है, जबकि अल्टरनेटिव फॉर जर्मनी लगभग 20 प्रतिशत समर्थन के साथ दूसरे स्थान पर है, तथा चांसलर ओलाफ शोल्ज की वामपंथी सोशल डेमोक्रेट्स और उनके गठबंधन सहयोगी ग्रीन्स और भी पीछे हैं। मर्ज की क्रिश्चियन डेमोक्रेटिक यूनियन (सीडीयू) की पूर्व नेता मर्केल ने एक बयान में उल्लेख किया कि मर्ज ने नवंबर में कहा था कि 23 फरवरी के चुनाव से पहले एएफडी के समर्थन से कोई भी प्रस्ताव पारित नहीं किया जाना चाहिए।

मर्केल ने कहा कि वह इस रुख का समर्थन करती हैं, लेकिन मुझे लगता है कि इस प्रस्ताव के प्रति प्रतिबद्धता महसूस न करना और 29 जनवरी को जर्मन संसद में मतदान में एएफडी के समर्थन (वोट) से बहुमत प्राप्त करना गलत था। वर्ष 2021 में मर्केल के चांसलर पद से हटने के बाद मर्ज ने सीडीयू की कमान संभाली थी। मर्केल की तुलना में अधिक रूढ़िवादी व्यक्ति होने के कारण उन्होंने प्रवासन पर अधिक कड़ा रुख अपनाया है।

सैमसन की कमजोरी और फिनिशिंग भारत की चिंता का सबब

चौथा टी20

भाषा। पुणे

तेज रफ्तार के सामने संजू सैमसन की कमजोरी और रिंकू सिंह का खराब फॉर्म और फिटनेस इंग्लैंड के खिलाफ शुक्रवार को चौथे टी20 मैच से पहले भारतीय टीम प्रबंधन की चिंता का सबब होगा। राजकोट में तीसरा मैच हारने के बाद भारतीय टीम के पास मुंबई में दो फरवरी को होने वाले आखिरी मैच से पहले श्रृंखला जीतने का एक और मौका है। सूर्यकुमार यादव की टीम ने कोलकाता और चेन्नई में पहले दो मैच जीते थे। केरल के विकेटकीपर बल्लेबाज सैमसन ने टी20 सत्र की शुरुआत बांग्लादेश और दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ तीन शतक के साथ की। मौजूदा श्रृंखला में उनका स्कोर 26, 5 और तीन रहा है जो चिंता की बात है। वह 145 किमी की रफ्तार से अधिक वाली गेंदों का सामना नहीं कर पा रहे।

बांग्लादेश के खिलाफ उन्होंने तसकीन अहमद, तंजीम हसन शाकिब की गेंदें खेलीं थी जबकि दक्षिण अफ्रीका के एंडिले सिमेलाने और लुथो सिपाम्ला की गेंदों का उन्होंने सामना किया। ए बहुत खतरनाक तेज गेंदबाज नहीं हैं और सैमसन ने उन्हें बखूबी खेला। वहीं इंग्लैंड के जोफ्रा आर्चर और मार्क वुड 145 से 155 किमी की रफ्तार से गेंद डालते हैं जिनकी गति सैमसन के लिए परेशानी का कारण बन गई है। तीनों मैचों में वह फिल साल्ट को कैच देकर पवेलियन लौट गए। सैमसन मुख्य कोच गौतम गंभीर के पसंदीदा खिलाड़ियों में से है और समझा जा रहा है कि अगले साल होने वाले टी20 विश्व कप को देखते हुए वह उन पर भरोसा बनाए रखेंगे। लेकिन उन्हें तकनीकी कमियों से पार पाना होगा।

रिंकू सिंह की कमर की तकलीफ के कारण सातवें नंबर पर ध्रुव जुरेल को उतारा गया लेकिन वह इस प्रारूप में फिट नहीं हो पा रहे हैं। रिंकू पहले मैच में खेले थे और फिर उन्हें अगले दो मैचों में आराम दिया गया लेकिन सहायक कोच रेयान टेन डोयशे ने मैच पूर्व संध्या पर आयोजित प्रेस कांफ्रेंस में शुक्रवार के मुकाबले के लिए उन्हें फिट घोषित कर दिया। वैसे रिंकू भी अपनी सर्वश्रेष्ठ फॉर्म में नहीं हैं। गंभीर जब कोलकाता नाइट राइडर्स के मेंटोर बने तब रिंकू को 2024 आईपीएल में कुल 70 गेंद खेलने को मिली और वह टी20 विश्व कप टीम में जगह नहीं बना सके। अपनी गेंदबाजी के दम पर शिवम दुबे को टीम में जगह मिली थी।

फाइल फोटो कप्तान सूर्यकुमार यादव

भारतीय मध्यक्रम भी इंग्लैंड के स्पिनर आदिल रशीद को नहीं खेल पा रहा है और ऐसे में देखना है कि क्या दुबे को मौका मिलता है। तीसरा विकल्प रमनदीप सिंह है जो फिनिशर होने के साथ दुबे से बेहतर तेज गेंदबाज है। लेकिन बेहतरीन तेज गेंदबाजों के सामने उनकी भी परख नहीं हुई है। मोहम्मद शमी काफी समय बाद टीम में लौटे हैं और राजकोट में उन्होंने अच्छी वापसी की। देखना यह है कि जसप्रीत बुमराह की गैर मौजूदगी में क्या भारत के सर्वश्रेष्ठ टी20 गेंदबाज अर्शदीप सिंह को जगह मिलती है तो पावरप्ले में सफलता दिला सकते हैं।

भारत: सूर्यकुमार यादव (कप्तान), संजू सैमसन, अभिषेक शर्मा, तिलक वर्मा, हार्दिक पंड्या, रमनदीप सिंह, शिवम दुबे, अक्षर पटेल, हर्षित राणा, अर्शदीप सिंह, मोहम्मद शमी, वरुण चक्रवर्ती, रवि बिश्नोई, वाशिंगटन सुंदर, ध्रुव जुरेल।

इंग्लैंड: जोस बटलर (कप्तान), रेहान अहमद, जोफ्रा आर्चर, गस एटकिंसन, जैकब बेथेल, हैरी ब्रूक, ब्रायडन कार्स, बेन डकेट, जेमी ओवरटन, जेमी स्मिथ, लियाम लिविंगस्टोन, आदिल राशिद, साकिब महमूद, फिलिप साल्ट, मार्क वुड।

मैच भारतीय समयानुसार शाम सात बजे से शुरू होगा।

मुक्केबाज मनोज कुमार ने संन्यास लिया, अब कोचिंग देंगे

भाषा। नई दिल्ली

राष्ट्रमंडल खेलों के स्वर्ण पदक विजेता मुक्केबाज मनोज कुमार ने बृहस्पतिवार को संन्यास लेने की घोषणा की और अब कोच के तौर पर नई पारी की शुरुआत करेंगे। लाइट वेल्टरवेट (64 किग्रा) में प्रतिस्पर्धा करने वाले 39 वर्षीय मुक्केबाज ने 2010 दिल्ली में अपना पहला और राष्ट्रमंडल खेलों का एकमात्र स्वर्ण पदक जीता था। वह एशियाई चैंपियनशिप में दो बार के कांस्य पदक विजेता भी हैं। राष्ट्रमंडल खेलों में दूसरा और अंतिम कांस्य पदक उन्होंने 2018 गोल्ड कोस्ट खेलों में जीता था। दो बार के ओलंपियन मनोज 2012 लंदन और 2016 रियो दि जिनेरियो दोनों में प्री क्वार्टरफाइनल तक पहुंचे थे।

हरियाणा के कैथल के इस मुक्केबाज ने कहा, अब मैं 40 साल का हो गया हूं तो यह सोच समझकर लिया गया फैसला है क्योंकि अंतरराष्ट्रीय नियमों के अनुसार एमेच्योर प्रतियोगिताओं में हिस्सा नहीं ले सकता। मैं संतुष्ट हूं क्योंकि देश का प्रतिनिधित्व करते हुए मैंने अपना सर्वश्रेष्ठ दिया। मनोज ने अपना मुक्केबाजी करियर 1997 में जूनियर स्तर पर शुरू किया था और 2021 में पटियाला में राष्ट्रीय खेल संस्थान से कोचिंग डिप्लोमा हासिल किया था। चोटों और चयन मुद्दे पर राष्ट्रीय महासंघ के साथ विवाद के कारण उनका करियर गोल्ड कोस्ट राष्ट्रमंडल खेलों के बाद थम गया और वह इसके बाद किसी अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट में नहीं खेले। अब वह कुरुक्षेत्र में अपने बड़े भाई और कोच राजेश कुमार के साथ बनाई गई मुक्केबाजी अकादमी में कोचिंग देंगे।

महिला टी-20 अंडर-19 विश्व कप सेमीफाइनल में भारत भारी

कुआलालंपुर। भारतीय टीम अंडर 19 महिला टी20 विश्व कप के सेमीफाइनल में शुक्रवार को इंग्लैंड के खिलाफ उतरेगी तो टूर्नामेंट का अपना अपराजेय अभियान जारी रखना उसका लक्ष्य होगा। पहले मैच में मेजबान मलेशिया को दस विकेट से हराने के बाद भारत ने श्रीलंका को 60 रन से और बांग्लादेश को आठ विकेट से हराया। वहीं सुपर सिक्स चरण में स्कॉटलैंड को 150 रन से मात दी। निक्की प्रसाद की कप्तानी वाली टीम के लिए स्कॉटलैंड के खिलाफ जी तृषा ने 59 गेंद में 110 रन बनाए जिसमें 13 चौके और चार छक्के शामिल थे। वहीं उनकी सलामी जोड़ीदार जी कमलिनी ने 42 गेंद में 51 रन की पारी खेली।

तृषा टूर्नामेंट में पांच मैचों में 76.66 की औसत से 230 रन बना चुकी है। इंग्लैंड की बल्लेबाज डेविना पेरिन 131 रन बनाकर दूसरे स्थान पर है। भारत ने स्कॉटलैंड को सिर्फ 58 रन पर आउट कर दिया था। आयुषी शुक्ला ने आठ रन देकर चार, वैष्णवी शर्मा ने पांच रन देकर तीन और तृषा ने छह रन देकर तीन विकेट लिए। वैष्णवी अब तक 12 और आयुषी दस विकेट ले चुकी हैं।

टीमें : भारत: निक्की प्रसाद (कप्तान), सानिया शाल्के, जी तृषा, जी कमलिनी, भाविका अहिरे, ईश्वरी अवासरे, मिथिला विनोद, जोशिता वीजे, सोनम यादव, पारूनिका सिसोदिया, केसरी धृति, आयुषी शुक्ला, अनंदिता किशोर, एमडी शबनम, वैष्णवी एस।

इंग्लैंड: एबी नोरग्रोव (कप्तान), फीबी ब्रेट, ओलिविया ब्रिसडेन, टिली कोर्टीन कोलमैन, ट्रूडी जॉनसन, कैटी जोंस, चार्लोस लैम्बार्ट, इव ओनील, डेविना पेरिन, जेमिमा स्पेंस, चार्लोट स्टब्स, अमृता सुरेनकुमार, पृषा थानावाला, एरिन थॉमस, ग्रेस थाम्पसन।

मैच का समय : दोपहर 12 बजे से।

गुजरात ने हिमाचल को 215 रन पर आउट किया

भाषा। अहमदाबाद

गुजरात के कप्तान चिंतन गजा और स्पिनर विशाल जायसवाल ने मिलकर सात विकेट लेकर गुरुवार को यहां रणजी ट्रॉफी ग्रुप बी मैच के पहले दिन हिमाचल प्रदेश को 215 रन पर आउट करने में अहम भूमिका निभाई। दोनों टीमें ग्रुप से क्वार्टर फाइनल में जगह बनाने की दौड़ में शामिल हैं। गुजरात ने मैच के पहले दिन शानदार गेंदबाजी करते हुए हिमाचल की पहली पारी को केवल 66.3 ओवर में ही समेट दिया। मध्यम गति के गेंदबाज गजा ने 31 रन देकर चार विकेट लिए। उन्होंने हिमाचल के कप्तान ऋषि धवन (40) का महत्वपूर्ण विकेट लेने से पहले दोनों सलामी बल्लेबाजों को आउट किया। बाएं हाथ के स्पिनर जायसवाल ने आठ ओवरों में 23 रन देकर तीन विकेट लेकर अपने कप्तान का अच्छा साथ दिया।

हिमाचल के अधिकतर बल्लेबाज अच्छी शुरुआत को बड़े स्कोर में बदलने में नाकाम रहे। अंकित कलसी (53) और धवन ही कुछ संघर्ष कर पाए। हिमाचल ने गेंद से पलटवार किया और गुजरात के सलामी बल्लेबाजों को जल्द ही पवेलियन भेज दिया। स्पिनर मयंक डागर और मुकुल नेगी ने सलामी बल्लेबाजों आदित्य पटेल (19) और आर्या देसाई (8) को आउट किया। पहले दिन का खेल समाप्त होने के समय गुजरात ने दो विकेट पर 44 रन बनाए थे और अभी वह हिमाचल से 171 रन पीछे है।

नागपुर में खेले जा रहे मैच में हैदराबाद ने विदर्भ को 190 रन पर आउट कर दिया। विदर्भ की तरफ से ऑलराउंडर हर्ष दुबे ने 65 रन बनाए। हैदराबाद की तरफ से तेज गेंदबाज रक्षण रेड्डी और बाएं हाथ के स्पिनर अनिकेथ रेड्डी ने तीन-तीन विकेट लिए। हैदराबाद ने पहले दिन का खेल समाप्त होने तक अपनी पहली पारी में दो विकेट पर 90 रन बनाए हैं। सलामी बल्लेबाज तन्मय अग्रवाल 53 रन बनाकर खेल रहे हैं। विजयनगरम में खेले जा रहे मैच में राजस्थान ने आंध्र के खिलाफ पहले बल्लेबाजी करते हुए अभिजीत तोमर (94) और मानव सुथार (54) के अर्धशतक की मदद से 258 रन बनाए। आंध्र की तरफ से स्पिनर त्रिपुराना विजय ने 62 रन देकर पांच विकेट लिए जो उनके करियर का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है। जवाब में आंध्र ने ठोस शुरुआत की और दिन का खेल समाप्त होने तक बिना किसी नुकसान के 49 रन बनाए। पुडुचेरी में मोहित काले के नाबाद 93 रन की मदद से पुडुचेरी ने उत्तराखंड के खिलाफ पहले दिन सात विकेट पर 246 रन बनाए। उत्तराखंड की तरफ से दीपक धपोला ने 29 रन देकर चार विकेट लिए हैं।

लक्ष्य श्योराण और नीरू ट्रैप चैंपियन बने

भोपाल। हरियाणा के एशियाई खेलों के रजत पदक विजेता लक्ष्य श्योराण और स्थानीय खिलाड़ी नीरू ने गुरुवार को यहां शॉटगन स्पर्धाओं की तीसरी दिग्विजय सिंह मेमोरियल निशानेबाजी चैंपियनशिप में पुरुष और महिला ट्रैप खिताब जीते। मध्य प्रदेश राज्य अकादमी (एमपीएसए) शूटिंग रेंज में टूर्नामेंट के अंतिम दिन लक्ष्य ने 50 में से 47 का स्कोर बनाकर स्वर्ण पदक जीता जबकि मध्य प्रदेश का प्रतिनिधित्व कर रही उनकी चचेरी बहन नीरू ने 45 का स्कोर बनाकर महिला वर्ग में पहला स्थान हासिल किया। दिल्ली के फहद सुल्तान पुरुष वर्ग में 45 का स्कोर बनाकर दूसरे स्थान पर रहे। क्वालिफिकेशन में शीर्ष पर रहे राजस्थान के सुलेमान अर्श इलाही ने कांस्य पदक जीता, जबकि ओलंपियन पृथ्वीराज टोंडिमान पांचवें स्थान पर रहे। महिला वर्ग में दिल्ली की कीर्ति गुप्ता ने रजत और पंजाब की राजेश्वरी कुमारी ने कांस्य पदक जीता। जूनियर पुरुष फाइनल में हाल ही में जूनियर राष्ट्रीय चैंपियन बने राजस्थान के विनय प्रताप सिंह चंद्रावत ने अपनी अच्छी फॉर्म जारी रखते हुए 43 निशाने लगाकर स्वर्ण पदक जीता। तमिलनाडु के युगान एसएम ने रजत जबकि राजस्थान के एक अन्य निशानेबाज उद्धव सिंह राठौड़ ने कांस्य पदक हासिल किया। महिलाओं के जूनियर वर्ग में श्रेष्ठा सिसौदिया ने उत्तर प्रदेश की सबीरा हैरिस को शूट-ऑफ में हराकर स्वर्ण पदक जीता। पुरुष मास्टर्स ट्रैप फ़ाइनल तमिलनाडु के अनुभवी गोविंदराज थिरुवेंकटम ने अपने ही राज्य के अभिमन्यु प्रकाश को हराकर स्वर्ण पदक जीता।

शार्दुल ठाकुर की हैट्रिक, रहाणे का अर्धशतक, मुंबई ने मेघालय पर बढ़त

मुंबई। मुंबई ने शार्दुल ठाकुर की हैट्रिक के बाद कप्तान अजिंक्य रहाणे (83 रन) और सिद्धेश लाड (89 रन) के अर्धशतकों की मदद से बृहस्पतिवार को यहां रणजी ट्रॉफी एलीट ग्रुप ए मैच के पहले दिन मेघालय पर 127 रन की बढ़त हासिल कर ली। ठाकुर को गेंदबाजों के मुफीद पिच पर पहले दिन काफी मदद मिली और उनके साथी गेंदबाजों मोहित अवस्थी (27 रन देकर तीन विकेट), सिलवेस्टर डीसूजा (14 रन देकर दो विकेट) और शम्स मुलानी (एक रन देकर एक विकेट) का भी अच्छा साथ मिला जिससे मुंबई ने मेघालय को महज 86 रन पर समेट दिया। फिर रहाणे और लाड के बीच तीसरे विकेट के लिए 170 रन की नाबाद साझेदारी से मुंबई ने स्टंप तक दो विकेट गंवाकर 213 रन बना लिए थे। मुंबई के लिए यह करो या मरो का अंतिम ग्रुप चरण मैच है। रहाणे ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का सही फैसला किया और ठाकुर ने पहले ही ओवर से मेघालय को दबाव में ला दिया। विकेट की नमी और नई गेंद का फायदा उठाते हुए भारतीय ऑलराउंडर ने सही लाइन एवं लेंथ में गेंदबाजी करते हुए रणजी ट्रॉफी के इतिहास में मुंबई के लिए पांचवीं हैट्रिक दर्ज की। ठाकुर ने पारी की चौथी गेंद पर मेघालय के सलामी बल्लेबाज निशांत चक्रवर्ती (0) को स्लिप कॉर्डन पर शम्स मुलानी के हाथों कैच कराकर मुंबई को शुरुआती सफलता दिलाई। अनिरुद्ध बी (0) भी ठाकुर के दूसरे और पारी के तीसरे ओवर की चौथी गेंद पर आउट हो गए। सुमित कुमार (0) ने ओवर की पांचवीं गेंद पर तीसरी स्लिप पर मुलानी को आसान कैच दिया और ठाकुर ने फिर से अंतिम गेंद पर बाएं हाथ के बल्लेबाज जसकीरत सचदेवा (0) का ऑफ स्टंप उखाड़ दिया। मेघालय का स्कोर दो रन पर पांच विकेट हो गया। मोहित ने चौथे ओवर की पहली गेंद पर सलामी बल्लेबाज अर्पित सुभाष (2) को आउट कर मेघालय का स्कोर दो रन पर छह विकेट कर दिया जिससे रणजी ट्रॉफी का सबसे कम स्कोर दर्ज करने का खतरा पैदा हो गया। लेकिन प्रिंगसांग संगमा (19), कप्तान आकाश कुमार (16), अनीश चरक (17) और हिमान फुकन (28) ने मुंबई के आक्रामक गेंदबाजों से निपटते हुए ऐसा नहीं होने दिया। मेघालय की टीम पहली पारी में 86 रन पर सिमट गई। मुंबई ने हालांकि आयुष म्हात्रे (05) का विकेट जल्दी खो दिया लेकिन उसके बाद सतर्कता ने मेजबान टीम को बढ़त हासिल करने में मदद की। इस दौरान लाड ने 155 गेंद पर 11 चौके और एक छक्के से 89 रन और रहाणे ने 150 गेंद पर नौ चौके और एक छक्के से 83 रन बना लिए। रहाणे ने इस सत्र का पहला अर्धशतक जड़ा और ऑन साइड पर आकर्षक स्ट्रोक्स लगाए, जो उनकी पारी का मुख्य आकर्षण रहा। इस बीच मुंबई के स्टार खिलाड़ी और भारतीय कप्तान रोहित शर्मा ने सुबह बीकेसी ग्राउंड के पास नेट्स पर तेज गेंदबाजों और थ्रोडाउन विशेषज्ञों के खिलाफ आधे घंटे का अभ्यास किया। वडोदरा में गत चैंपियन मुंबई को पांच विकेट से हराने के बाद जम्मू कश्मीर की टीम बड़ौदा के खिलाफ तीन विकेट पर 106 रन बनाकर मजबूत स्थिति में थी लेकिन पूरी टीम 246 रन पर ऑल आउट हो गई। केवल कन्हैया वधावन (71) ही अर्धशतक जड़कर योगदान कर पाए। जवाब में बड़ौदा ने स्टंप तक दो विकेट पर 29 रन बना लिए जिससे वह पहली पारी के आधार पर 217 रन से पीछे है। क्वार्टर फाइनल की दौड़ दिलचस्प हो गई है क्योंकि तीन टीमें शीर्ष दो में जगह बनाने की होड़ में हैं। ग्रुप ए की अंक तालिका में जम्मू-कश्मीर शीर्ष पर है जबकि बड़ौदा और मुंबई क्रमशः दूसरे और तीसरे स्थान पर हैं। कटक में राजेश मोहंती ने 61 गेंद में आठ चौके की मदद से 60 रन बनाए जिसके बावजूद मेजबान ओडिशा 180 रन पर ढेर हो गई। सेना ने जवाब में स्टंप तक दो विकेट पर 85 रन बना लिए जिससे वह पहली पारी के आधार पर 95 रन से पिछड़ रही है। सोलापुर में मेहमान त्रिपुरा ने महाराष्ट्र के खिलाफ स्टंप तक पांच विकेट पर 230 रन बना लिए।

नर्मदा ने स्वर्ण पदक जीतकर राष्ट्रीय रिकॉर्ड तोड़ा, भानवाला को भी स्वर्ण

देहरादून। विश्व कप की पूर्व विजेता नर्मदा नितिन राजू ने बृहस्पतिवार को यहां 38वें राष्ट्रीय खेलों में महिलाओं की 10 मीटर एयर राइफल स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीतने के दौरान एशियाई खेलों की पदक विजेता रमिता जिंदल और ओलंपियन इलावेनिल वालारिवन सहित कई मजबूत निशानेबाजों को मात देते हुए राष्ट्रीय रिकॉर्ड बनाया और विश्व रिकॉर्ड की बराबरी करने से महज मामूली अंतर से चूक गईं। अन्य नतीजों में हरियाणा के 2022 विश्व चैंपियनशिप रजत पदक विजेता अनीष भानवाला ने पुरुषों की 25 मीटर रैपिड फायर पिस्टल स्पर्धा में 31 हिट से स्वर्ण पदक जीता। सेना के गुरप्रीत सिंह 28 हिट से दूसरे और पंजाब के विजयवीर सिद्धू 26 हिट से तीसरे स्थान पर रहे। तमिलनाडु का प्रतिनिधित्व कर रहीं नर्मदा ने आठ निशानेबाजों के फाइनल में 254.4 के स्कोर के साथ पोडियम में शीर्ष स्थान हासिल किया तथा महाराष्ट्र की आर्या बोरसे (252.5) और रमिता (230.4) को पछाड़ा।

छत्तीसगढ़ ने दो स्वर्ण पदक जीते, विजय कुमार ने रिकॉर्ड की बराबरी की

देहरादून। छत्तीसगढ़ के भारोत्तोलक विजय कुमार ने गुरुवार को यहां 38वें राष्ट्रीय खेलों में पुरुषों के 55 किग्रा भार वर्ग के क्लीन एवं जर्क में राष्ट्रीय रिकॉर्ड की बराबरी करते हुए स्वर्ण पदक जीता। छत्तीसगढ़ की एक अन्य भारोत्तोलक ज्ञानेश्वरी यादव ने महिलाओं के 49 किग्रा में कुल 191 किग्रा (85 किग्रा106 किग्रा) वजन उठाकर स्वर्ण पदक जीता। महाराष्ट्र की सारिका शिंगारे (कुल 179 किग्रा) और हरियाणा की कोमल कोहर (179 किग्रा) ने क्रमशः रजत और कांस्य पदक जीता। विजय कुमार ने स्नैच में 105 किग्रा भार उठाने के बाद क्लीन एवं जर्क में 143 किग्रा के साथ कुल 248 किग्रा वजन उठाकर स्वर्ण पदक अपने नाम किया। क्लीन एवं जर्क में उन्होंने महाराष्ट्र के संकेत सरगर के 2022 में बनाए गए राष्ट्रीय रिकॉर्ड की बराबरी की। महाराष्ट्र के खिलाड़ियों मुकुंद अहेर (कुल 247 किग्रा) और श्रीनिवास गौड़ (244 किग्रा) ने रजत और कांस्य पदक जीता।

महाराष्ट्र ने छह पदक जीतकर राष्ट्रीय खेलों की ट्रायथलॉन में दबदबा बनाया

हल्द्वानी (उत्तराखंड)। महाराष्ट्र के एथलीटों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए बृहस्पतिवार को यहां 38वें राष्ट्रीय खेलों की ट्रायथलॉन स्पर्धा में दो स्वर्ण, दो रजत और इतने ही कांस्य से छह पदक अपने नाम किए। महाराष्ट्र ने डुआथलॉन (व्यक्तिगत) स्पर्धा में एक रजत और एक कांस्य जीता जिससे उसके पदकों की संख्या में इजाफा हुआ। अन्य राज्यों में मध्य प्रदेश ने तीन पदक (एक स्वर्ण, एक रजत और एक कांस्य) जीते जबकि मणिपुर ने व्यक्तिगत ट्रॉयथलॉन में दो स्वर्ण पदक हासिल किए।

कोहली की उपस्थिति में रेलवे के उपेंद्र यादव और दिल्ली के गेंदबाजों ने बिखेरी चमक

नई दिल्ली। स्टार बल्लेबाज विराट कोहली की 13 साल बाद रणजी ट्रॉफी क्रिकेट टूर्नामेंट में वापसी से विशेष बने मैच में रेलवे के उपेंद्र यादव ने 95 रन की आकर्षक पारी खेल कर दिल्ली को गुरुवार को यहां शुरू में विकेट लेने का बहुत अधिक फायदा नहीं उठाने दिया। रेलवे की टीम ने पहले बल्लेबाजी के लिए आमंत्रित किए जाने के बाद अपनी पहली पारी में 241 रन बनाए। दिल्ली ने पहले दिन का खेल समाप्त होने के समय तक अपनी पहली पारी में एक विकेट पर 41 रन बनाए थे।

नवदीप सैनी, सिद्धांत शर्मा और मनी ग्रेवाल की तेज गेंदबाजी तिकड़ी ने सुबह की परिस्थितियों का फायदा उठाते हुए पहले सत्र में रेलवे का स्कोर पांच विकेट पर 66 रन कर दिया। इसके बाद उपेंद्र और अनुभवी स्पिनर कर्ण शर्मा (50) ने छठे विकेट के लिए 104 रन की साझेदारी करके रेलवे को सम्मानजनक स्कोर तक पहुंचाया। कोहली की उपस्थिति के कारण 12000 से अधिक दर्शक स्टेडियम में पहुंचे थे। दिल्ली ने टॉस जीत कर पहले गेंदबाजी का फैसला किया और इस कारण कोहली को पहले दिन बल्लेबाजी का मौका नहीं मिला। उपेंद्र ने हालांकि दर्शकों के सामने अपनी प्रतिभा का शानदार परिचय दिया।

उपेंद्र जब सत्र में अपना तीसरा शतक पूरा करने की तरफ बढ़ रहे थे तब उन्होंने बाएं हाथ के स्पिनर सुमित माथुर की गेंद पर हवा में शॉट खेला और लॉन्ग ऑफ पर कैच दे दिया। उन्होंने अपनी पारी में 10 चौके और एक छक्का लगाया। दिल्ली की तरफ से सैनी और ग्रेवाल ने क्रमशः 18 और 17 ओवर किए बाएं हाथ के तेज गेंदबाज सिद्धांत ने नौ ओवर किए। सैनी और सिद्धांत ने तीन-तीन जबकि ग्रेवाल ने दो विकेट लिए। दिन का आकर्षण हालांकि कोहली थे और उन्होंने रेलवे की पारी के दौरान मैदान पर रहकर दर्शकों के साथ-साथ अपनी टीम के खिलाड़ियों का हौसला भी बढ़ाया। वह अधिकतर समय स्लिप में खड़े रहे। कोहली शुक्रवार को बल्लेबाजी के लिए उतरेंगे और तब अधिक दर्शकों के स्टेडियम में पहुंचने की संभावना है।

नई दिल्ली के अरुण जेटली स्टेडियम में शॉट खेलते रेलवे के उपेंद्र यादव

रैंकिंग में भारत की दुर्दशा से दुखी हैं शशि कुमार मुकुंद

नई दिल्ली। शशिकुमार मुकुंद अपने डेविस कप पदार्पण में ही दर्द से कराहते हुए कोर्ट से बाहर हो गए थे, तब भारतीय टीम सितंबर 2023 में मोरक्को से 0-। से पिछड़ रही थी। इतना ही काफी नहीं था कि वह उस जर्सी को पहनकर खेले जिस पर इंडिया की स्पैलिंग गलत लिखी थी। लखनऊमें इस बुरे सपने वाले पदार्पण का अंत यहीं नहीं हुआ। अखिल भारतीय टेनिस संघ (एआईटीए) इससे काफी नाराज हुआ और उसने इस गलती के लिए उनसे स्पष्टीकरण मांगा। इसके बाद इससे भी बुरा हुआ जब उन्होंने पैर की चोट के कारण जनवरी में पाकिस्तान की यात्रा करने से इनकार कर दिया और स्वीडन के खिलाफ मुकाबले के लिए खुद को उपलब्ध नहीं कराया।

इस बीच एआईटीए ने उन्हें अनुशासानात्मक आधार पर प्रतिबंधित कर दिया जबकि किसी को भी इस बात की भनक तक नहीं थी, यहां तक कि खिलाड़ी को भी नहीं कि उन्हें निलंबित किया गया है। कप्तान रोहित राजपाल ने उन्हें आश्वस्त किया कि अगर वह स्वीडन के खिलाफ मैच के लिए खुद को उपलब्ध कराते हैं तो वह उनका प्रतिबंध हटवा देंगे। वह पहले ही टूर पर खेलने के लिए प्रतिबद्धता दे चुके थे और अपने कोच को भी अग्रिम भुगतान कर चुके थे। इससे स्थिति और जटिल हो गई और राष्ट्रीय महासंघ के साथ उनके संबंध खराब हो गए।

जनवरी 2025 में मुकुंद शनिवार से शुरू होने वाले टोगो के खिलाफ विश्व ग्रुप एक प्ले-ऑफ मुकाबले के लिए भारत के सर्वश्रेष्ठ रैंकिंग वाले खिलाड़ी होंगे। वह डेविस कप में खेलने के लिए उत्साहित हैं लेकिन उन्हें यह पसंद नहीं है कि वह कोर्ट पर सर्वश्रेष्ठ रैंकिंग वाले भारतीय हैं जबकि एटीपी सूची में 360वें नंबर पर काबिज हैं।

मुकुंद ने अपनी वापसी पर पीटीआई से कहा, निश्चित रूप से यह निराशाजनक है क्योंकि जब मैं पढ़ता हूं या रैंकिंग देखता हूं तो दुख होता है कि नंबर एक रैंकिंग वाला खिलाड़ी 360 रैंकिंग पर काबिज है। यह निराशाजनक है। मुझे कहना होगा क्योंकि पहले मैं एक भारतीय टेनिस प्रशंसक हूं और फिर मैं एक खिलाड़ी हूं। उन्होंने कहा, अतीत में मैं 200 की करीब रैंकिंग पर था और तब मैं भारत में पांचवें नंबर पर था। लेकिन ऐसा इसलिए था क्योंकि बहुत से लोग मुझसे बहुत आगे थे। उन्होंने कहा, वो गहराई जल्द ही फिर से आ रही है जिसमें नंबर एक खिलाड़ी शीर्ष 100 रैंकिंग में है, नंबर दो शीर्ष 100 के करीब है। नंबर तीन कहीं 120 या 130 रैंकिंग के आसपास है।

पीसीबी और आईसीसी 16 फरवरी को लाहौर में करेंगे चैंपियंस ट्रॉफी का उद्घाटन समारोह

कराची। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) के साथ मिलकर आगामी चैंपियंस ट्रॉफी का उद्घाटन समारोह 16 फरवरी को लाहौर में कराएगा। चेयरमैन मोहसिन नकवी ने 19 फरवरी को कराची में राष्ट्रीय स्टेडियम में पाकिस्तान और न्यूजीलैंड के बीच होने वाले पहले मैच से पहले के निर्धारित कार्यक्रमों की सूची को मंजूरी दी। पीसीबी मरम्मत किए गए गद्दाफी स्टेडियम का सात फरवरी को आधिकारिक रूप से उद्घाटन करेगा जिसके लिए प्रधानमंत्री शाहबाज शरीफ को मुख्य अतिथि के तौर पर आमंत्रित किया गया है।

पीसीबी 11 फरवरी को कराची में एक समारोह में पुनर्निर्मित राष्ट्रीय स्टेडियम को भी लांच करेगा जिसमें राष्ट्रपति आसिफ अली जरदारी को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया है। पीसीबी और आईसीसी कप्तानों की प्रेस कांफ्रेंस और फोटोशूट के कार्यक्रम पर भी काम कर रहे हैं जिसके 16 फरवरी को लाहौर में होने की संभावना है। उद्घाटन समारोह ऐतिहासिक लाहौर किले के हुजूरी बाग में तय किया गया है जिसमें विभिन्न बोर्डों के अधिकारी, मशहूर हस्तियां, खेल के दिग्गज और सरकारी अधिकारी आमंत्रित किए जाएंगे। आईसीसी और पीसीबी ने अभी तक पुष्टि नहीं की है कि भारतीय कप्तान रोहित शर्मा प्रेस कांफ्रेंस और फोटोशूट के लिए लाहौर आएंगे या नहीं। भारत चैंपियंस ट्रॉफी के अपने सभी मैच दुबई में खेलेगा और अगर वह फाइनल में पहुंचता है तो खिताबी मुकाबला नौ मार्च को संयुक्त अरब अमीरात के शहर में ही खेला जाएगा।

रणजी वापसी में राहुल 26 रन पर आउट कर्नाटक के पांच विकेट पर 267 रन

बेंगलुरु। केएल राहुल की रणजी ट्रॉफी में बहुप्रतीक्षित वापसी महज 37 गेंद खेलने के बाद खत्म हो गई और भारत का यह सलामी बल्लेबाज 26 रन पर आउट हो गया जिससे कर्नाटक ने बृहस्पतिवार को यहां ग्रुप सी के करो या मरो वाले मैच के पहले दिन हरियाणा के खिलाफ पांच विकेट पर 267 रन का स्कोर बना लिया। फरवरी 2020 के बाद से पहली बार रणजी ट्रॉफी में खेलते हुए स्थानीय नायक राहुल तीसरे नंबर पर बल्लेबाजी के लिए उतरे। खचाखच भरे एम चिन्नास्वामी स्टेडियम में उनका गर्मजोशी से स्वागत किया गया और स्टैंड में राहुल, राहुल के नारे गूंज रहे थे।

दाएं हाथ का यह स्टाइलिश बल्लेबाज शुरू में शानदार लय में दिखा और कर्नाटक के कप्तान मयंक अग्रवाल (91) के साथ दूसरे विकेट के लिए 54 रन की साझेदारी में चार शानदार चौके लगाए।

राहुल क्रीज पर जमे हुए लग रहे थे लेकिन हरियाणा के फॉर्म में चल रहे तेज गेंदबाज अंशुल कंबोज की गेंद पर आउट हो गए। इस सत्र में हरियाणा के लिए सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले इस गेंदबाज ने इतनी खूबसूरत गेंद फेंकी जिसने अनुभवी भारतीय बल्लेबाज को बल्ले का किनारा छुआने के लिए ललचाया और विकेटकीपर रोहित शर्मा ने स्टंप के पीछे कोई गलती नहीं करने दी। हरियाणा के तेज गेंदबाज ने लंच से पहले सलामी बल्लेबाज केवी अवनीश (17) को आउट किया।

राहुल आखिरी बार रणजी ट्रॉफी मैच में लगभग चार साल पहले बंगाल के खिलाफ ईडन गार्डन्स क्वार्टर फाइनल में खेले थे। कोहनी की चोट के कारण उनकी रणजी ट्रॉफी में वापसी में देरी हुई। इसके कारण वह पंजाब के खिलाफ कर्नाटक के पिछले मैच से बाहर हो गए थे। जिस दिन हर कोई चाहता था कि राहुल बड़ी पारी खेलें, उस दिन भारतीय टीम से बाहर चल रहे कर्नाटक के कप्तान अग्रवाल ने कई शॉट लगाए और मैदान पर धमाल मचा दिया। उन्होंने अपने तेज अर्धशतक के लिए तीन छक्के और नौ चौके लगाए। अग्रवाल हरियाणा के तेज गेंदबाज अनुज ठकराल की गेंद पर आउट हो गए और महज नौ रन से अपना 19वां प्रथम श्रेणी शतक बनाने से चूक गए। ठकराल ने 74 रन देकर दो विकेट चटकाए।

सीएमवाईके प्रिंटेक लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक शोबोरी गाँगुली द्वारा 100के, मिलाप भवन, 8/ए, बहादुर शाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली-110002, दूरभाष: 011-40110455 से प्रकाशित तथा जागरण प्रकाशन लिमिटेड, डी-210, 211 सेक्टर 63 नोएडा फोन नंबर 01204615800 एक्सटेंशन 142, से मुद्रित। प्रधान संपादक : शोबोरी गाँगुली। पाठकों को सुझाव दिया जाता है कि इस अखबार के किसी भी विज्ञापन पर प्रतिक्रिया करने से पहले पूरी तरह उसके बारे में दिए गए दावों, शर्तों और तथ्यों की जांच कर लें। पायनियर ग्रुप के मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक या उसका कोई भी कर्मचारी विज्ञापनदाता द्वारा उनके किसी उत्पाद तथा सेवा हेतु किए गए किसी दावे की सच्चाई का आश्वासन या उत्तरदायित्व नहीं लेता है। ऐसे विज्ञापनों के बाद किसी आर्थिक क्षति के लिए वे जिम्मेदार भी नहीं हैं। मुख्य व्यवसायिक कार्यालय- 201-205 द्वितीय मंज़िल, प्रताप भवन, 5,बहादुर शाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली-110002, दूरभाष:011-693425001